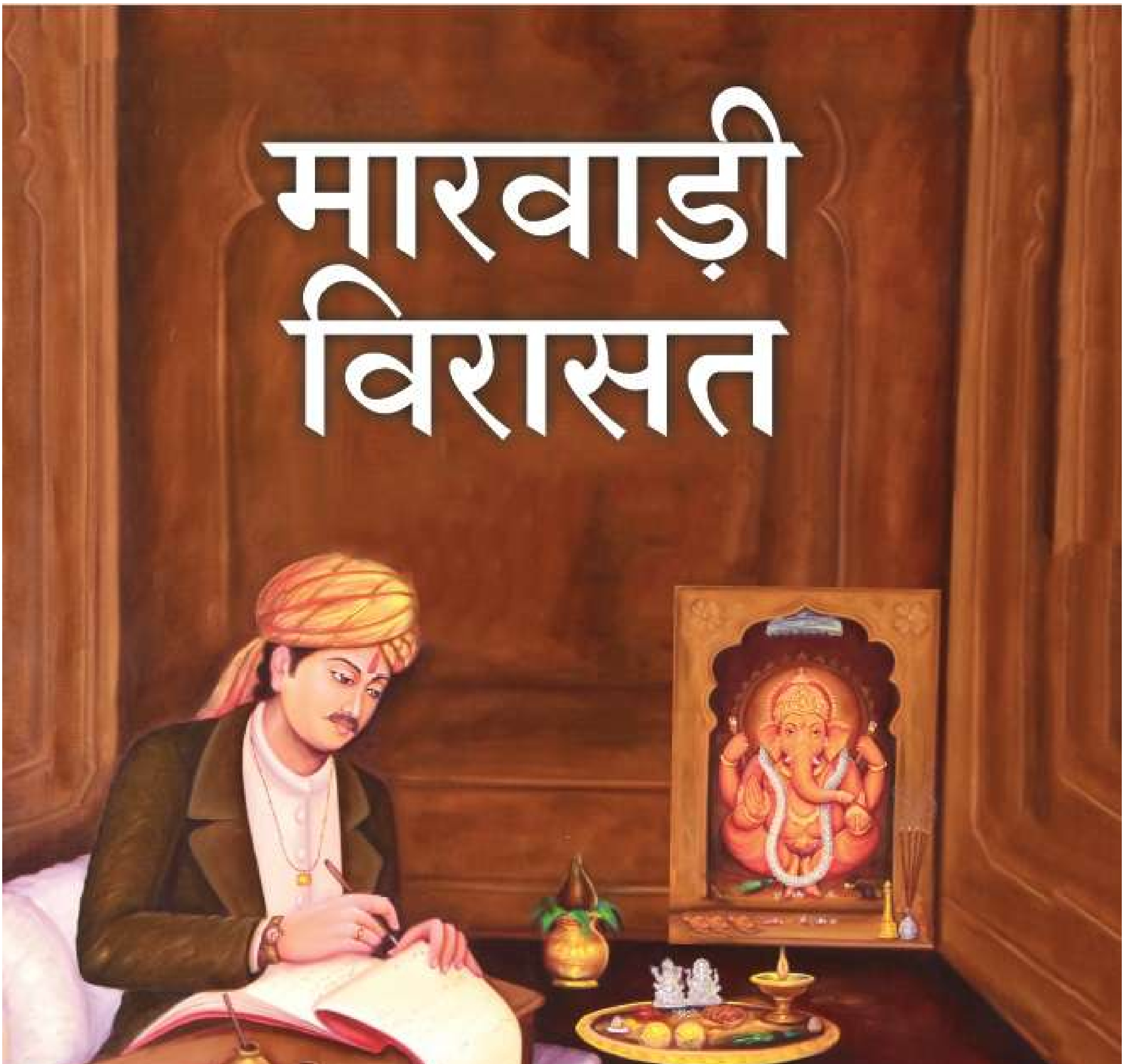

मारवाड़ी विरासत

डॉ. डी.के.टकनेत

पुस्तक के सम्बन्ध में संक्षिप्त विवरण

वैश्य भारत का पुरातन व्यापारिक वर्ग है। वैदिक युग से ही अपनी मेहनत और कर्मठता का परिचय देने वाले इस वर्ग से आगे चलकर मारवाड़ी समुदाय की उत्पत्ति हुई, जिसने अटूट लगन व अनूठे व्यापारिक कौशल से न सिर्फ अपार धन सम्पदा अर्जित की, बल्कि मुक्तहस्त से उदारतापूर्वक इसका उपयोग जनकल्याण के कार्यों में भी किया। मारवाड़ियों ने भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी के आगमन से पूर्व राजा–महाराजाओं के यहां मन्त्री, सलाहकार और दीवान जैसे उच्च पदों पर सफलतापूर्वक कार्य करते हुए राजकाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। फलतः ये लोग राजपूताना, हरियाणा, मालवा और आसपास के क्षेत्रों के साथ–साथ अन्य अनजाने सुदूर क्षेत्रों की कठिन चुनौतियों का सामना करते हुए देश–विदेश में फैल गए। मारवाड़ियों के आत्मविश्वास, अन्य समुदायों के साथ सामंजस्य बिठाने की उनकी स्वभावजन्य क्षमता, सौहार्दपूर्ण व्यवहार एवं कठिन परिस्थितियों में भी अपने लक्ष्य को साधने की एकाग्रता ने उन्हें पहले व्यापार–व्यवसाय, लोकोपकार व अन्ततः उद्योग जगत का बेताज बादशाह बना दिया।

भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक तन्त्र में मारवाड़ी समुदाय की जड़ें बहुत गहरी हैं। व्यापारिक समझ और चातुर्य से धन कमाने तथा देश व समाज को उसका समुचित वापस लौटाने के अपने जन्मजात स्वभाव के कारण वे निरन्तर जनकल्याण के कार्यक्रमों में खुलकर आर्थिक योगदान देते रहे हैं। उनका परमार्थभाव, राष्ट्रप्रे, आजादी के लिए जेल जाने से लेकर फांसी के फन्दे तक का सफर वर्तान पीढ़ी के लिए बेहद प्रेरणादायी व ऐतिहासिक है। कुछ प्राचीन अप्रासंगिक परिपाटियों को त्यागकर और समयानुकूल प्रथाओं–परम्पराओं को अपनाकर यह समुदाय आधुनिक युग के साथ कदमताल करते हुए नवीन और प्राचीन मूल्यों का अद्‌भुत सांस्कृतिक संगम बनाए हुए है। देश के सबसे सफल औद्योगिक घरानें मारवाड़ी हैं, जिन्होंने स्वयं की उन्नति के साथ–साथ स्थानीय लोगों को नौकरी पर रखकर व साझेदारी में काम करवाकर निपुण बनाया, जो कालान्तर में व्यापार व उद्योग–धन्धे लगाकर समृद्धशाली बने। परिणामस्वरूप वे नए जोश, नए उत्साह व उमंग के साथ व्यापार में आगे बढ़े। अपने कुशल नेतृत्व, अभिनव प्रयोगों, शोध एवं तकनीक के विकास में गहरी दिलचस्पी के कारण आज मारवाड़ी अनेक देशों की सरकारों को आर्थिक विकास के गुर सिखा रहे हैं। इनके कार्यकलाप हमेशा 'बहुजन हिताय सर्वजन सुखाय' की भावना से प्रेरित रहे हैं। इसी कारण इन्हें उच्च शिखर पर पहुंचने में मदद मिली तथा यही कारण है कि इसका प्रभाव वृहद् और दूरगामी रहा है।

प्रस्तुत कॉफी टेबिल बुक मारवाड़ी विरासत में समुदाय की गौरवगाथा का बेहद दिलचस्प, जीवन्त एवं अनुकरणीय चित्रण प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक में देश के इतिहास और इसकी सामाजिक–आर्थिक आधारशिलाओं पर अपनी अमिट छाप छोड़ने वाले, बहुत–से पुरुषार्थी मारवाड़ियों में से प्रमुख हस्तियों के अविस्मरणीय योगदान के बारे में भी आप विस्तार से पढ़ेंगे। मारवाड़ियों की नई पीढ़ी, आज भी उच्च लक्ष्य तय करते हुए अपने पूर्वजों द्वारा रखी गई नींव पर नए और भव्य निर्माण करने में जुटी है। समय के साथ–साथ और ज्यादा तरक्की करते हुए वह नए क्षितिजों की तरफ बढ़ रही है। नई पीढ़ी की कुशल देखरेख और मार्गदर्शन में कितनी ही जनकल्याणकारी योजनाएं लागू कर यह समुदाय देश व समाज की सेवा और विकास में जुटा हुआ है। मारवाड़ी समुदाय से जुड़ी बहुत–सी नई और अब तक अनछुई दिलचस्प, रोचक और आश्चर्यजनक जानकारियों से हम आपको परिचित करवाएंगे। अध्यात्म से लेकर प्रशासन, राजनीति, स्वतन्त्रता–संग्राम, राष्ट्र–निर्माण, विज्ञान–तकनीकी से लेकर कला–संस्कृति तक इस समुदाय ने असाधारण एवं अद्वितीय विरासत राष्ट्र को सौंपी है।

पुस्तक देश–विदेश में फैले मारवाड़ी समुदाय के सम्बन्ध में तथ्यों व जानकारियों के संग्रहण व उनकी जांच–परख में पांच वर्ष के निरन्तर और व्यापक शोध तथा अथक परिश्रम का ही परिणाम है, जो काव्य, ख्यात, वंशावली, बहीखाते, शिलालेख, दानपत्र, पटटे–परवाने व अन्य दस्तावेजों के साथ–साथ मेरी पूर्व प्रकाशित पुस्तकों व शोध लेखों हेतु किए गए अनुसंधान से प्राप्त ज्ञान व अनुभव पर आधारित है। यह लगभग सात सौ ऐसे दुर्लभ श्वेत–श्याम व रंगीन छायाचित्रों, रेखांकनों और दस्तावेजों से सुशोभित है जो रोचक तरीके से पहली बार यहां प्रकाशित हो रहे हैं। इस पुस्तक में मिट्टी की खुशबू, अथक परिश्रम, त्याग, स्वदेश–प्रेम, आजादी की लगन, औद्योगिक साहसिकता और परोपकार की महक रची–बसी है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि पाठकों के लिए ऐसी अविस्मरणीय जानकारी किसी भव्य उपहार से कम नहीं है। यह उन सब समुदायों के लिए भी एक प्रेरणास्रोत साबित होगी, जो जिन्दगी में कुछ कर गुजरने का जज्बा एवं उच्च सोच के साथ आसमानी बुलन्दियों को छूने में विश्वास रखते हैं।

पुस्तक के सम्बन्ध में संक्षिप्त विवरण

वैश्य भारत का पुरातन व्यापारिक वर्ग है। वैदिक युग से ही अपनी मेहनत और कर्मठता का परिचय देने वाले इस वर्ग से आगे चलकर मारवाड़ी समुदाय की उत्पत्ति हुई, जिसने अटूट लगन व अनूठे व्यापारिक कौशल से न सिर्फ अपार धन सम्पदा अर्जित की, बल्कि मुक्तहस्त से उदारतापूर्वक इसका उपयोग जनकल्याण के कार्यों में भी किया। मारवाड़ियों ने भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी के आगमन से पूर्व राजा–महाराजाओं के यहां मन्त्री, सलाहकार और दीवान जैसे उच्च पदों पर सफलतापूर्वक कार्य करते हुए राजकाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। फलतः ये लोग राजपूताना, हरियाणा, मालवा और आसपास के क्षेत्रों के साथ–साथ अन्य अनजाने सुदूर क्षेत्रों की कठिन चुनौतियों का सामना करते हुए देश–विदेश में फैल गए। मारवाड़ियों के आत्मविश्वास, अन्य समुदायों के साथ सामंजस्य बिठाने की उनकी स्वभावजन्य क्षमता, सौहार्दपूर्ण व्यवहार एवं कठिन परिस्थितियों में भी अपने लक्ष्य को साधने की एकाग्रता ने उन्हें पहले व्यापार–व्यवसाय, लोकोपकार व अन्ततः उद्योग जगत का बेताज बादशाह बना दिया।

भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक तन्त्र में मारवाड़ी समुदाय की जड़ें बहुत गहरी हैं। व्यापारिक समझ और चातुर्य से धन कमाने तथा देश व समाज को उसका समुचित वापस लौटाने के अपने जन्मजात स्वभाव के कारण वे निरन्तर जनकल्याण के कार्यक्रमों में खुलकर आर्थिक योगदान देते रहे हैं। उनका परमार्थभाव, राष्ट्रप्रे, आजादी के लिए जेल जाने से लेकर ़ांसी के फन्दे तक का सफर वर्तान पीढ़ी के लिए बेहद प्रेरणादायी व ऐतिहासिक है। कुछ प्राचीन अप्रासंगिक परिपाटियों को त्यागकर और समयानुकूल प्रथाओं–परम्पराओं को अपनाकर यह समुदाय आधुनिक युग के साथ कदमताल करते हुए नवीन और प्राचीन मूल्यों का अद्‌भुत सांस्कृतिक संगम बनाए हुए है। देश के सबसे सफल औद्योगिक घरानें मारवाड़ी हैं, जिन्होंने स्वयं की उन्नति के साथ–साथ स्थानीय लोगों को नौकरी पर रखकर व साझेदारी में काम करवाकर निपुण बनाया, जो कालान्तर में व्यापार व उद्योग–धन्धे लगाकर समृद्धशाली बने। परिणामस्वरूप वे नए जोश, नए उत्साह व उमंग के साथ व्यापार में आगे बढ़े। अपने कुशल नेतृत्व, अभिनव प्रयोगों, शोध एवं तकनीक के विकास में गहरी दिलचस्पी के कारण आज मारवाड़ी अनेक देशों की सरकारों को आर्थिक विकास के गुर सिखा रहे हैं। इनके कार्यकलाप हमेशा 'बहुजन हिताय सर्वजन सुखाय' की भावना से प्रेरित रहे हैं। इसी कारण इन्हें उच्च शिखर पर पहुंचने में मदद मिली तथा यही कारण है कि इसका प्रभाव वृहद् और दूरगामी रहा है।

प्रस्तुत कॉफी टेबिल बुक मारवाड़ी विरासत में समुदाय की गौरवगाथा का बेहद दिलचस्प, जीवन्त एवं अनुकरणीय चित्रण प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक में देश के इतिहास और इसकी सामाजिक–आर्थिक आधारशिलाओं पर अपनी अमिट छाप छोड़ने वाले, बहुत–से पुरुषार्थी मारवाड़ियों में से प्रमुख हस्तियों के अविस्मरणीय योगदान के बारे में भी आप विस्तार से पढ़ेंगे। मारवाड़ियों की नई पीढ़ी, आज भी उच्च लक्ष्य तय करते हुए अपने पूर्वजों द्वारा रखी गई नींव पर नए और भव्य निर्माण करने में जुटी है। समय के साथ–साथ और ज्यादा तरक्की करते हुए वह नए क्षितिजों की तरफ बढ़ रही है। नई पीढ़ी की कुशल देखरेख और मार्गदर्शन में कितनी ही जनकल्याणकारी योजनाएं लागू कर यह समुदाय देश व समाज की सेवा और विकास में जुटा हुआ है। मारवाड़ी समुदाय से जुड़ी बहुत–सी नई और अब तक अनछुई दिलचस्प, रोचक और आश्चर्यजनक जानकारियों से हम आपको परिचित करवाएंगे। अध्यात्म से लेकर प्रशासन, राजनीति, स्वतन्त्रता–संग्राम, राष्ट्र–निर्माण, विज्ञान–तकनीकी से लेकर कला–संस्कृति तक इस समुदाय ने असाधारण एवं अद्वितीय विरासत राष्ट्र को सौंपी है।

पुस्तक देश–विदेश में फैले मारवाड़ी समुदाय के सम्बन्ध में तथ्यों व जानकारियों के संग्रहण व उनकी जांच–परख में पांच वर्ष के निरन्तर और व्यापक शोध तथा अथक परिश्रम का ही परिणाम है, जो काव्य, ख्यात, वंशावली, बहीखाते, शिलालेख, दानपत्र, पटटे–परवाने व अन्य दस्तावेजों के साथ–साथ मेरी पूर्व प्रकाशित पुस्तकों व शोध लेखों हेतु किए गए अनुसंधान से प्राप्त ज्ञान व अनुभव पर आधारित है। यह लगभग सात सौ ऐसे दुर्लभ श्वेत–श्याम व रंगीन छायाचित्रों, रेखांकनों और दस्तावेजों से सुशोभित है जो रोचक तरीके से पहली बार यहां प्रकाशित हो रहे हैं। इस पुस्तक में मिट्टी की खुशबू, अथक परिश्रम, त्याग, स्वदेश–प्रेम, आजादी की लगन, औद्योगिक साहसिकता और परोपकार की महक रची–बसी है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि पाठकों के लिए ऐसी अविस्मरणीय जानकारी किसी भव्य उपहार से कम नहीं है। यह उन सब समुदायों के लिए भी एक प्रेरणास्रोत साबित होगी, जो जिन्दगी में कुछ कर गुजरने का जज्बा एवं उच्च सोच के साथ आसमानी बुलन्दियों को छूने में विश्वास रखते हैं।

मारवाड़ी कौम में धन
है, धर्म प्रेम है, दान देने की
माया है आधुनिक प्रवृत्ति
आत्मशुद्धि की और
धर्म रक्षा की है। इसको
अपना ले मारवाड़ी कौम
प्रतिष्ठा न खोने की शक्ति
ही फिर देखें देश में
प्रार्थना करता हूं।

आपका
मोहनदास
गांधी

समर्पण

मारवाड़ी समाज
के उन अज्ञात विस्मृत
अग्रणीजन व कर्मयोगियों को जो
निष्क्रमण के प्रथम चरण में जीवन-संघर्ष
के दौरान अनंत में विलीन हुए तथा जिनके आदर्शों
व जीवन के स्वर्णिम सूत्रों ने सभी को आलोकित किया। इन
युगपुरुषों की प्रेरणा व प्रतिबद्धता 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' की
रही। इनके संकल्प, साहस, ऊर्जा एवं गतिशीलता के कारण अनेकानेक
उद्योगपति भी अभिप्रेरित हुए। परमार्थप्रिय इन महामानवों ने स्वयं तो मशाल
बनकर जीवन जिया ही, साथ ही उन्होंने अन्यों का पथ भी आलोकित किया।
फलत: जीवन-ज्योति बुझने पर भी ये कर्मयोगी शाश्वत प्रेरणा-पुंज बन
गये। इनकी प्रेरक, पथ-प्रदर्शक व अमिट छवि आज समूचे समाज
के स्मृति-पटल पर अंकित हो गई है, जिसने ध्रुवतारे की भांति
देशभर में अन्य असंख्य उद्यमियों को इसी मार्ग पर चलने
के लिए प्रेरित कर उनका मार्गदर्शन किया। पुरखों की
उसी परंपरा, विरासत एवं धरोहर से प्रेरणा पाकर
मारवाड़ियों की नवीन पौध, आज भी भारतीय
समाज तथा संपूर्ण विश्व को सुख,
समृद्धि व मानवहितार्थ प्रकाश
प्रदान कर रही है।

विषय-सूची

प्राक्कथन

10

1. वैश्यों में अग्रणी मारवाड़ी

14

2. प्रवसन पश्चात् तीव्र प्रगति

52

3. स्वतंत्रता आंदोलन के अविस्मरणीय प्रणेता

78

4. स्वाधीन भारत में सफलता के नये सोपान

114

5. जनसेवा में सदैव सहभागी

134

6. जीवन के विविध क्षेत्रों में सिरमौर

156

7. आधुनिक परिदृश्य : दूरदृष्टा एवं पथ-प्रदर्शक

180

8. संस्कारों एवं संस्कृति का आत्मावलोकन

208

परिशिष्ट 1 - कुछ असाधारण मारवाड़ी

232

परिशिष्ट 2 – परोपकार जगत के शिरोमणि

236

परिशिष्ट 3 – सेठों व उनके सेवकों की मार्मिक कहानियां

238

परिशिष्ट 4 – प्रेरक मारवाड़ी कहावतें व स्वर्णिम कथन

246

परिशिष्ट 5 – विशिष्ट सम्मतियां

250

परिशिष्ट 6 – शब्दावली

252

परिशिष्ट 7 – शेखावाटी की ऐतिहासिक मारवाड़ी फर्में

255

परिशिष्ट 8 – शेखावाटी के निकटवर्ती क्षेत्रों की फर्में

261

चयनित ग्रन्थसूची

264

नामानुक्रमणिका

270

प्राक्कथन

भारत के सामाजिक-आर्थिक विकास में व्यापारिक समाजों की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रस्तुत विषय पर विभिन्न विख्यात विद्वानों द्वारा आंशिक रूप से प्रकाश डाला गया है, जिनमें इवट्सन, नेस्फील्ड, सेनार, रिसले, क्रुक, इलियट तथा एन्थोवन प्रमुख हैं। इतिहास किसी भी समाज व देश की नींव होता है, जिस पर भविष्य के भवन का निर्माण होता है। इस नींव के माध्यम से उस समाज की वर्तमान तक की यात्रा का मूल्यांकन होता है जो भावी पीढ़ी के लिए पथ-प्रदर्शक है। जिस समाज का इतिहास नहीं होता उसके पास गर्व करने का न तो कोई आधार होता है, न ही उस समाज की नवीन पीढ़ी को प्रेरणा मिल पाती है। विदेशी विद्वानों द्वारा भारतीय व्यापारिक समाजों के ऐतिहासिक योगदान को लगभग अनदेखा किया गया। तत्पश्चात् पश्चिमी देशों का अनुसरण करते हुए राष्ट्र के आर्थिक इतिहास को भी उचित महत्त्व दिया जाने लगा और कुछ टीकाकार भारतीय व्यापारिक समाजों की उपलब्धियों का वस्तुपरक मूल्यांकन भी करने लगे। पूर्व राजपूताना और इसके निकटवर्ती क्षेत्रों से देश के अन्य हिस्सों में फैले मारवाड़ियों का इतिहास भी इसी समीक्षा का अंग है। इस समाज की शताब्दियों पुरानी असाधारण विरासत रही है जिसमें असंख्य आदर्श पुरुष हो चुके हैं। इसलिए मारवाड़ी होना केवल विशेष पहचान ही नहीं है, बल्कि एक व्यापक संपूर्णता वाली विरासत का हिस्सा भी है, जो इनके पूर्वज अपनी भावी पीढ़ी के लिए छोड़ गये हैं। अधिकांश इतिहासकारों का मानना है कि समाज व सामाजिक संस्थाओं के द्वारा जब तक आवश्यक सूचना उपलब्ध नहीं करवाई जाती है, तब तक उस समाज का पूर्णत: सही चित्रण प्रस्तुत करना संभव नहीं हो पाता है।

पूर्व राजपूताना, मालवा रियासत एवं निकटवर्ती क्षेत्रों से देश के विभिन्न भागों में प्रवसित मारवाड़ी समाज मूलत: एक व्यापारी तथा व्यवसायी समाज है। 'मारवाड़ी' शब्द मात्र किसी जाति-विशेष का सम्बोधन न होकर देश का एक विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक समूह का सूचक है। संभवत: राजस्थान की शुष्क जलवायु, जल के अभाव एवं दिनोंदिन विषम होती आर्थिक परिस्थितियों ने ही मारवाड़ियों में जुझारूपन और जीवटता की उस अनूठी भावना का संचार किया जो धीरे-धीरे उनकी पहचान बनती चली गई। पुरानी पीढ़ी ने बहुत-सी बातें अपने पूर्वजों से सीखीं तथा समय के साथ-साथ अपने अनुभवों में वृद्धि की, जिसमें नवीन विचारधारा व भावनाएं जुड़ती चली गईं। इस प्रकार हमारी संस्कृति पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रही। यही जीवंत तथा अमूर्त सांस्कृतिक विरासत इस समाज के इतिहास का महत्त्वपूर्ण अध्याय है, जिसमें मारवाड़ियों के रीति-रिवाज, उत्सव, धर्म-संस्कार, वेशभूषा, खान-पान, लोकगीत, लोकनृत्य, जीवन-शैली व पर्व-त्योहार आदि शामिल हैं, जिन पर इस कॉफी टेबल बुक में प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। इन लागों ने सदैव स्वामी विवेकानंद के इस कथन को जीवन में उतारा, ''सहायता करो, संघर्ष नहीं; समावेशन करो, विध्वंस नहीं; मेल-मिलाप व शांति रखो, मतभेद नहीं।'' इनकी विरासत गतिहीन न होकर विकासोन्मुख एवं गत्यात्मक रही है जो महान भारतीय संस्कृति का परिचायक है।

दुर्लभ एवं नयनाभिराम चित्रों से सुसज्जित इस कॉफी टेबल बुक में मारवाड़ियों के देश के विभिन्न भागों में जाकर बसने और उनके इस संघर्ष को रोचक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। अपनी ईमानदारी, दूरदृष्टि और कारोबारी कुशलता से ओत-प्रोत वे देशी रियासतों के राजा-महाराजाओं का विश्वास जीतने में सफल रहे। उन्होंने न केवल प्रशासन की बागडोर संभाली, अपितु अवसर पड़ने पर युद्ध के मैदान में भी अपना कौशल दिखाया और सैनिकों के रूप में अनेक युद्धों में विजयी होकर देशसेवा का सौभाग्य प्राप्त किया। अनेक शासकों ने उन्हें अपने मंत्रियों, सलाहकारों और दीवानों के रूप में भी नियुक्त किया और उत्कृष्ट सेवाओं के लिए मान-सम्मान दिया। स्वतंत्रतापूर्व और उसके पश्चात् भारत में मारवाड़ीजन अपनी बहुमुखी प्रतिभा के बल पर व्यवसाय, उद्योग तथा विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के क्षेत्र में भी शीर्ष स्थान प्राप्त करते चले गये।

प्रतिकूल परिस्थितियों में संघर्ष करते हुए मारवाड़ियों ने छोटे-छोटे व्यापारियों के रूप में अपनी शुरुआत की और धीरे-धीरे प्रतिष्ठित व्यापारियों के बेनियनों की भूमिका निभाने लगे। कालांतर में यह समाज ब्रिटिश व्यापारियों के एकाधिकार को चुनौती देने लगा। भारत की पहली जूट मिल, पहले भारतीय बैंक, पहली भारतीय बीमा कंपनी, पहली धागा मिल और बिजली से चलने वाले पहले लौह कारखाने की स्थापना का श्रेय उन्हें ही जाता है। अपने कठोर श्रम से अर्जित आय का एक प्रमुख अंश वे जनकल्याण के कार्यों तथा देश के स्वतंत्रता आंदोलन को प्रोत्साहन देने के लिए व्यय करते रहे। यह एक आम धारणा है कि मारवाड़ी मात्र अपने व्यवसाय पर ध्यान देते हैं, किन्तु वास्तव में उन्होंने सन् 1857 की क्रांति के साथ-साथ भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भी बढ़-चढ़कर भाग लिया, जिसमें अढ़ाई सौ से अधिक मारवाड़ियों को अंग्रेजों द्वारा फाँसी पर लटका दिया गया। यह अपने-आप में एक विडम्बना है कि इतिहासकारों की दृष्टि स्वतंत्रता संग्राम में मारवाड़ियों के अभूतपूर्व योगदान पर नहीं गई, जिसके कारण उन्हें इतिहास के पन्नों में उचित स्थान प्राप्त नहीं हो पाया।

भारत में स्वाधीनता के पश्चात् मारवाड़ी व्यापार में तीव्र प्रगति करते हुए निजी क्षेत्र के महारथी बनते चले गये। विभिन्न प्रमुख व्यापारिक व वाणिज्यिक संस्थानों के अध्यक्ष व अन्य महत्त्वपूर्ण पदों के लिए अधिकतम बार चुने जाने के साथ ही देश के औद्योगिक नेतृत्व की बागडोर संभालने के कारण उनकी साख में वृद्धि होती ही चली गई। 1990 के दशक में आर्थिक उदारीकरण का दौर आने के बाद देश के आर्थिक पुनर्निर्माण में उनकी विशिष्ट भूमिका रही। मारवाड़ियों की नस-नस में व्याप्त कारोबारी सूझबूझ समय के साथ एक किंवदंती बनती चली गई, जो अब अपूर्व सफलता की एक महागाथा का विशाल रूप धारण कर चुकी है। इतना ही नहीं, उद्योग व व्यवसाय के क्षेत्र में उनका अनूठा कौशल अब राष्ट्र की सीमाओं को लांघकर विश्वविख्यात हो चुका है। इसके बावजूद मार्क्स का यह विचार अनेक लोगों को आकर्षित करता रहा है कि पूंजीपतियों को समाप्त करके श्रमिकों को समान स्तर पर ले आया जाए जबकि महात्मा गांधी इसके सर्वथा विपरीत सोचते थे। उनका मानना था कि हमें ऐसा कभी नहीं करना चाहिए क्योंकि जब पूंजीपति नहीं रहेगा, तो मजदूर भी नहीं रहेगा। इसलिए हमारा प्रयास यह रहना चाहिए कि स्नेहपूर्वक उद्योगपतियों और व्यापारिक वर्गों का हृदय-परिवर्तन करें ताकि वे न केवल श्रमिकों के हितों का संरक्षण करें, अपितु संपूर्ण देश व समाज के विकास में भी अपना रचनात्मक सहयोग देते रहें।

राष्ट्रीय स्तर की शोध संस्था आईआईएमई, जयपुर जो कि भारत सरकार का एक वैज्ञानिक एवं औद्योगिक शोध संगठन है, ने राष्ट्रीय महत्त्व के व्यापक व गहन शोधात्मक अध्ययन किये हैं। प्रस्तुत कॉफी टेबल बुक में अब तक किये गये अध्ययनों में विद्यमान समस्त रिक्तताओं की पूर्ति तो है ही, साथ ही इस विषय पर लिखी कुछ चयनित पुस्तकों की विषयवस्तु से प्राप्त अतिरिक्त तथ्यों का भी समावेश किया गया है। इसके साथ ही यह कॉफी टेबल बुक समाज की बहुमुखी प्रतिभाओं एवं राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी अमिट छाप छोड़ने वाले समाज की महान विभूतियों के बारे में अनेक अंतरंग व व्यापक विवरण प्रस्तुत करती है। शिक्षा, संस्कृति एवं साहित्य के विकास में अपने योगदान के अतिरिक्त मारवाड़ी समाज ने वैज्ञानिक शोध, सकारात्मक राजनीति तथा अन्य रचनात्मक क्षेत्रों में भी बढ़-चढ़कर सक्रिय भूमिका निभाई है। सबसे बढ़कर,

जनकल्याण से जुड़ी समाज की विविध गतिविधियों ने इन्हें विशिष्ट पहचान दी है। विभिन्न प्रकार की जनसेवाओं पर मारवाड़ियों द्वारा किया गया योगदान अतुलनीय रहा। इसी विशिष्टता के कारण महात्मा गांधी एवं पं. जवाहरलाल नेहरू जैसी महान राष्ट्रीय विभूतियां भी मारवाड़ियों के इस गुण का बखान करते नहीं थकती थीं। प्रस्तुत कृति मूलत: विभिन्न स्रोतों पर आधारित है जिसकी प्राथमिक जानकारी, इस समाज के मुनीम-गुमाश्तों व उद्यमियों के साथ व्यक्तिगत भेंटवार्ताओं से प्राप्त की गई है।

इस उद्देश्य हेतु हमारी टीम ने तीन लाख पचास हजार किमी. से भी अधिक की यात्राएं पूर्ण कर दो हजार दिनों के शोध के दौरान समाज से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े लगभग आठ हजार लोगों के साथ बातचीत की। इनमें बड़ी-बड़ी कंपनियों के अध्यक्षों से लेकर नौकरीपेशा मारवाड़ी तक सम्मिलित हैं। पृथक्-पृथक् पृष्ठभूमि के इन लोगों ने समाज के बारे में अनोखे किस्से-कहानियां सुना हमें उनके बारे में कितनी ही अनजानी-अनकही व रोचक तथ्यों से अवगत करवाया तथा समाज के असाधारण उद्यम के विविध पहलुओं के बारे में एक नवीन अंतर्दृष्टि भी प्रदान की। शोधवेत्ताओं ने कठोर श्रम द्वारा लगभग दो लाख पृष्ठों की समस्त जानकारी को एकत्रित किया। इसके अतिरिक्त अनेक व्यक्तिगत आंकड़े, संस्मरण, डायरियां व बहीखाते, *ब्रिटिश गजेट*, जनगणना रिपोर्ट्स, आत्मकथाएं, दैनिक समाचार-पत्र व पत्रिकाओं के साथ समय-समय पर आयोजित होने वाले अधिवेशनों और सम्मेलनों के विवरण भी जुटाए गये। देश के विभिन्न भागों में बिखरे पड़े अल्पज्ञात सूत्रों के आधार पर यह कॉफी टेबल बुक तैयार की गई है। गंध व सीलन-भरे कमरों और विस्मृत पुरातात्विक स्थलों में अतीत को खंगालते हुए विषय से सम्बन्धित तथ्यात्मक जानकारी जुटाने के प्रयास आरंभ किये गये। इस शोध अध्ययन के दौरान जो सामग्री हमें प्राप्त हुई उसका उल्लेख इस कॉफी टेबल बुक में किया गया है, जिसे हमारी टीम ने अति रोचक एवं रचनात्मक शैली में प्रस्तुत किया है ताकि भावी अध्येताओं को एक ही स्थान पर ठोस व तथ्यात्मक जानकारी सुलभ हो सके।

सतत सहयोग व सहायता करने वाले उल्लेखनीय महानुभावों जिनमें जे.के. समूह के हर्षपति सिंहानियां, एन. के. साह, राजेश कपूर, बजाज समूह के नीरज बजाज, श्याम एस. मनियार, केजीके समूह के नवरतन कोठारी, वेलस्पन की दीपाली गोयनका, अमूल्य माईका के राकेश अग्रवाल, हल्दीराम के मनोहर लाल अग्रवाल, पायोनियर्स समूह के सुशील कुमार जैन, मनोज मुरारका, श्रीकुमार बांगड़, जे. पी. चौधरी, संजय झंवर, डॉ. जुगल किशोर सर्राफ, सीताराम शर्मा, शिव कुमार लोहिया, गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया, प्रह्लादराय अगरवाला तथा समस्त मारवाड़ी समाज के विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी शामिल हैं। कॉफी टेबल बुक के लेखन में योगदान हेतु उन सभी के प्रति आभार, जिन्होंने इस शोधकार्य में विनम्रता और सकारात्मक भाव के साथ सहायता प्रदान की। हम उन उद्यमियों के प्रति भी विशेष रूप से कृतज्ञ हैं जिन्होंने पूर्ण उत्साह के साथ अपने परिवारों एवं पूर्वजों के बारे में विस्तृत सूचना उपलब्ध करवाई, साथ ही शोधकार्य के दौरान निरंतर सहयोग एवं सुझाव देने हेतु हमारे साथ खुलकर विचार व जानकारियां साझा कीं। बहुत-से ऐसे महानुभाव भी हैं जिनका नाम यहां उल्लेखित नहीं है, परन्तु उनका प्रोत्साहन और शुभकामनाएं भी हिम्मत व हौंसला बढ़ाती रही हैं।

ज्ञान और साहित्य के विशाल भंडार 'बिजनेस हिस्ट्री म्यूजियम', आईआईएमई, जयपुर तथा शोध-सहयोगियों ने भी हमारी यथासंभव सहायता की। विविध विषयों पर संग्रहालय में विद्यमान पुरातन व अद्यतन पत्र-पत्रिकाओं के दुर्लभ कोष से भी यह शोध विशेष समृद्ध हुआ। हम भारत और विदेश में स्थित उन समस्त निजी व सार्वजनिक पुस्तकालयों, संग्रहालयों, कला-संग्राहकों और कला-दीर्घाओं के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। कॉफी टेबल बुक में प्रकाशित अधिकांश पेंटिंग्स, प्रिंट, नक्शे, चित्रांकन एवं प्राथमिक छायाचित्र उन्हीं के सौजन्य से प्राप्त हुए हैं। कई कलाकारों ने हमारे विचारों को आत्मसात कर विविध विषयों पर पेंटिंग्स भी तैयार कीं। मारवाड़ी समाज की सांस्कृतिक विरासत के बारे में ऐसी अंतर्दृष्टि प्राप्त करना वास्तव में एक सुखद तथा आह्लादपूर्ण अनुभव रहा है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि समाज की इस प्रकार की भव्य ऐतिहासिक यात्रा को कॉफी टेबल बुक के सीमित पृष्ठों में समाहित करना अपने आप में एक अत्यंत ही चुनौतीपूर्ण कार्य था।

शोध के दौरान हमारी टीम को भौगोलिक रूप से भी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। एक विशाल क्षेत्र का अध्ययन करना एवं प्राथमिक व सहायक जानकारी के साथ-साथ चित्र एवं नक्शे इत्यादि जुटाने के लिए हमें प्रचुर संसाधनों और मानव-शक्ति की आवश्यकता रही, परन्तु सीमित संसाधन होने के कारण, अपनी टीम के असीम उत्साह, लगन व हिम्मत पर अधिक विश्वास करना पड़ा। आज हम संतुष्टि की एक गहन भावना से अभिभूत हैं; क्योंकि इसमें रंचमात्र भी संदेह नहीं है कि मारवाड़ी समाज के सर्वांगीण व अप्रतिम योगदान को जनमानस के बीच में लाने की महती आवश्यकता है ताकि भावी पीढ़ियों हेतु यह प्रेरक व पथ-प्रदर्शक के रूप में स्वीकार्य हो।

कॉफी टेबल बुक के उत्कृष्ट संपादन और रचनात्मक सुझावों के लिए रामानंद राठी, प्रो. सुरेन्द्र डी. सोनी, गोविन्द सिंह नेगी, अशोक भारतीय, किशन चंद एवं मंजू खन्ना का हार्दिक साधुवाद व्यक्त करते हुए उनके प्रति आभार। इसी तरह, शोधकार्य में कुशलतापूर्वक अथक सहयोग देने एवं पांडुलिपि पर समय-समय पर अपना अभिमत व्यक्त करने के लिए कई अन्य मारवाड़ी बंधुओं का भी आभार। इस कलात्मक कृति को समृद्ध बनाने वाले दुर्लभ व आकर्षक चित्रों की व्यवस्था के लिए सुजाता टकनेत, मिशेल बेंगुइन, ड्योढी वॉन शेवॉन, अनुराग शर्मा, योगेन्द्र गुप्ता, राज चौहान, त्रिलोकचंद महावर, गोपाल कुमावत और डिनोदिया फोटो लाइब्रेरी का भी धन्यवाद। साथ ही समदर सिंह खंगारोत, सुरेश चन्द्र शर्मा, दीपक शर्मा, धर्मपाल, त्रिभुवन सिंह, राजेन्द्र आर्य और विकास सोनी का भी आभार, जिन्होंने अथक परिश्रम एवं लगन से एक से बढ़कर एक आकर्षक पेंटिंग्स तैयार कर इस कॉफी टेबल बुक की शोभा में अभिवृद्धि की।

इसके अतिरिक्त इस कठिन तथा चुनौतीपूर्ण शोधकार्य में एस. एन. सिंह, चिराना, विनोद भारद्वाज, जयबोध व श्रद्धा पांडे, पी. पी. अशोक, रजत व आंचल अग्रवाल, नलिनी गुप्ता, शालिनी माथुर, नेहा साही, उम्मेद सिंह एवं सीता भाटी, राजेश कुदीवाल व आनंद सोनी के सहयोग तथा प्रोत्साहन को भी नहीं भुलाया जा सकता, एतद् इन सभी का धन्यवाद। छोटेलाल व मनोज पांचाल का भी हृदय से आभार जिन्होंने अपनी निष्काम सेवा-भावना का परिचय देते हुए कॉफी टेबल बुक के लेखन में अपार सहयोग प्रदान किया। इसी के साथ हमारे पारिवारिक सदस्यों का भी धन्यवाद जिन्होंने सदैव सुख-दुःख में इस कॉफी टेबल बुक के लेखन हेतु प्रतिक्षण प्रोत्साहित कर निरंतर शक्ति प्रदान की। साथ ही उन्होंने इसके कला-पक्ष एवं चित्रों से जुड़े शोधकार्य को अपने हाथों में लेकर अथक प्रयासों से पांडुलिपि की सूक्ष्म समीक्षा करके अपने अमूल्य सुझावों के द्वारा इस कृति को समृद्ध बनाने में भी समुचित सहयोग प्रदान किया। इसी प्रकार देवाशीष व देवांग ने भी मौन प्रोत्साहन देते हुए समय-समय पर हमारी ऊर्जा में नये प्राण फूंककर अप्रत्यक्ष रूप से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सत्य तो यह है कि उनके स्नेह, लगन तथा उत्साह ने हमारे पंखों को एक ऊंची उड़ान दी जिसके बिना यह लेखन-यात्रा संभव ही न हो पाती।

सीआईआरएमसी, जयपुर की टीम का भी बहुत-बहुत धन्यवाद। इस कॉफी टेबल बुक का उत्कृष्ट एवं मर्यादापूर्ण डिजाइन इसे एक शाश्वत एवं आकर्षक रूप प्रदान करता है। थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली के प्रबंधकों का विशेष रूप से आभार, जिन्होंने मुद्रण के उच्चतम मापदंड प्राप्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आशा है कि प्रस्तुत कॉफी टेबल बुक मारवाड़ी समाज के सम्बन्ध में नवीन विचारधारा, जागरूकता एवं ऊर्जा का संचार करेगी तथा देश के युवाओं को एक अक्षुण्ण प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। भौतिक संपत्ति तो एक अस्थायी वस्तु है, किन्तु इतिहास युगों की बुद्धिमत्तापूर्ण अमूल्य धरोहर है, अतः मारवाड़ी समाज से विनम्र अनुरोध है कि वे अपने इस गौरवशाली इतिहास को अवश्य सहेजकर रखें।

जयपुर
25 जनवरी, 2025

डॉ. डी. के. टकनेत

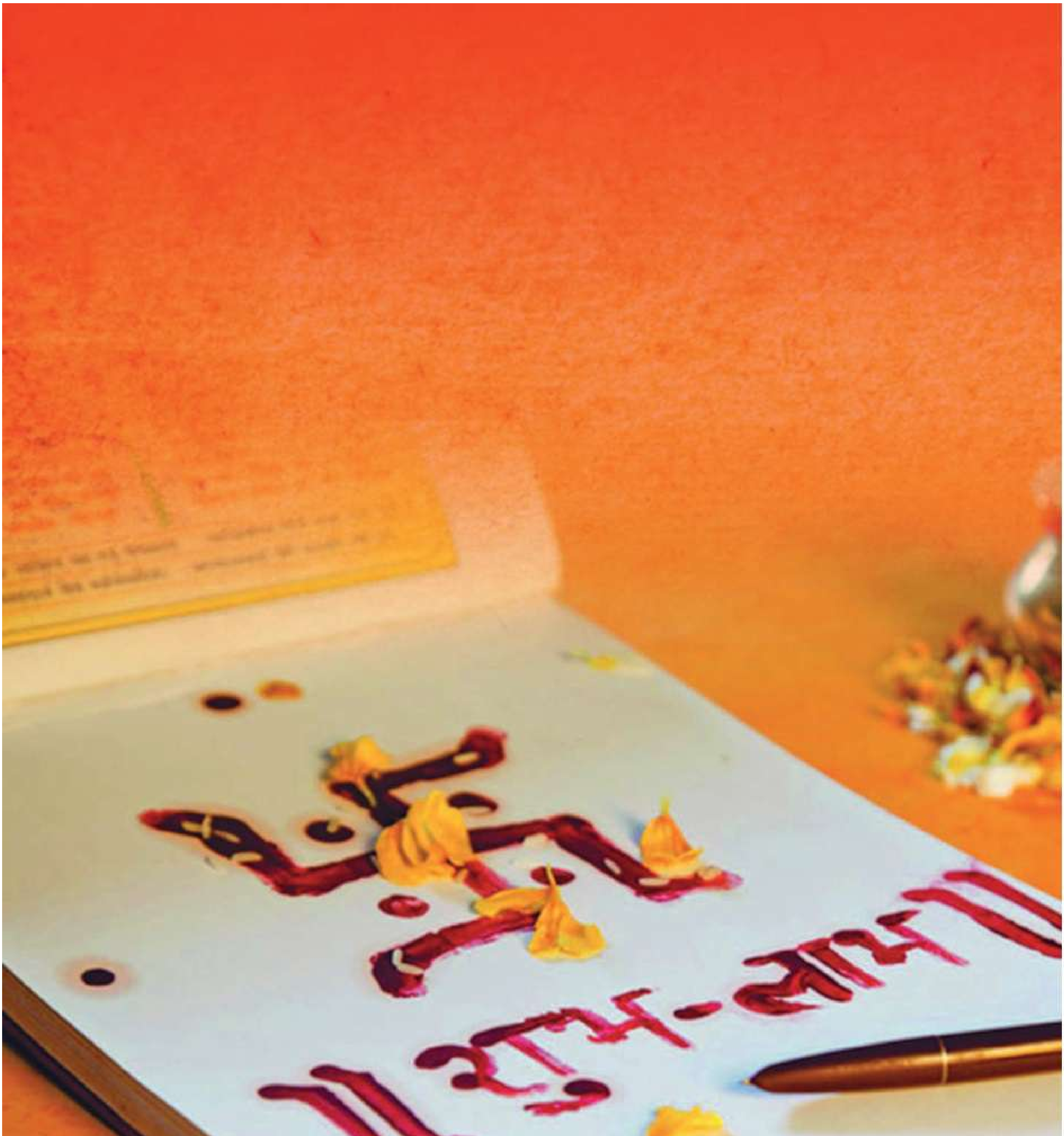
॥शुभ-लाभ॥

अध्याय

1

वैश्यों में अग्रणी मारवाड़ी

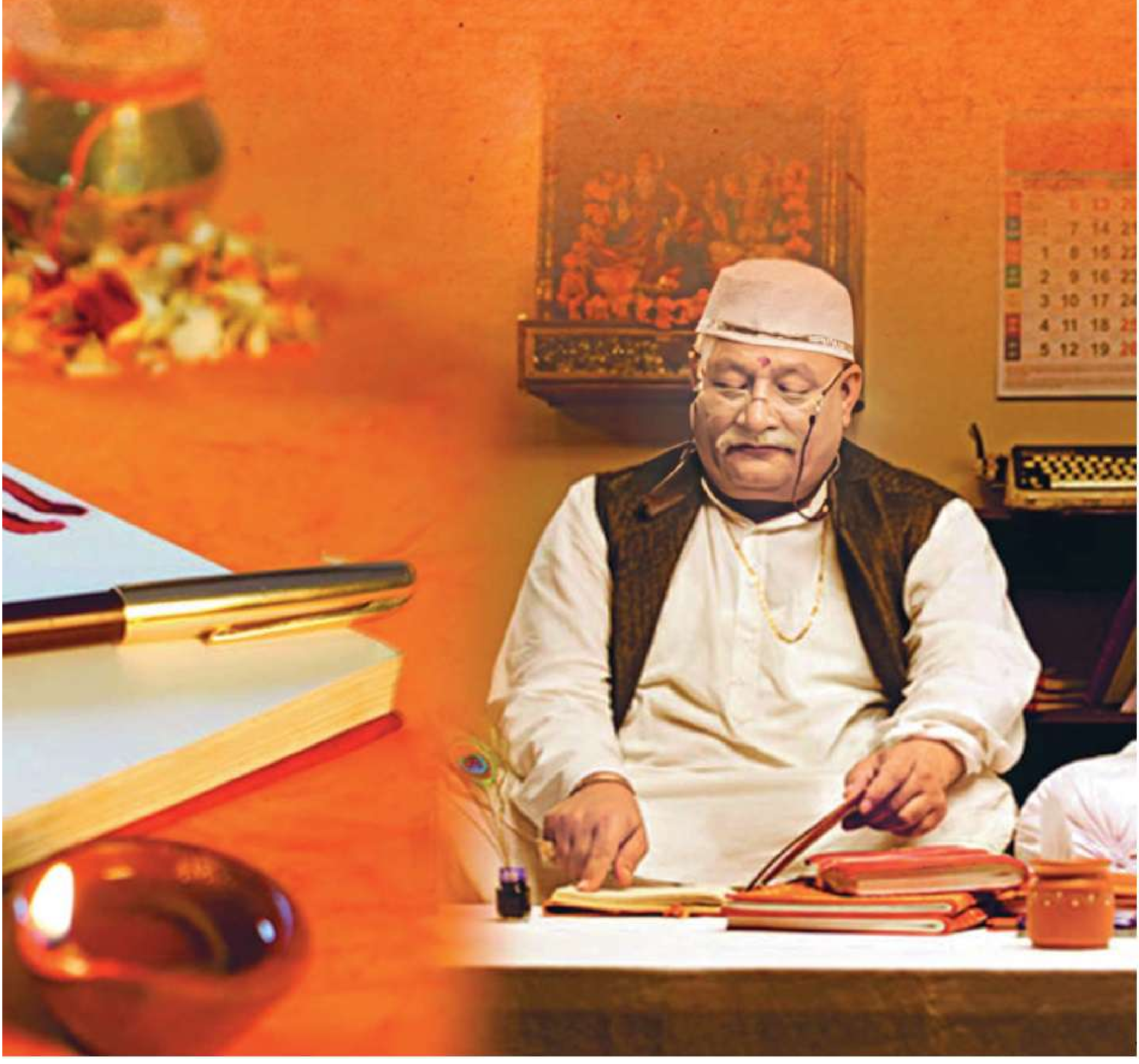

भारत में वैदिक युग से ही वृत्तिपरक कार्यक्षेत्र के अनुसार समाज का चार प्रमुख वर्णों – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र में विभाजन हो गया था। आर्य वर्ण–व्यवस्था का यही विभाजन आगे चलकर जातियों के विकास का आधार बना। *महाभारत* में वैश्य को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि वैश्य वह वर्ग है जो पशुपालन से यश, कृषि के माध्यम से धन–संपत्ति अर्जित करता है तथा वेदों के अनुरूप सदाचरण करता है। इस प्रकार वैश्यों को पशुपालन, कृषि एवं व्यापार करने वाले वर्ग के रूप में देखा जाता था, यद्यपि कुछ वैश्य शिल्पियों तथा कारीगरों के रूप में भी कार्य करते थे। इतिहास साक्षी है कि वैश्य वर्ग देश की आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति को प्रभावित करता रहा है। बड़े–बड़े महान इतिहास–पुरुषों ने इस वर्ग में जन्म लिया है। जब तक वैश्यों के हाथ में कृषि, पशुपालन और व्यापार का कार्य रहा, तब तक देश सोने की चिड़िया कहलाता रहा। यहां की समृद्धि और वैभव का वर्चस्व देश–विदेश में रहा। प्राचीन धर्मग्रन्थों में लिखा है कि वैश्य समुद्री व्यापार करते थे। ऐसी यात्राओं में नील, चावल, मसाले, मलमल, ऊनी कम्बल, शॉल, वस्त्र, हाथीदांत की कलाकृतियां तथा रत्नादि का व्यापार प्रमुख था। ढाका की मलमल का नाम तो विश्व में चहुंओर विख्यात था। जिन मार्गों से यह व्यापार चलता था, उन पर जैन तथा बौद्ध साहित्य में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

गौरवशाली परंपरा

वैश्यों द्वारा स्थापित विश्वविद्यालयों में उच्च कोटि की शिक्षा दी जाती थी, जिनमें विश्व के अनेक देशों के विद्यार्थी ज्ञानार्जन हेतु प्रवेश लेते थे। इन विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों का जीवन आदर्शों से परिपूर्ण था। दान, सेवाभाव, उदारता, ईमानदारी जैसे गुणों के कारण उनका यशोगान संपूर्ण विश्व में होता था। अनेक विद्यार्थियों की श्रेष्ठि एवं महाजन के रूप में ख्याति थी। *महाभारत* में वर्णित है कि सबसे अधिक धनी वैश्य वर्ग में होने से इनसे राज्य को सर्वाधिक कर प्राप्त होता था, जिससे जनकल्याण के कार्य किये जाते थे। बड़े–बड़े बौद्ध मठ भी वैश्यों के अनुदान से ही संचालित होते थे। इसके अतिरिक्त अनेक मन्दिर, गौशालाएं, धर्मशालाएं व चिकित्सालय इनके द्वारा ही संचालित थे, जिसके प्रामाणिक दस्तावेज सर्वत्र उपलब्ध हैं। भारतीय इतिहास के स्वर्णकाल तथा गुप्तकाल के अधिष्ठाता वैश्य ही थे। इस युग के सम्राट चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त तथा विक्रमादित्य ने भारत राष्ट्र की सीमाओं का प्रसार कर देश में एकछत्र राज्य की स्थापना की थी। सम्राट हर्षवर्धन ने भी अपने वंश की गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाते हुए प्रचुर मात्रा में दान दिया, जिसके बाद से यह परंपरा अनवरत चलती रही।

उत्तर वैदिक युग में वैश्य व्यापार व वितरण गतिविधियों पर अधिक ध्यान देने लगे। समय के साथ उनका यह व्यापार एवं वितरण दूर–दूर के क्षेत्रों में भी फैलने लगा, जिससे आवागमन की सुविधाओं का विकास आवश्यक हो गया। वैश्य वर्ग व्यापारियों के रूप में अपनी पहचान बनाने लगा। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि तथा अनूठी सूझबूझ के आधार पर उन्होंने वस्तुओं तथा खाद्य पदार्थों के विपणन के अनेक तौर–तरीके विकसित कर लिये। इसके साथ ही वैश्य वर्ग महाजनी व साहूकारी जैसी कुछ अन्य गतिविधियों में भी रुचि लेने लगा तथा इन्हें अपने व्यापार के साथ जोड़ने लगा। विदेशों में भारतीय संस्कृति के वास्तविक संवाहक के रूप में भी वैश्यों

वैश्य प्राचीन काल से ही व्यापार के साथ धार्मिक अनुष्ठानों, यज्ञ एवं हवन आदि को भी अपना पर्याप्त समय देते थे, जो उनके जीवन का अभिन्न अंग थे।

सम्मुख पृष्ठ पर नीचे: वेद का अर्थ ही होता है - 'ज्ञान'। ये शाश्वत व सर्वकालिक सत्य से ओत-प्रोत भारत के प्राचीनतम एवं महानतम ग्रन्थ हैं।

पिछला डबल स्प्रेड: एक प्रचलित मारवाड़ी कहावत है, "पैली मांड पीछे दे, फेर घटे मेरे से ले" बुजुर्गों की मान्यता थी कि लेन-देनों का तुरंत लेखा करने या विगत मांडने से आवश्यकता पड़ने पर वस्तुस्थिति का आसानी से पता लगाया जा सकता है। तभी तो कहा जाता है कि 'आंक व्यापारी की आंख' होता है। दीपावली के शुभ अवसर पर सभी पुरानी बहियों को नवीन बहियों से बदलकर उनकी पूजा से नववर्ष की शुरुआत करना वैश्यों की प्राचीन परंपरा रही है।

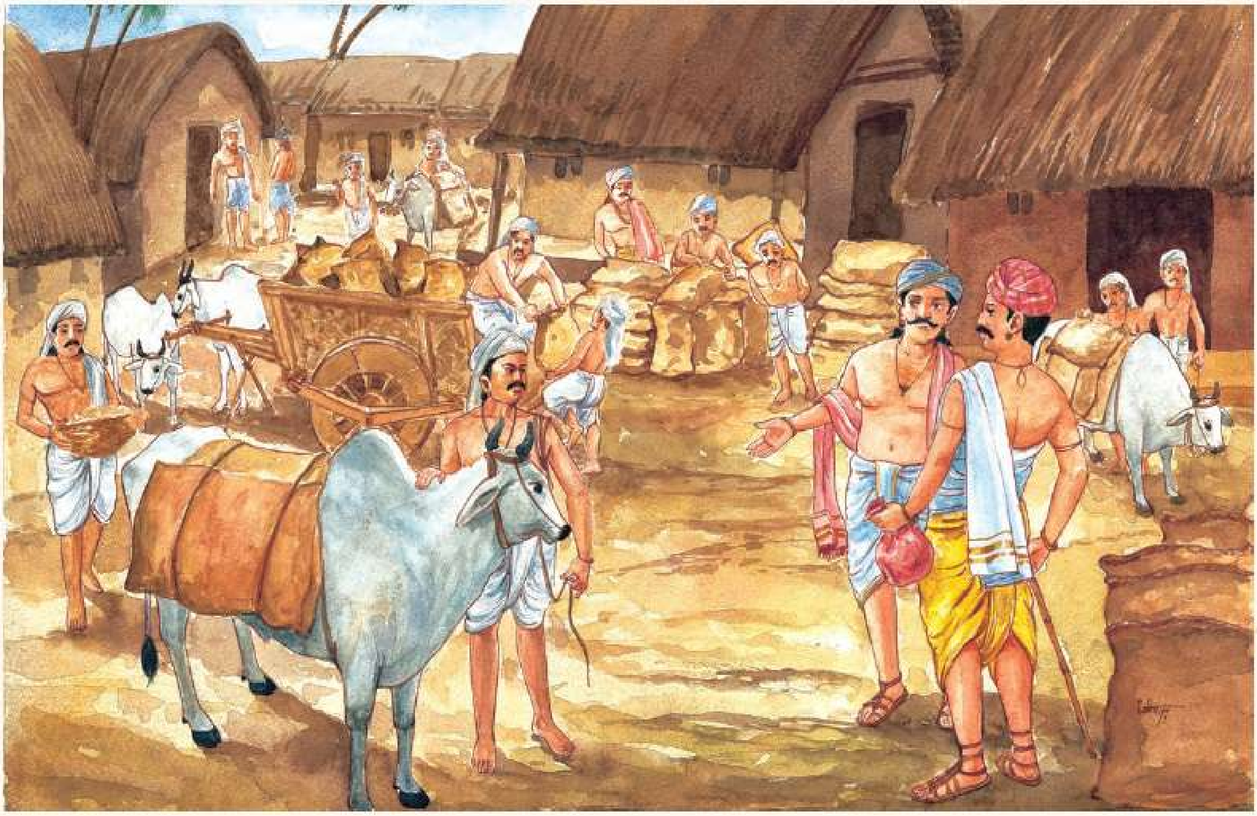

मारवाड़ी व्यापारी अपने पारंपरिक पहनावे धोती-कुर्ते तथा पगड़ी या साफे में संयुक्त परिवारों में रहते थे। कृषि तथा पशुपालन के अतिरिक्त वह धीरे-धीरे वितरण गतिविधियों में भी रुचि लेने लगे। उस समय परिवहन के पर्याप्त साधनों के अभाव में व्यापारिक वस्तुओं के सुदूर क्षेत्रों में परिवहन हेतु कारवां चलता था जिसमें बैलगाड़ियों का ही मुख्यत: उपयोग किया जाता था, इसी परिदृश्य को दर्शाती एक आकर्षक रंगीन कलाकृति।

को जाना जाता था। उनकी उदारता तथा धार्मिक सहिष्णुता का कोई सानी नहीं था। इन लोगों ने अपनी प्रतिभा तथा क्षमता से भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को एशिया, यूरोप, अमेरिका व अन्य महाद्वीपों में फैलाया। कोलम्बस से बहुत पहले उन्होंने समुद्र पोत संचालन द्वारा संपूर्ण विश्व को विस्मित कर दिया था। इतिहास साक्षी है कि भारतीय जनजीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं रहा जो वैश्यों के योगदान से गौरवान्वित न हुआ हो। चाहे व्यवसाय हो या ज्ञान-विज्ञान, साहित्य हो या राजनीति व धर्म या फिर सभ्यता-संस्कृति, सभी क्षेत्रों में वैश्य वर्ग का योगदान सदैव बहुमुखी रहा है।

यदि हम भारत में आर्थिक विकास के प्रारंभिक चरणों पर एक दृष्टि दौड़ाएं तो हम देखते हैं कि शुरू-शुरू में स्थानीय उत्पादों का वितरण सामान्यत: गांवों तक सीमित था जो अपने-आप में आत्मनिर्भर इकाइयां होते थे। समय के साथ, माल की अदला-बदली या बिक्री करने वालों की व्यापारिक सक्रियता आस-पास के अन्य गांवों तक फैलने लगी। इससे उत्पादकों व शिल्पकारों की गतिविधियों को नवीन दिशा मिली और वितरण-प्रणाली का सूत्रपात हुआ, जिसने धीरे-धीरे व्यापार का नया रूप ले लिया। समय के साथ उत्पादन विशेषज्ञता-प्राप्त गतिविधि बन गई और शिल्पकार अपने-अपने शिल्प के विशेषज्ञ बनते चले गये। *महाभारत* में वणिक् टोलियों का उल्लेख मिलता है, जो अपना माल बेचने के लिए लम्बी यात्राओं पर निकला करती थीं। अन्य ग्रन्थों में भी व्यापारिक गतिविधियों के लिए सुदूरवर्ती क्षेत्रों में आने-जाने वाले सौदागरों का वर्णन मिलता है। बाद में ऐसे कुछ टोलों को 'घुमन्तू' या 'बनजारा टोले' भी कहा जाने लगा जो कुछ निश्चित व्यापारिक मार्गों पर यात्रा करते थे और एक क्षेत्र से माल खरीदकर दूसरे क्षेत्र में बेचते थे। ये घुमन्तू व्यापारी समय के साथ विपणन की सुविधा को देखते हुए माल के उत्पादन व वितरण को आपस में जोड़कर अपने व्यापार को नये आयाम देने लगे।

व्यापारियों के रूप में उदय

ऋग्वेद में 'पणि' नामक एक उद्यमी, शक्तिशाली और महत्त्वपूर्ण जाति का वर्णन है, जिसका मुख्य व्यवसाय कृषि, व्यापार, गोपालन और साहूकारी था। यह वर्ग उस समय के अधिकांश गोधन का स्वामी था। ऋग्वेद में कहा गया है कि 'पणि' व्यापार के लिए यात्राएं करते थे और न केवल अपना माल उच्च मूल्यों पर बेचते थे, अपितु उधार बिक्री पर ब्याज भी लेते थे। 'पणि' आर्य मूल के थे और प्राचीन पाश्चात्य जगत में फोनिस और यूनान (ग्रीस) तथा जर्मनी में फोनिक के नाम से जाने जाते थे। 500 ई.पू. में हेरोडोटस ने पणियों का वणिकों के रूप में वर्णन किया था। व्याकरणविद् पाणिनि ने 'वणिक्' शब्द 'पण' धातु से लिया था। यूरोप के प्राचीन इतिहास में 2000 ई.पू. में पूर्व एशिया व संपूर्ण दक्षिणी यूरोप में वणिकों के प्रभाव का विस्तृत वर्णन मिलता है। मूल वणिक् जाति के लोगों ने वणिकों से जहाजरानी की तकनीक सीखी थी।

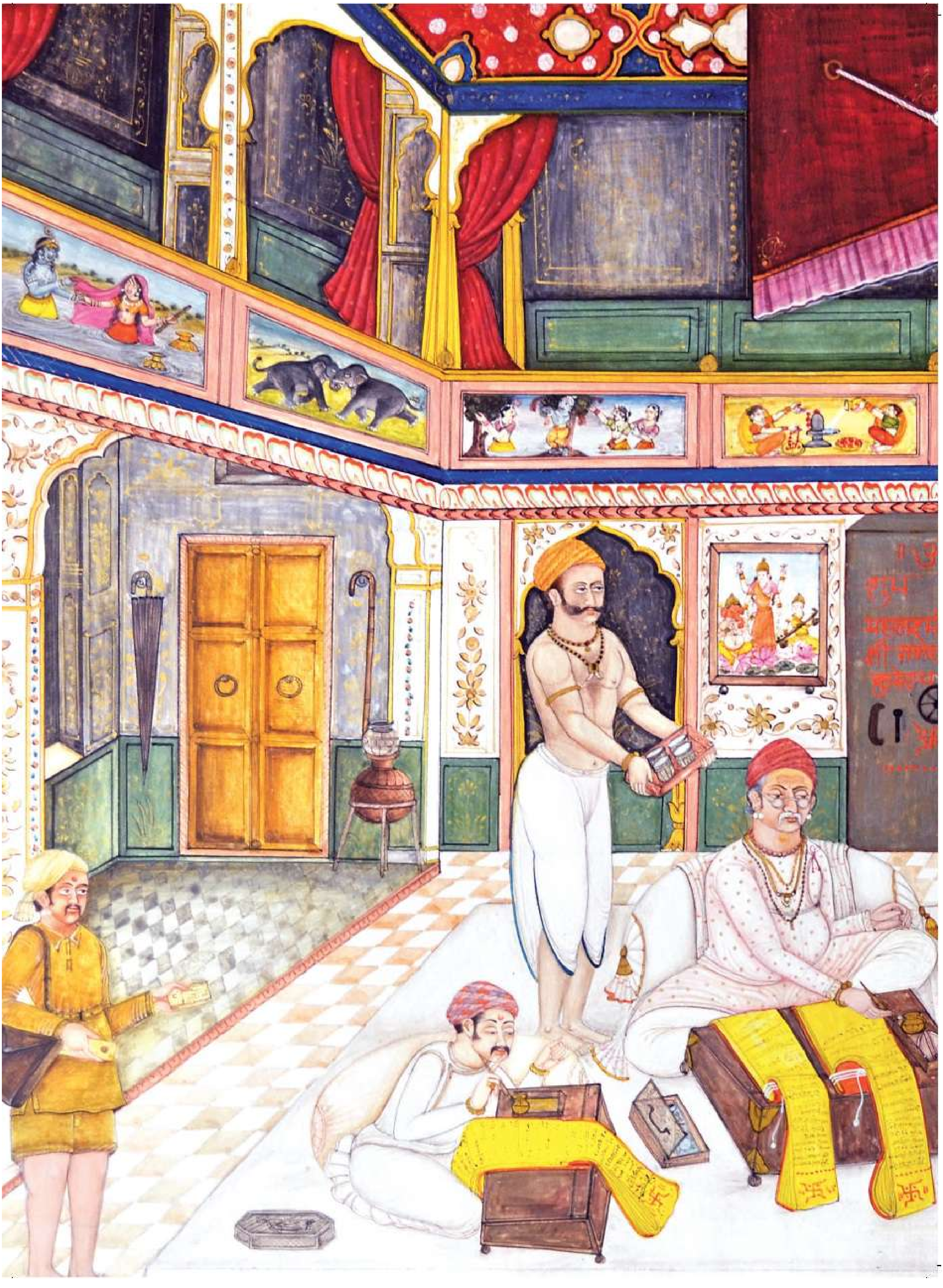

अध्याय 2

प्रवसन पश्चात् तीव्र प्रगति

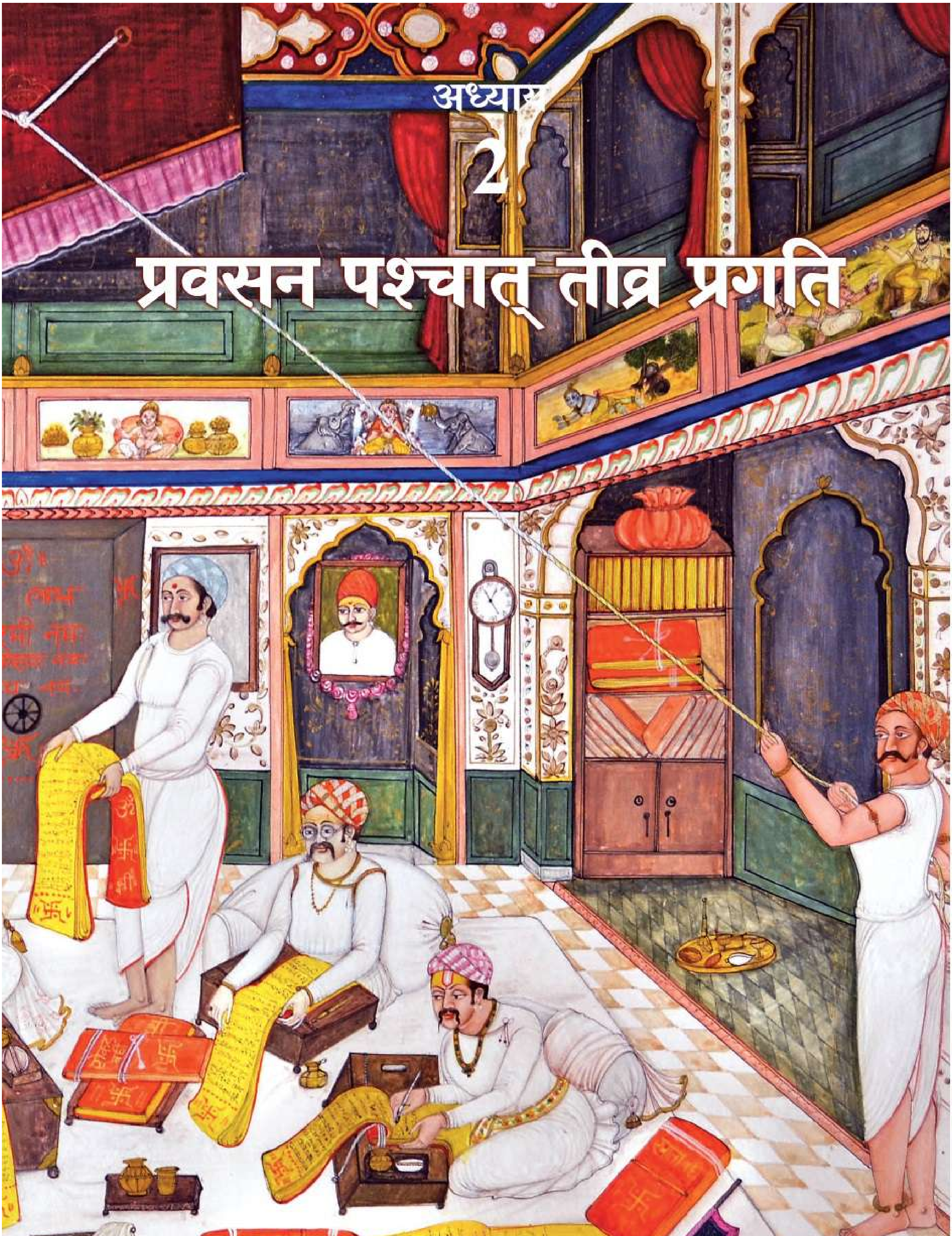

प्राचीन वर्ण–व्यवस्था के अनुसार कृषि, गोरक्षा और वाणिज्य वैश्यों के मुख्य कर्म थे। कालांतर में वैश्यों ने कृषि व गोरक्षा को छोड़कर व्यापार–व्यवसाय को प्रोत्साहन दिया। इसे ही जीविका का प्रमुख साधन बनाकर अपनी संपूर्ण शक्ति इस कार्य में लगा दी। पैदावार या उपज होने के स्थानों से माल क्रय करके उपभोग के स्थानों पर विक्रय करना उनका प्रमुख व्यवसाय बन गया था। बनजारों की टोलियों के माध्यम से माल बाजारों, हाटों तथा मंडियों से गुजरता हुआ उपभोक्ता तक पहुंचता था। जब राजपूताना में व्यापार का वातावरण प्रतिकूल होने लगा, तो मारवाड़ियों ने देशव्यापी निष्क्रमण आरंभ कर दिया। कई स्थानों पर उन्होंने बड़ी–बड़ी व्यापारिक कोठियां स्थापित कर लीं। मिर्जापुर में सेठ अणतीराम पोद्दार तथा सेठ सेवाराम रामरिखदास सिंहानियां सुप्रसिद्ध थे, जिनके व्यापारिक सम्बन्ध बंगाल, बिहार और उड़ीसा तक थे। लक्ष्मणगढ़ के गनेड़ीवालों ने हैदराबाद में उल्लेखनीय व्यापारिक उन्नति की तथा हैदराबाद राज्य के खजांची बन गये। इसी राज्य में बीकानेर के ढड्ढा परिवार की प्रसिद्ध बैंकिंग फर्म अमरसी सुजानमल का कारोबार लाहौर व अमृतसर तक फैला हुआ था। *इंपीरियल गजेटियर ऑफ इंडिया* में वर्णित है कि चूरू के मोहनराम सरावगी का बैंकिंग व्यापार भारतव्यापी था। कलकत्ता में अफीम के व्यवसाय में सोजीराम हरदयाल फर्म प्रमुख थी, जिसने अपना कार्यालय चीन में भी स्थापित कर लिया था।

मध्य भारत में अधिकतर फर्में मारवाड़ियों की थीं, जिनमें प्रसिद्ध फर्म चिमनाराम सिंहानियां ने केवल अफीम के व्यवसाय में सरकार को कर के रूप में सत्ताईस लाख पचास हजार रुपयों का भुगतान किया। बम्बई स्थित बगड़ की फर्म सरूपचंद पृथ्वीराज रूंगटा अफीम और चाँदी के व्यवसाय में अग्रणी थी, जिसने सरकार को उस समय कर के रूप में अड़तीस लाख रुपये दिये थे। यदि आज के हिसाब से देखें तो यह रकम कई सौ करोड़ रुपये की होगी। यह अपने–आप में किसी आश्चर्य से कम नहीं कि उस जमाने में मारवाड़ी कितनी भारी–भरकम रकम का लेन–देन करते थे। *मध्य प्रांत गजेटियर* के अनुसार नागपुर में बंसीलाल अबीरचंद तथा जबलपुर में सेवाराम खुशालचंद की फर्में प्रमुख थीं। सौ से अधिक शाखाओं वाली फर्म बंसीलाल अबीरचंद का बैंकिंग कारोबार लंदन से रंगून तक फैला हुआ था। लाहौर तथा मध्य प्रांत का सरकारी खजाना इन्हीं के अधीन रहता था। कोटा के बहादुरमल बापना ने राजपूताना और ब्रिटिश भारत के लगभग चार सौ व्यापारिक केन्द्रों पर अपनी शाखाएं खोल रखी थीं। हरिसिंह निहालचंद की फर्म जमींदारी में सबसे बड़ी थी तथा जबलपुर के राजा गोकुलदास पित्ती आठ सौ गांवों के जमींदार थे। भगवती प्रसाद के पास संयुक्त प्रांत के होराहपुर में एक सौ पन्द्रह गांवों की जमींदारी थी। जम्बू प्रसाद अग्रवाल ने सहारनपुर जिले में इक्कीस हजार एकड़ भूमि खरीद ली थी। रामगढ़ के रुइयों तथा पोद्दारों ने बम्बई में अपनी गद्दी स्थापित कर ली थी। रामनारायण रुइया और गोविन्दराम सेकसरिया सन् 1853 तक 'कॉटन किंग' के नाम से प्रसिद्ध हो चुके थे। सन् 1860 के बाद ताराचंद घनश्यामदास की गणना प्रमुख फर्म के रूप में की जाने लगी थी, जो बैंकिंग तथा हुंडी के व्यापार में काफी प्रतिष्ठित थी। इस प्रकार स्वतंत्रतापूर्व मारवाड़ी व्यापारी प्रत्येक क्षेत्र तथा व्यवसाय में अपनी महत्ता स्थापित किये हुए थे। मारवाड़ी व्यापारियों, उनकी उपजातियों तथा मूल निवासों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए आईआईएमई, जयपुर की टीम ने सन् 1750 से लेकर 1940 तक की अवधि की पांच सौ से अधिक मारवाड़ी फर्मों का अध्ययन

पिछला डबल स्प्रेड : एक पुरानी मारवाड़ी गद्दी का आकर्षक दृश्य। इन गद्दियों में बड़े-बड़े गद्दों पर श्वेत धुली चाँदनी (चादर) बिछी होती थी। सवेरे नियमित पूजा-पाठ के बाद सेठजी अपनी पगड़ी, कमरी, अंगरखा और दुपट्टा धारण कर गद्दी पर बैठते थे, जिनके अगल-बगल महाजनी में निपुण मुनीम बैठते थे। सुबह-सवेरे तेजी-मंदी की जो भागदौड़ आरंभ होती थी वह रात बारह बजे तक चलती रहती थी।

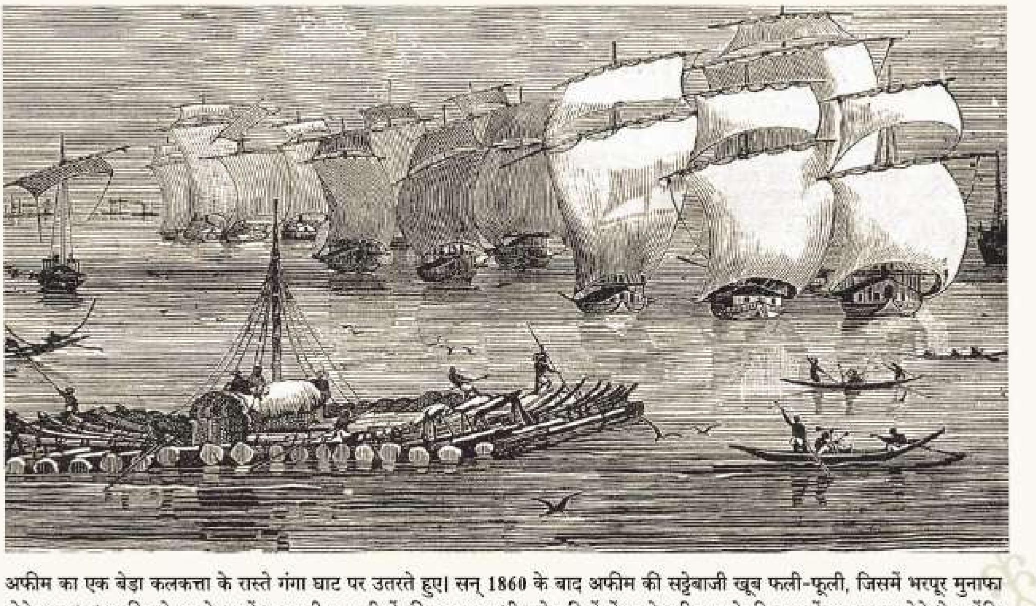

अफीम का एक बेड़ा कलकत्ता के रास्ते गंगा घाट पर उतरते हुए। सन् 1860 के बाद अफीम की सट्टेबाजी खूब फली-फूली, जिसमें भरपूर मुनाफा होने लगा था। अफीम के कारोबार में मारवाड़ी व्यापारियों की बहुतायत थी, जो नदियों में इसके परिवहन के लिए नावों का सहारा लेते थे क्योंकि यह परिवहन का सबसे सस्ता साधन था।

किया, जिनका विवरण इसी कॉफी टेबल बुक के परिशिष्ट 7 व 8 में दिया गया है। इन फर्मों की जानकारी के लिए हमने ऐतिहासिक सामग्री का अध्ययन तो किया ही, साथ ही कुछ पुराने मुनीमों और गुमाश्तों से किये गये साक्षात्कार भी बहुत उपयोगी सिद्ध हुए। यह अध्ययन ही हमारे इस अध्याय का मुख्य आधार है, जिसके द्वारा अंग्रेजों के आगमन से पूर्व मारवाड़ी व्यापारियों द्वारा संचालित व्यापार का दिग्दर्शन होता है। मारवाड़ियों के निष्क्रमण तथा दिशा-निर्धारण के लिए यद्यपि हमने अन्य स्रोतों का भी सहारा लिया है, परन्तु अधिकांश मौलिक जानकारी इसी अध्ययन का परिणाम है।

साहूकारी तथा हुंडी व्यवसाय

इस अध्ययन के परिणामों से परिलक्षित हुआ कि अधिकतर मारवाड़ी फर्में बैंकिंग, हुंडी और सर्राफा का व्यवसाय करती थीं। जगत सेठ तो सन् 1700-1764 तक बैंकिंग में अग्रणी थे। इन्हें कई विद्वानों द्वारा 'विश्व बैंक' भी कहा जाता है। कुछ बड़ी मारवाड़ी फर्में बैंकिंग में सुप्रसिद्ध रहीं। इन फर्मों के मुख्यालय तो शेखावाटी, अजमेर और बीकानेर में थे, किन्तु शाखाएं पूरे देश में फैली हुई थीं। राजपूताना में प्रत्येक रियासत की अपनी एक विशिष्ट मुद्रा होती थी। इसे बदलने का कार्य व्यापारी ही करते थे, जिन्हें सर्राफ के नाम से जाना जाता था। इस प्रकार के कार्य में भी वे अच्छा लाभ कमाते थे। विद्वान बोइलो के अनुसार सन् 1835 में जोधपुर व फलौदी के बैंकर व्यापारियों को आधा प्रतिशत प्रतिमाह की ब्याज दर पर ऋण देते थे। कलकत्ता में मारवाड़ी बैंकों का इतना व्यापक प्रभाव था कि व्यापारिक निर्देशिका में स्वदेशी बैंकरों की जो सूची दी गई, उसमें कम-से-कम आधे नाम मारवाड़ी बैंकरों के थे। कलकत्ता की स्वदेशी बैंकिंग व्यवस्था के प्रमुख ने इन बैंकरों की बंगाल के राष्ट्रीय वाणिज्य-मंडल से शिकायत की थी कि मारवाड़ी अपना धन बैंक स्टॉक में लगाने की अपेक्षा अपने जाति-भाइयों को देते हैं, जिससे सभी व्यापारियों को लाभ नहीं मिल पाता। परन्तु वी. आई. पावलोव ने इसे बंगाल में मारवाड़ियों के व्यापारिक एकाधिकार का श्रेय दिया है। विद्वान गाडगिल ने भी कहा है कि बैंकिंग में मारवाड़ियों की क्षमता और श्रेष्ठता उनकी सफलता का सबसे मुख्य कारण थी। सन् 1860 के बाद तो मारवाड़ी व्यापारी बैंकिंग में अग्रणी हो गये।

हैदराबाद के नवाब के खजाने को मारवाड़ी संभालते थे, जो समय-समय पर न केवल राज्य की आर्थिक सहायता करते थे अपितु पित्ती तथा गनेड़ीवाल जैसे मारवाड़ी तो कर-निर्धारण का कार्य भी करते थे, जिसमें राजा गोविन्ददास पित्ती का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा था। श्रीचंद हैदराबाद के जाने-माने बैंकर थे, जिनकी फर्म श्रीचंद रघुनाथदास की कई शाखाएं थीं। हैदराबाद रियासत में सन् 1873 के बाद अधिकतर बैंकर मारवाड़ी हो गये थे, जिनमें से कई अंग्रेजों के बैंकर भी थे। मिर्जामल पोद्दार ने पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह को आवश्यकता पड़ने पर बहुत बार ऋण दिया था। रीयांवाले सेठ तथा बंसीलाल अबीरचंद पंजाब के कई जिलों में अंग्रेजों के लिए खजांचियों का काम करते थे। रायबहादुर रामचन्द्र मंत्री ने तिब्बत के यांगतुंग और ग्यान्सी में अपने व्यापार के साथ ब्रिटिश ट्रेड एजेंसी के बैंकर के रूप में कार्य किया था। जबलपुर के सेठ गोकुलदास मध्य प्रांत के सबसे धनवान बैंकर थे। मारवाड़ी बैंकर उत्तर भारत के लगभग प्रत्येक शहर में अपना प्रभुत्व स्थापित कर चुके थे। इन्दौर के प्रमुख बैंकरों में सरूपचंद हुकमचंद अग्रणी थे तो महाराष्ट्र में बंसीलाल अबीरचंद सबसे बड़े बैंकर के रूप में जाने जाते थे। नागपुर में तो बैंकिंग का संपूर्ण कारोबार ही मारवाड़ियों के हाथों में था।

बैंकिंग में अग्रणी

जयपुर के प्रमुख बैंकर्स की संपत्ति सन् 1879 में सात मिलियन स्टर्लिंग पौंड थी तथा बीकानेर के बैंकरों की संपत्ति सन् 1930 में साढ़े पांच करोड़ रुपयों की थी। अजमेर तो बैंकिंग का अखिल भारतीय केन्द्र बन चुका था। मारवाड़ियों ने इस प्रकार संपूर्ण भारत में व्यापार तथा बैंकिंग में प्रमुख भूमिका निभाई। पं. जवाहरलाल नेहरू ने *द डिस्कवरी ऑफ इंडिया* में लिखा है कि राजपूताना के मारवाड़ी आंतरिक व्यापार व वित्त पर आधिपत्य रखते थे तथा भारत के सभी महत्त्वपूर्ण स्थानों पर पाए जाते थे। वे बड़े पूंजीपति होने के साथ-साथ छोटे ग्राम साहूकार भी थे। किसी भी जाने-माने मारवाड़ी की जारी की हुई हुंडी की भारत में ही नहीं अपितु विदेशों तक में साख थी। अभी भी भारत में मारवाड़ी बड़ी मात्रा में पूंजी का निवेश करते हैं, परन्तु अब उन्होंने औद्योगिक पूंजी-निवेश को भी अपना लिया है। कलकत्ता के बड़ा बाजार का मनी मार्केट मारवाड़ी व्यापारियों द्वारा संचालित होता है। यहां की प्रमुख बैंकिंग फर्में ताराचंद घनश्यामदास, बंसीलाल अबीरचंद, सदासुख गम्भीरचंद, हरसुखदास, जौहरीमल रामलाल, दौलतराम किशनदास, हजारीमल सागरमल, सेवाराम कालूराम, लक्ष्मीचंद राधाकृष्ण, चैनरूप संपतराम, सेवाराम खुशालचंद, हरमुखराम रामचन्द्र, गोपालदास मनोहरदास, रामलाल बिहारीलाल शाह, बालकिशनदास रामकिशन बागड़ी, रामप्रसाद सरजूप्रसाद और डागा प्रसिद्ध थीं। बड़ा बाजार के इन मारवाड़ी व्यापारियों के बैंकिंग का कार्य बिहार, बंगाल तथा असम तक विस्तीर्ण था।

मारवाड़ियों ने बैंकिंग कारोबार परंपरागत तरीके के साथ अंग्रेजी पद्धति के आधार पर भी किया। रघुनाथमल प्रथम बैंकर थे, जिन्होंने अपने बैंकिंग व्यवसाय का संचालन अंग्रेजी पद्धति से किया। मारवाड़ी व्यापारियों ने सुगम वित्तीय व्यवस्था के लिए आधुनिक बैंकों की स्थापना की। ओंकारमल सर्राफ ने बलदेवदास दूधवेवाला के साथ प्रथम भारतीय मारवाड़ी बैंक स्थापित किया। इसके बाद तो बैंकों की स्थापना का क्रम प्रारंभ हो गया। रामनारायण रुइया का बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। बंसीलाल अबीरचंद ने नागपुर बैंक की स्थापना की। बालमुकुंद लोया के पुत्र चतुर्भुज ने भी दो करोड़ रुपये की पूंजी से एक बैंक स्थापित किया। कलकत्ता में कलकत्ता इंडस्ट्रियल बैंक और करनानी इंडस्ट्रियल बैंक तथा बम्बई में यूनियन बैंक मारवाड़ी व्यापारियों ने स्थापित किये। बिड़लाओं ने

जगत सेठ फतेहचंद तथा गुलाबचंद। जगत सेठों को 'राजा' के रूप में जाना जाता था। ईस्ट इंडिया कंपनी नवाब से सम्बन्धित सभी मामलों में जगत सेठ फतेहचंद से परामर्श किया करती थी। कंपनी उनसे ऋण भी लेती रहती थी, जो एक बार उन्हें ही भारी मात्रा में चाँदी बेचकर चुकाया गया था। कहा तो यह तक जाता है कि फतेहचंद उस समय विश्व के सबसे धनाढ्य व्यक्ति थे तथा जगत सेठों का कारोबार बैंक ऑफ इंग्लैंड के बराबर था। वह राज्य की नीतियों के निर्धारण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। उन्हें ब्रिटिश अधिकारियों, राजाओं व नवाबों से बहुत-से विशेषाधिकार प्राप्त थे।

अध्याय

3

स्वतंत्रता आंदोलन के अविस्मरणीय प्रणेता

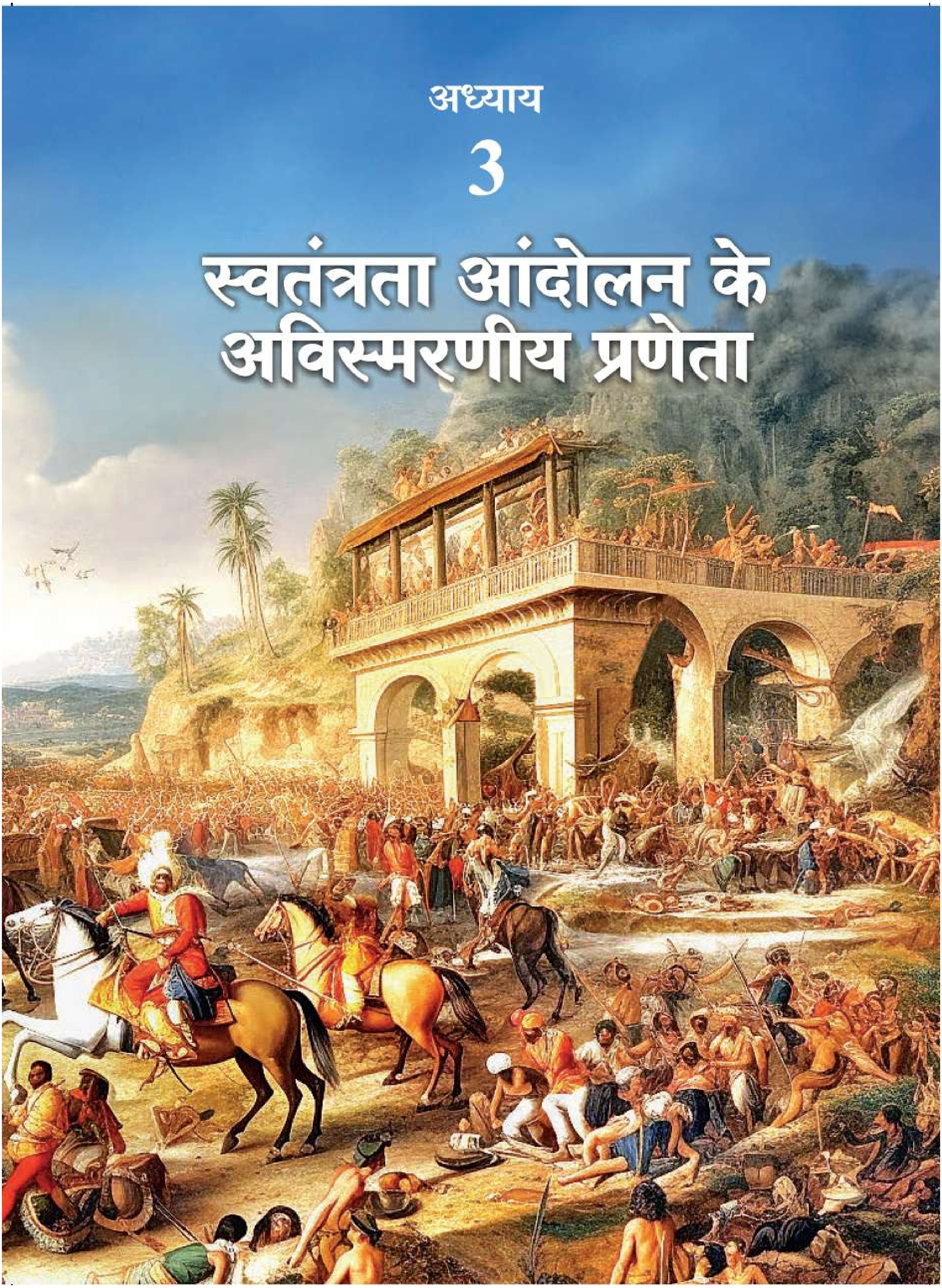

मारवाड़ी समाज के बारे में सामान्य धारणा भले ही कुछ भी हो, परन्तु सत्य तो यह है कि उनका जीवन कारोबार तक ही सीमित नहीं रहा। यदि हम इतिहास में झांककर देखें तो पता चलता है कि राज-काज और राजनीति में भी उनका व्यापक योगदान रहा है। राजपूताना में वे युद्धों और क्रांतियों में बढ़-चढ़कर भाग लेते रहते थे। कितने ही मुगल बादशाह ऐसे थे जिनके दरबार में मारवाड़ी मंत्रियों और सलाहकारों की अहम भूमिका थी। यही स्थिति मराठा शासकों का था। मारवाड़ी शाही दरबार में जितने लोकप्रिय थे, उतने ही आम जनता में भी।

पिछला डबल स्प्रेड: सन् 1857 का विद्रोह, जिसे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रथम युद्ध के रूप में भी जाना जाता है। यह 10 मई, 1857 को मेरठ शहर में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के सिपाहियों (भारतीय सैनिकों) के विद्रोह के रूप में प्रारंभ होकर शीघ्र ही भारत के अन्य भागों में फैल गया। इसमें देशी शासकों और हजारों आम लोगों के साथ-साथ अनेकानेक मारवाड़ी भी सम्मिलित हुए। विद्रोह ब्रिटिश शासन के प्रति भारतीयों के अनेक वर्षों के आक्रोश का परिणाम था। इससे भारतीय उपमहाद्वीप पर काबिज ब्रिटिश औपनिवेशिक शक्ति की जड़ें हिल गई थीं। इसी को दर्शाती एक सुंदर पेंटिंग।

पराक्रम और प्रशासनिक कौशल

मारवाड़ियों में जन्मजात जुझारूपन होता है। जैसाकि पूर्व में उल्लेख किया जा चुका है कि कर्नल जेम्स टॉड ने अग्रवाल, माहेश्वरी, ओसवाल, खंडेलवाल और पोरवाल उपजातियों की उत्पत्ति को क्षत्रियों की योद्धा जाति से जोड़ा है। वैश्य न केवल श्रेष्ठ नेता सिद्ध होते थे, अपितु वे युद्धक्षेत्र में भी अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए क्षत्रियों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर लड़ते थे। ऐसे कुछ ऐतिहासिक वैश्य योद्धाओं में गुप्त वंश के महाराजा अग्रसेन के अतिरिक्त सम्राट हर्षवर्धन, पटियाला नरेश नानूमल अग्रवाल व मुगल काल के हेमू वैश्य शामिल हैं। अन्य महत्त्वपूर्ण नामों में भामाशाह, मधुशाह व राजा रतनचंद खजांची का नाम उल्लेखनीय है। दिल्ली व मेरठ के कानूनगो वैश्य घराने अपने तोपखाने के साथ-साथ अपने शौर्य व पराक्रम के लिए भी विश्वविख्यात थे।

अनेक वैश्यों ने मुगल दरबारों में दीवान की भूमिका भी निभाई। दीवान राय इन्दरमल ने शाहजहां के दीवान के रूप में अनेक युद्ध जीते, जिससे प्रसन्न होकर शाहजहां ने उन्हें 'राजा' की उपाधि प्रदान की। लाला राजाराम, राय पटनीमल और रामप्रताप मुगल काल के कुछ अन्य प्रसिद्ध दीवान थे। हैदराबाद की सल्तनत के निजाम सलावतजंग ने सेठ रघुनाथदास को अपना दीवान नियुक्त किया था। इसी प्रकार मराठा शासकों ने भी कई वैश्यों को अपने सलाहकार के रूप में नियुक्त किया हुआ था। जब मराठा सेना राजपूताना पर आक्रमण करने के बाद मेवाड़ पहुंची थी तो स्थानीय व्यापारियों ने ही पहल करते हुए होल्कर की सेना से संपर्क स्थापित किया था। नागपुर के गंगाराम कोठारी ने होल्कर की सेना में भर्ती होकर अनेक युद्धों में अपने शौर्य का परिचय दिया था। भवानीमल कोठारी ने भी होल्कर के प्रशासन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, तत्पश्चात् रामपुर परगना के प्रशासक का उत्तरदायित्व संभाला। उनके वंशजों ने भी राजनीतिक और प्रशासनिक सूझबूझ का परिचय दिया था। आम जनता के साथ समन्वय स्थापित करने की कला में वैश्य सबसे आगे रहे। व्यापारियों व उनके काफिलों के साथ सतत संपर्क में रहने के कारण उन्हें प्रत्येक क्षेत्र की ताजा घटनाओं की जानकारी रहती थी। इससे उन्हें सही राजनीतिक व प्रशासनिक निर्णय लेने में सहायता मिलती थी।

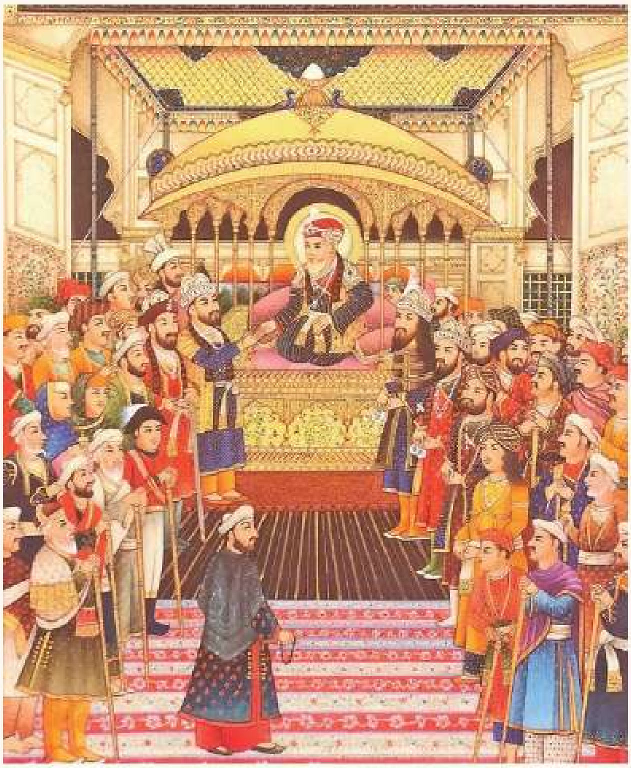

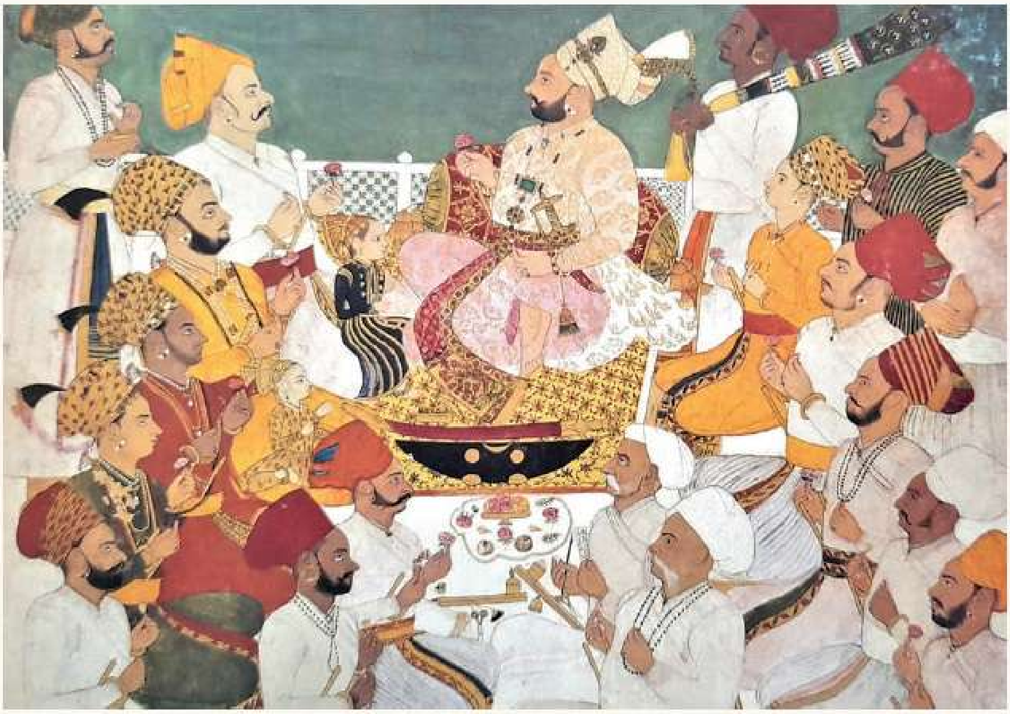

अनूठी सूझबूझ

राजपूताना के सभी राजा-महाराजा वैश्यों का अत्यधिक सम्मान करते थे एवं उनके परामर्श को विशेष महत्त्व देते थे। जब सन् 1638 में शाह शुजा को सूबेदार के रूप में दिल्ली से बंगाल जाना पड़ा तो वह अपने मित्र एवं धनी व्यापारी सेठ बालकृष्ण अग्रवाल को भी अपने साथ ले गये। सन् 1660 के आस-पास राजपूताना के बहुत-से व्यापारी पटना में जा बसे। इनमें सेठ चुहड़मल सबसे प्रमुख थे, जिन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रशासक जॉब चार्नेक के साथ भी व्यापार किया था, जिसने अपनी डायरी में लिखा था कि राजपूताना के लोग कुशल एवं ईमानदार व्यापारी हैं। कैप्टन ब्रुक चार्ल्स ने सन् 1841 में अपने एक यात्रा-वृत्तांत में लिखा था कि मारवाड़ के वैश्य जितने सफल व्यापारी थे, उतने ही कुशल सेनापति भी थे। राज्य के दीवान के रूप में तो वे अपनी अनूठी सूझबूझ का परिचय देते ही थे। साथ ही, व्यापार में तो उन्होंने जर्मनी, फ्रांस तथा ब्रिटेन के व्यापारियों को बहुत पीछे छोड़ दिया था।

सन् 1820 से 1870 के बीच जोधपुर का प्रशासन कई दीवानों के अधीन रहा। इनमें फतेहराज, गम्भीरमल सिंघवी, लक्ष्मीचंद मेहता, इन्दरमल व सुखराज सिंघवी शामिल थे। शेरसिंह मेहता तथा रामसिंह मेहता सन् 1821 व 1861 में उदयपुर रियासत के दीवान रहे। सन् 1880 में नथमल गोलेछा को जयपुर रियासत का दीवान नियुक्त किया गया। जोधपुर के महाराजा ने भी विजयसिंह मेहता को अपनी सलाहकार समिति का प्रमुख नियुक्त किया था। सन् 1898 में प्रतापगढ़ के महारावल रघुनाथ सिंह के आग्रह पर सेठ सोभागमल ढड्ढा ने रियासत के खजांची का पद संभाला था। इस बीच भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ भारतीय राजनीति एक नूतन युग में प्रवेश कर चुकी थी।

गोपालदास मेहता के पूर्वजों ने अनेक अवसरों पर बीकानेर के प्रशासन की बागडोर संभाली जिन्हें पुरस्कारस्वरूप कई जागीरें और अन्य विशेषाधिकार दिये गये थे। बीकानेर के महाराजा रतन सिंह ने रियासत के प्रमुख मामलों में सलाह लेने के लिए हिन्दूमल मेहता को अपना मुख्यमंत्री नियुक्त किया था। व्यापार के साथ-साथ प्रशासन और राजनीति की गहन समझ के कारण मारवाड़ियों को समाज में एक विशिष्ट दर्जा मिल गया था। यहां अमेरिका के सुप्रसिद्ध राष्ट्रपति जॉन एफ. कैनेडी के शब्दों को याद करना अप्रासंगिक नहीं होगा, जिन्होंने कहा था, ''नेतृत्व तथा ज्ञान को एक-दूसरे से पृथक् नहीं किया जा सकता।'' जीवन की चुनौतियों से मिलने वाली प्रत्येक शिक्षा को अपने जीवन में आत्मसात करने के कारण ही मारवाड़ियों ने न केवल व्यापार अपितु समाज व राजनीति के साथ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ी। वर्तमान युवा पीढ़ी भी अपने पूर्वजों के पदचिह्नों पर चलते हुए उनकी शिक्षाओं को अंगीकार करके बदलती परिस्थितियों के साथ प्रत्येक चुनौती का सामना करने में सक्षम है।

राष्ट्रीय भावना का उदय

भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का वर्चस्व और प्रभाव बढ़ने लगा तो मारवाड़ी सक्रिय राजनीति को छोड़कर पूर्णत: अपने कारोबार में रुचि लेने लगे। सन् 1772 से 1785 के बीच भारत के पहले गवर्नर जनरल रहे वारेन हेस्टिंग्ज ने मारवाड़ियों की राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाओं को दबाने पर विशेष रूप से बल दिया। तब देश के राजनीतिक परिस्थितियां ठीक नहीं थीं तथा अंग्रेज मराठों के साथ-साथ मैसूर में भी भीषण युद्ध में उलझे हुए थे। हेस्टिंग्ज ने मारवाड़ियों की राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाओं का दमन करने हेतु उनका ध्यान व्यापार एवं कारोबार की ओर मोड़ने की नीति अपनाई। उन्होंने मारवाड़ियों को ब्रिटिश माल को भारत में बेचने का प्रस्ताव दिया, जिसे स्वीकार कर लिया गया। इससे अंग्रेजों को दोहरा लाभ हुआ। एक तरफ जहां मारवाड़ियों की राजनीतिक आकांक्षाएं दब गईं, वहीं ब्रिटिश माल को उनकी कारोबारी कुशलता का लाभ मिल गया और वह लोकप्रिय होने लगे। इसके बाद

ऊपर व सम्मुख पृष्ठ पर नीचे बाएं: राजपूताना के अनेक मारवाड़ी मुगलों के साम्राज्य व राजाओं के दरबार, यहां तक कि उनके अधीन राज्यों में भी विभिन्न सलाहकार तथा मंत्री पदों पर नियुक्त थे। वे सिंहासन के निकट बैठते थे, ताकि सभी महत्त्वपूर्ण विषयों पर उनका परामर्श लिया जा सके। यही नहीं, युद्ध में भाग लेने के साथ-साथ उन्होंने राजनयिक सम्बन्धों को निभाने में भी विशिष्ट भूमिका निभाई।

नीचे दाएं: अहिल्या देवी होल्कर मराठा साम्राज्य के इतिहास-प्रसिद्ध सूबेदार मल्हारराव होल्कर के पुत्र खंडेराव की धर्मपत्नी थीं, जिन्होंने माहेश्वर को राजधानी बनाकर शासन किया। उन्होंने अपने राज्य की सीमाओं के बाहर संपूर्ण भारत में प्रसिद्ध तीर्थों के साथ-साथ अनेक स्थानों पर मन्दिर, घाट, कुओं तथा बावड़ियों का निर्माण करवाया। केवल इतना ही नहीं अपितु काशी-विश्वनाथ में शिवलिंग स्थापित कर भूखों के लिए अन्न तथा प्यासों के लिए प्याऊ की व्यवस्था भी करवाई।

भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रशासक जॉब चार्नेक, जिन्हें कलकत्ता शहर का संस्थापक भी माना जाता है।

अध्याय

4

स्वाधीन भारत में सफलता के नये सोपान

भारत की स्वाधीनता के पश्चात् मारवाड़ियों की उद्यमशीलता अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गई। आज भी मारवाड़ी समाज को उच्चस्तरीय गुणवत्ता, अभिनव उत्पादों, ग्राहक-संतुष्टि तथा सामाजिक दायित्व के निर्वहन के लिए एक-से-एक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त होते रहते हैं। शोध व अनुसंधान तथा अधिकतम निर्यात के मामले में वह अन्य भारतीय उद्योगपतियों को बहुत पीछे छोड़ चुके हैं। देश में सफलता के शिखर पर पहुंचने के बाद अब वे अंतरराष्ट्रीय बाजारों में धाक जमाने की धुन में हैं। उन्होंने न केवल अमेरिका, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, जर्मनी और जापान जैसे विकसित देशों के बाजारों में अपनी एक विशिष्ट पहचान बना ली है, अपितु वे केन्या, युगांडा, अफगानिस्तान, इंडोनेशिया और तंजानिया जैसे विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। बहुत-से देशों की सरकारें समय-समय पर उन्हें अपने देश में आमंत्रित करके उनका परामर्श लेती हैं और वहां के आर्थिक विकास में उनके सक्रिय सहयोग के लिए उत्सुक रहती हैं। आज समाज के अनेक अग्रणी उद्योगपति भिन्न-भिन्न देशों के प्रतिनिधियों के रूप में महती भूमिका निभा रहे हैं, जिन्हें उन देशों के सर्वोच्च पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है।

विदेशी कंपनियों का अधिग्रहण

सन् 1947 में भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् मारवाड़ियों ने कारोबार के क्षेत्र में अंग्रेजों द्वारा रिक्त किये स्थान को सफलतापूर्वक भर दिया। दरअसल यह प्रक्रिया कुछ वर्ष पहले ही आरंभ हो गई थी। सन् 1942 में ही यह स्पष्ट होने लगा था कि अंग्रेज देर-सवेर भारत से जाने वाले हैं। एक अनिश्चित भविष्य और साथ ही द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद (सन् 1945) आई आर्थिक मंदी ने अधिकांश ब्रिटिश व्यापारियों को यह सोचने पर विवश कर दिया था कि उन्हें भारत में स्थित अपनी फर्मों से छुटकारा पा लेना चाहिए। इस अवसर पर मारवाड़ी आगे आये तथा एक के बाद एक विदेशी फर्मों को खरीदने लगे। डालमिया समूह ने प्रसिद्ध समाचार-पत्र *टाइम्स ऑफ इंडिया* प्रकाशित करने वाली बेनेट कोलमैन एंड कंपनी के साथ-साथ गोवन ब्रदर्स तथा सूरजमल नागरमल ने डेवनपोर्ट और मैक्लियॉड जैसी जानी-मानी कंपनियों को खरीद लिया। बांगड़ घराने ने कैटलवेल बुलेन, कानोड़िया ने एंडरसन् रायटर व बद्रीदास गोयनका ने एक्टेवियस स्टील एवं डंकन ब्रदर्स जैसी विख्यात कंपनियों का नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया।

पिछला डबल स्प्रेड : मारवाड़ियों की औद्योगिक साहसिकता विश्वविख्यात है। विश्वस्तरीय नवीनतम तकनीक पर आधारित अनेक औद्योगिक इकाइयों की स्थापना का श्रेय इसी समाज को है। देश के औद्योगिक क्षेत्र में तो इन्होंने नवीन कीर्तिमान स्थापित किये ही, साथ ही परंपरागत उद्योगों से परिष्कृत उद्योगों में प्रवेश करके विदेशी बाजारों में भी अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

एफ. एंड सी. ओसलर लिमिटेड, ओसलर इलैक्ट्रिक लैम्प, रिचर्डसन् क्रूडास लिमिटेड, जेसोप एंड कंपनी लिमिटेड, टर्नर मॉरिसन् एंड कंपनी लिमिटेड एवं ब्रिटिश इंडिया कॉर्पोरेशन लिमिटेड जैसी बहुत-सी कंपनियां हरिदास मूंदड़ा द्वारा खरीद ली गईं। रायबहादुर रामेश्वरदास बागला ने इंडिया यूनाइटेड मिल, सर विक्टर ससून से खरीद ली तो नागरमल मदनगोपाल ने एंडरसन् लिमिटेड को खरीद लिया। जयपुरिया घराने ने स्वदेशी कॉटन मिल खरीद ली तो रामकृष्ण डालमिया ने न्यू सेन्ट्रल मिल, एंड्रयू यूल से खरीद ली। इसी तरह केशवदेव पोद्दार ने भी एक विदेशी कॉटन मिल खरीद ली। इस तरह से मारवाड़ी उद्योगों का तेजी से विस्तार होने लगा। उल्लेखनीय है कि सन् 1931 में मारवाड़ियों के हाथ में मात्र कुछ ही फर्में थीं, किन्तु सन् 1951 तक उनका अधिकार कुल फर्मों के एक प्रमुख भाग पर हो गया था। साथ ही कंपनियों में मारवाड़ी निदेशकों की संख्या जो पहले मात्र पांच प्रतिशत थी, बढ़कर लगभग पचास प्रतिशत हो गई थी। स्थिति यह थी कि सन् 1952 तक छियासठ यूरोपीय मिलें मारवाड़ियों के हाथों में आ चुकी थीं।

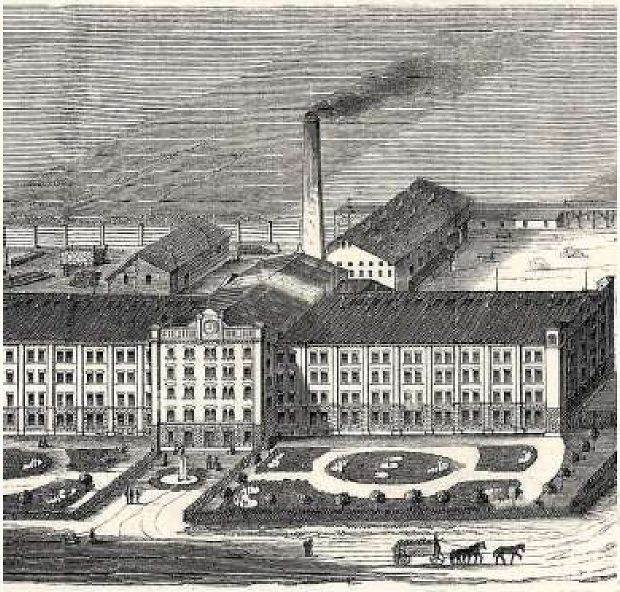

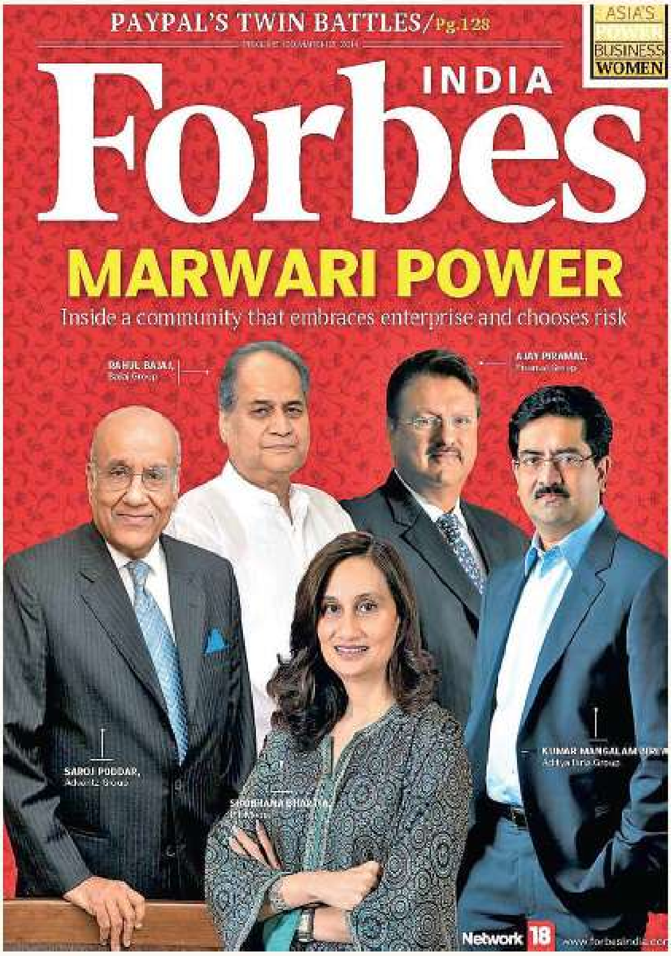

ऊपर बाएं व दाएं, मध्य व नीचे: प्रतिष्ठित पत्रिका *फॉर्ब्स* के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित शीर्षस्थ मारवाड़ियों की तस्वीरें तथा मारवाड़ियों द्वारा अर्जित किये गये विभिन्न पुरस्कार।

सम्मुख पृष्ठ पर बाएं: प्रतिष्ठित समाचार-पत्र समूह *टाइम्स ऑफ इंडिया* के मुम्बई स्थित भवन का एक दुर्लभ रंगीन चित्र।

सम्मुख पृष्ठ पर दाएं: पुरानी कपड़ा मिल का एक रेखाचित्र। उल्लेखनीय है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद सन् 1945 में आई आर्थिक मंदी ने ब्रिटिश व्यापारियों को यह सोचने पर विवश कर दिया था कि उन्हें भारत में स्थित अपनी फर्मों से छुटकारा पा लेना चाहिए तथा यह भी स्पष्ट होने लगा था कि अंग्रेज देर-सबेर भारत से जाने वाले हैं। अत: मारवाड़ी व्यापारी एक के बाद एक विदेशी फर्मों को खरीदने लगे।

व्यावसायिक साम्राज्य का विस्तार

बिड़ला घराने ने हैदराबाद के निजाम से सरसिल्क और सिरपुर कागज मिलें खरीदकर स्वतंत्रता के बाद अपने व्यावसायिक साम्राज्य का विस्तार आरंभ कर दिया। उनके द्वारा सन् 1947 में स्थापित की गई रेयॉन मिल सन् 1964 तक देश की सबसे प्रमुख मिल बनी रही। उन्होंने ही देश में सर्वप्रथम आधुनिक तकनीक का उपयोग किया। डालमिया घराने ने उड़ीसा में सीमेंट की फैक्ट्री लगाई। बजाज घराने द्वारा बहुत पहले सन् 1931 में हिन्दुस्तान शुगर मिल की स्थापना हुई थी। सन् 1951 में उन्होंने हिन्द लैम्प स्थापित किया। आज के भीलवाड़ा समूह के झुनझुनवाला जूट के कारोबार के बादशाह माने जाते थे, जो लोहे व स्टील के स्क्रैप उद्योग में तीसरे स्थान पर थे। सन् 1948 में सीताराम जीवराजका ने रेडियो रिसीवर्स का आयात करके कलकत्ता में देश की प्रथम रेडियो उत्पादन इकाई लगाई तथा जापान से ट्रांजिस्टर आयात करके उन्होंने देशभर में क्रांति मचा दी।

सन् 1948 से 1951 के बीच रामकृष्ण डालमिया पंजाब नेशनल बैंक, भारत बीमा, लाहौर इलैक्ट्रिक और इंडियन नेशनल एयरवेज जैसे सुप्रसिद्ध संस्थानों के स्वामी बन चुके थे। सन् 1957 में लक्ष्मीपत सिंहानियां ने विश्व की सबसे बड़ी जूट मिल गैंगेज मैन्युफेक्चरिंग कंपनी लिमिटेड को खरीद लिया तथा अमेरिका, यूरोप, आस्ट्रेलिया, जापान व रूस को बड़े पैमाने पर इसके उत्पादों का निर्यात करने लगे। इस दौरान बंगाल का साठ प्रतिशत जूट व्यापार मारवाड़ियों के हाथ में था। इस तरह सन् 1951 में मारवाड़ी इस स्थिति में आ गये थे कि कुल उद्योगों के छठे भाग पर उनका अधिकार हो गया तथा वे विभिन्न कंपनियों में एक-चौथाई निदेशक बन गये। कलकत्ता की आधी औद्योगिक फर्में इनके नियंत्रण में आ गईं।

स्वर्णयुग का प्रारंभ

स्वाधीनता के बाद भारत सरकार ने एक नवीन उद्योग-नीति के अंतर्गत कुछ क्षेत्रों में अंकुश लगा दिये। मारवाड़ियों ने देश के स्वतंत्रता हेतु कांग्रेसी नेताओं के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर योगदान दिया, इसलिए देश के नवीन नीति-निर्धारकों के साथ उनके आत्मीय सम्बन्ध थे। इससे ऋण, विदेशी मुद्रा तथा सरकार के साथ भागीदारी के मामले में उन्हें सरकार से पूर्ण सहयोग मिलता रहा। इस प्रकार सन् 1951 से 1962 तक का समय मारवाड़ी समाज के लिए स्वर्णयुग था। इन वर्षों में मारवाड़ी उद्योगपतियों की संपत्ति तीव्र वृद्धि हुई। सन् 1961 में प्रकाशित अपनी पुस्तक *स्ट्रक्चर ऑफ इंडियन इंडस्ट्रीज* में एम. एम. मेहता ने एक तालिका प्रस्तुत की थी, जिसमें भारत में अनेकों कारोबारी समाजों की प्रगति की गति दर्शाई गई थी। मारवाड़ियों ने जिस तेजी से विभिन्न उद्योगों में अपना वर्चस्व स्थापित किया था, वह चकित कर देने वाला था। स्वतंत्रता के पश्चात् मारवाड़ी उद्योगों में वृहद् स्तर पर पूंजी निवेश करने लगे। जिस प्रकार पहले वह व्यापार के बादशाह बने थे, उसी प्रकार अब वह उद्योग के क्षेत्र में भी अपनी धाक जमाने लगे थे।

अध्याय

5

जनसेवा में सदैव सहभागी

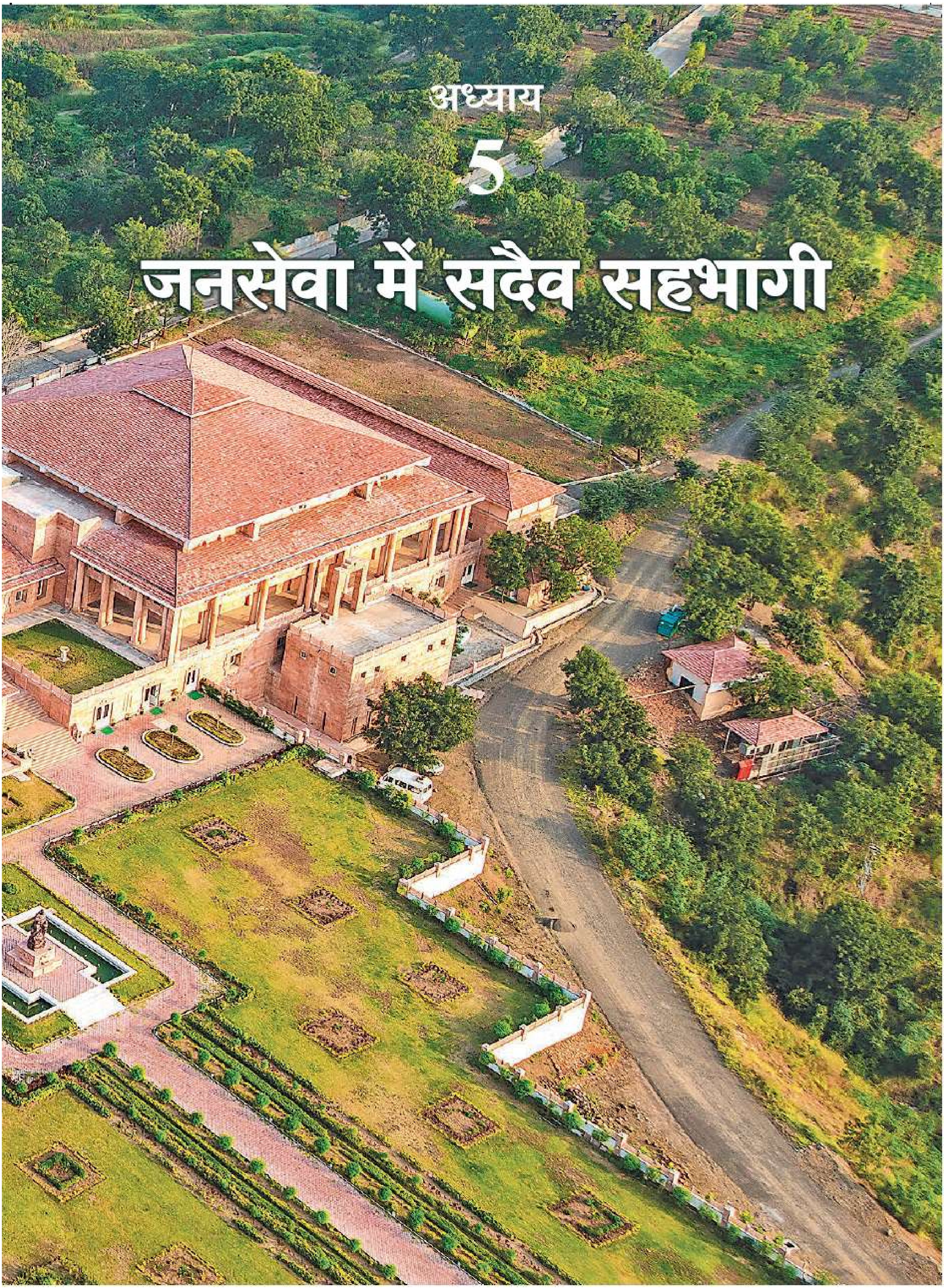

वेदों, *उपनिषदों* एवं *पुराणों* जैसे प्राचीन भारतीय धर्मग्रन्थों में आध्यात्मिक संतुष्टि के लिए दान-पुण्य एवं यज्ञ की महिमा का वर्णन किया गया है। वेदव्यास तथा हरितमुनि जैसे ऋषि-मुनियों ने भी 'सेवा' के महत्त्व पर बल दिया है। *श्रीमद्भगवद्गीता* में यज्ञ एवं दान को लोकसंग्रह या सार्वभौमिक मानव-कल्याण की धारणा से जोड़कर देखा गया है। इसके अनुसार, ''वह दान सर्वश्रेष्ठ है जो बदले में कुछ पाने की भावना के बिना अपना कर्त्तव्य समझते हुए उचित समय पर योग्य व्यक्ति को दिया जाता है।'' *ऋग्वेद* में भी कई जगह दान-पुण्य को मनुष्य के धर्म और कर्त्तव्य के रूप में वर्णित किया गया है। हिन्दू ही नहीं अपितु इस्लाम, सिख, ईसाई, बौद्ध व जैन धर्म में भी इसे जीवन-पद्धति का एक अभिन्न अंग माना गया है। यह एक सदाचारी मनुष्य का स्वाभाविक गुण होता है, जो उसके सत्कर्मों तथा समाज सेवा के कार्यों से उसके जुड़ाव को दर्शाता है।

दान की महिमा

गोस्वामी तुलसीदास ने दान की महिमा के सम्बन्ध में लिखा है, ''तुलसी कर पर कर धरो, करतर कर न धरो। जा दिन करतर कर धरो, ता दिन मरण भलो।'' इसका तात्पर्य यही है कि यदि जीवन में दान नहीं किया तो जीवन व्यर्थ है। दान नहीं देने वाले की सामाजिक मर्यादा भी नहीं होती है। धन के दान को ही संसार में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। शुद्ध अंत:करण से सुपात्र को थोड़ा दान दिया जाना अनंत सुखदायी एवं फलदायी होता है अन्यथा जीवन सार्थक नहीं माना जाता। कोई भी व्यक्ति धन-वैभव से बड़ा नहीं होता, अपितु बड़ा होता है अपने कर्मों व दान से, जिसकी चर्चा सदैव होती रहती है। धनी लोगों को बहुत कम याद रखा जाता है, परन्तु दानी व्यक्तियों के सुकृत्यों की चर्चा सदैव बनी रहती है, जिसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण भामाशाह व तेजपाल हैं। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा है, ''दान जगत का पुण्य-कर्म है, मनुज व्यर्थ डरता है। एक दिन तो उसे स्वयं सबकुछ त्यागना पड़ता है।''

प्रसिद्ध दार्शनिक कौटिल्य द्वारा रचित *अर्थशास्त्र* में व्यापार करने के नैतिक तरीके सुझाए गये हैं। प्राचीन धर्मग्रन्थों तथा पारिवारिक परंपराओं से प्राप्त सेवा-भावना की शिक्षा को अधिकांश हिन्दू पूर्ण निष्ठा के साथ निभाते हुए अपनी सामर्थ्य के अनुसार निर्धनों की सहायता करते रहे हैं। परोपकार को सदा से ही मनुष्य के धार्मिक कर्त्तव्यों से जोड़कर देखा जाता रहा है। हिन्दू धर्म में दान-दक्षिणा की धारणा हो या बौद्ध धर्म में भिक्षा की धारणा, ये मूल रूप से परोपकार की भावना से ही जुड़ी हुई है। दान का अर्थ है नि:स्वार्थ भाव से निर्धनों तथा जरूरतमंदों की सहायता करना।

अपनी धन-संपत्ति का एक अंश समाज-हित के लिए व्यय करना कोई आधुनिक और विदेशी विचार नहीं है। श्रद्धा, संवेदनशीलता तथा उदारतापूर्वक दान करना प्राचीन काल से भारतीय जनमानस का परिचायक रहा है। तमिल कवि तिरुवल्लुवर के अनुसार, ''वह धन और विद्या व्यर्थ है जो किसी के काम न आये।'' इसका प्रमाण देश के वे सब मन्दिर हैं, जहां दीन-दु:खियों और लाचारों के प्रति सहानुभूति तथा परोपकार की भावना को प्रोत्साहन दिया जाता रहा है। *ईशावास्योपनिषद* में धन-संपत्ति से विरक्ति को सच्चे सुख, शांति और आनंद का माध्यम कहा गया है। हिन्दू दर्शन के अनुसार दान से चार लक्ष्य सिद्ध होते हैं - पुण्य, प्रायश्चित, अपरिग्रह एवं करुणा। पहले दो लक्ष्य सत्कार्य एवं तपस्या के प्रतीक हैं और मनुष्य के अपने हित में हैं, जबकि शेष दो लक्ष्य अन्यों के प्रति अपने कर्त्तव्य को निभाने के द्योतक हैं।

नीचे: चार वेद अर्थात् *ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद* तथा *अथर्ववेद* प्राचीन भारतीय धर्मग्रन्थों का एक विशाल समूह हैं, जो मुख्य रूप से वैदिक संस्कृत भाषा में हैं। ये हिन्दू धर्म के प्राचीनतम धर्मग्रन्थ हैं तथा इनकी रचना का श्रेय ब्रह्माजी को दिया जाता है। दान तथा यज्ञ वेदों का अभिन्न अंग हैं, जिनका पुरातन काल में वैश्यों द्वारा विधि-विधान से पालन किया जाता था।

पिछला डबल स्प्रेड: जैन हिल्स, जलगांव (महाराष्ट्र) में गांधी रिसर्च फाउंडेशन का हवाई दृश्य। इस गांधी तीर्थ का उद्देश्य महात्मा गांधी के जीवन, दृष्टिकोण, दर्शन तथा कार्यों की गहन विरासत को भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित करना है। इस फाउंडेशन को जैन इरिगेशन सिस्टम्स लिमिटेड तथा भंवरलाल तथा कांताबाई जैन मल्टीपर्पज फाउंडेशन द्वारा संचालित किया जाता है। गांधी तीर्थ एक भव्य पैंसठ हजार वर्ग फुट की संरचना है, जो आम के उद्यानों से सटे विशाल लॉन तथा बैठने का स्थान एवं शांत मार्गों के साथ सुंदर परिदृश्य के मध्य स्थित है। गांधी तीर्थ का अपना आधुनिक उच्चतम तकनीक युक्त अभिलेखागार तथा पुस्तकालय है।

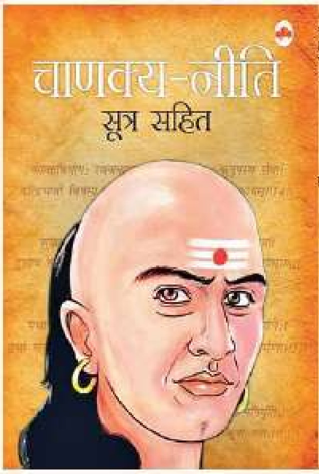

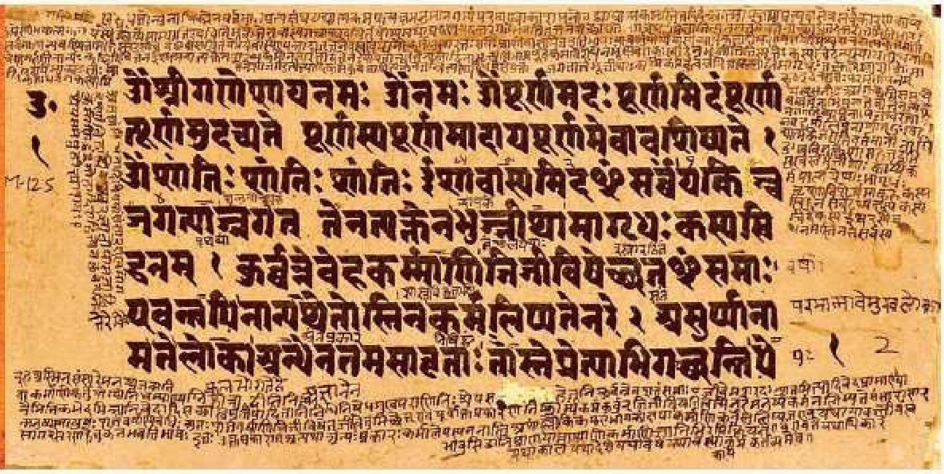

दानवीरता के अग्रदूत

दानवीरता की भावना राजपूताना के वैश्यों का एक जन्मजात गुण रहा है, वह चाहे अग्रवाल, ओसवाल, पोरवाल, खंडेलवाल या माहेश्वरी हों अथवा अन्य कोई। उनकी मान्यता है कि सज्जन मनुष्य बादलों की भांति होते हैं, जो समुद्र से जल ग्रहण कर वर्षा के रूप में पुन: बरसा देते हैं। इस अंचल में 'अतिथि देवो भव:' की भावना घर-घर में देखी जा सकती है। वेदों की एक अन्य सूक्ति भी इस अंचल की विरासत में रची-बसी हुई है, ''सौ हाथों से कमाओ एवं हजार हाथों से बांटो।'' वैश्यों के जीवन-दर्शन को इन शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है, ''कमाओ और दूसरों को दो; क्योंकि केवल अपने लिए कमाने से बड़ा पाप कुछ नहीं हो सकता। जो दूसरों की सहायता नहीं कर सकता, उस व्यक्ति का जीवन व्यर्थ है। यदि धन दूसरों का दु:ख दूर न कर सके तो यह व्यर्थ है।''

महाराजा अग्रसेन को सही अर्थों में राज्य के परोकारी शासक के रूप में स्मरण किया जाता है। उन्होंने ही मारवाड़ियों की एक उपजाति 'अग्रवाल' की नींव रखी। वह पांच हजार वर्ष पूर्व अग्रोहा के महाराजा थे, जो वर्तमान हरियाणा राज्य के हिसार जिले के निकट स्थित था। महाराजा का यह विशेष निर्देश था कि जो भी नव प्रवासी शहर में बसने के लिए आये उसे प्रत्येक घर से एक रुपया व एक ईंट दी जाए, ताकि वह अपना कारोबार आरंभ करने के साथ आवास निर्माण कर सके। महाराजा स्वयं भी उसे पर्याप्त धनराशि प्रदान करते थे। वह विज्ञान, कला, साहित्य व धर्म को भी अत्यधिक प्रोत्साहन देते थे। ऐसी मान्यता है कि सम्राट अकबर के दो मंत्री टोडरमल व मधुशाह भी अग्रवाल थे। टोडरमल को भू-राजस्व की गणना-प्रणाली विकसित करने और जनकल्याण के अनेक कार्यक्रम आरंभ करने का श्रेय प्राप्त है, तो मधुशाह को 'मधुशाही' मुद्रा-प्रणाली का आरंभ करने के लिए जाना जाता है।

भव्य मन्दिरों का निर्माण

उस समय वणिकों या सौदागरों की समाज में विशेष भूमिका थी। वे किसानों को ऋण देने से लेकर भूमि के लगान के मूल्यांकन, मुद्रा विनिमय, साहूकारी, दस्तकारों को अग्रिम भुगतान करने के साथ-साथ राजा-महाराजाओं को आवश्यकता पड़ने पर आर्थिक सहायता देने जैसी अनेकानेक गतिविधियों से जुड़े हुए थे। इस कारण उनका अत्यधिक सम्मान किया जाता था। *महाभारत* में उल्लेख है, ''वणिकों की उत्पादन-क्षमता को प्रोत्साहन देना चाहिए। वे कृषि व व्यापार का विकास करके राज्य को शक्तिशाली बनाते हैं।

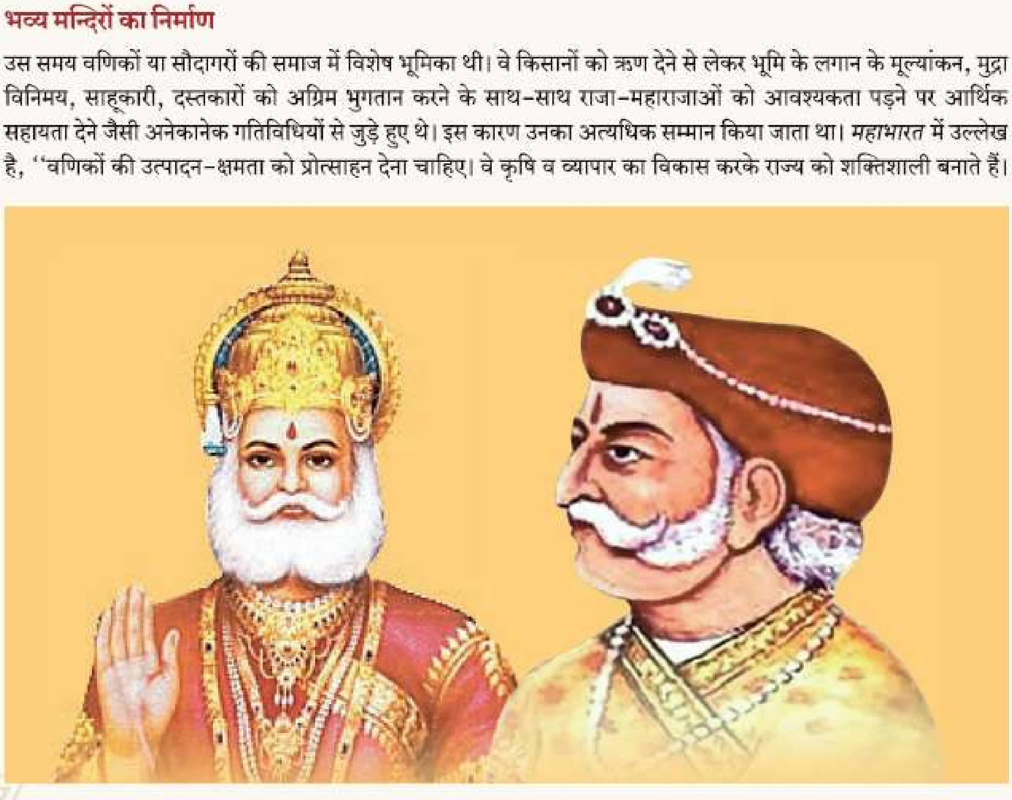

ऊपर बाएं : चाणक्य पंडित को 'कौटिल्य' व 'विष्णुगुप्त' के नाम से भी जाना जाता है। एक ब्राह्मण परिवार में जन्मे चाणक्य ने अपनी शिक्षा तक्षशिला में प्राप्त की थी। *अर्थशास्त्र* उनके द्वारा रचित सुप्रसिद्ध ग्रन्थ है।

ऊपर दाएं : *श्रीमद्भागवतम्* की एक प्राचीन पांडुलिपि, जिसे *भागवत महापुराण* भी कहा जाता है। इसका मूल नाम 'परमहंस संहिता' था। *श्रीमद्भागवतम्* को सभी पुराणों में शुद्धतम् तथा सर्वोच्च माना जाता है क्योंकि इसमें भगवान विष्णु एवं उनके विभिन्न अवतारों की भक्तिवर्द्धक लीलाओं का विस्तृत वर्णन किया गया है।

नीचे बाएं : महाराजा अग्रसेन जो राजा वल्लभ सेन के ज्येष्ठ पुत्र तथा वर्तमान हरियाणा राज्य के हिसार में स्थित अग्रोहा के शासक थे। उन्होंने नियम बनाया कि अग्रोहा में बसने वाले प्रवासी परिवार की सहायतार्थ नगर का प्रत्येक परिवार उसे एक सिक्का व एक ईंट भेंट करेगा, ताकि प्राप्त राशि से वह परिवार अपना व्यापार प्रारंभ करने के साथ-साथ ईंटों से अपने लिए आवास का निर्माण कर सके।

नीचे दाएं: टोडरमल, जिन्होंने अकबर के मुगल साम्राज्य में राजस्व-प्रणाली की नवीन व्यवस्था की थी। उनके जीवन का यह योगदान सराहनीय है।

अध्याय

6

जीवन के विविध क्षेत्रों में सिरमौर

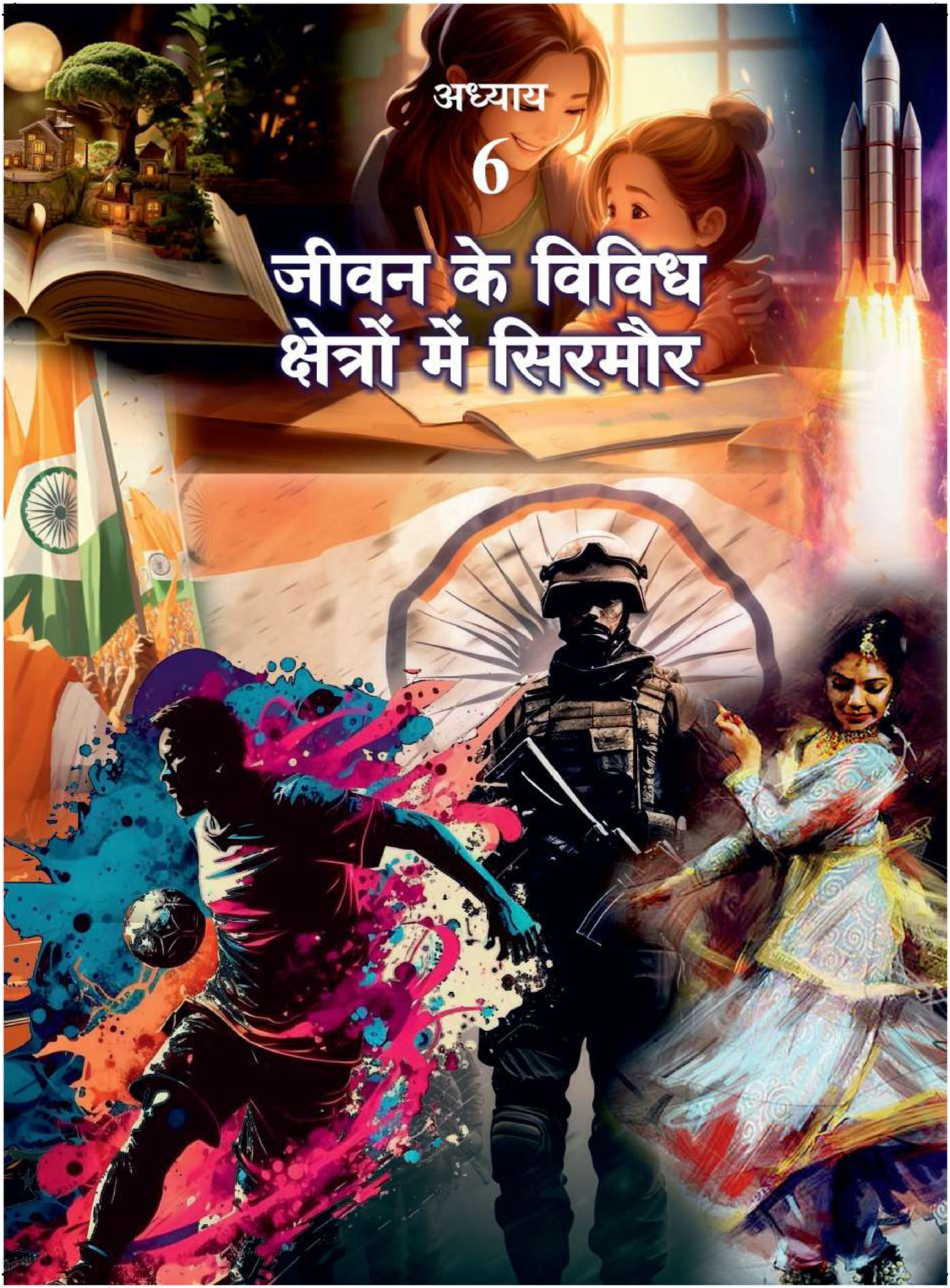

आज मारवाड़ी समाज देश के उद्योग, व्यापार तथा कला-कौशल का प्रेरक प्रतीक बन चुका है। देश के सामाजिक, आर्थिक व स्वतंत्रता आंदोलन में दी गई इसकी असंख्य आहुतियों का इस कॉफी टेबल बुक में समावेश किया गया है। उनकी स्वर्णिम व संघर्षपूर्ण यात्रा में, यहीं विराम नहीं लगा अपितु देश के सुदूर भागों में विस्तीर्ण इस समाज ने अपने कर्म तथा सूझबूझ के बलबूते पर जीवन के विविध क्षेत्रों के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए अपनी अमिट छाप छोड़ी है। इनके द्वारा शिक्षा, कला, साहित्य, विज्ञान, चिकित्सा, राजनीति, खेलकूद, युद्ध आदि क्षेत्रों में दिये गये उल्लेखनीय योगदान के कारण संपूर्ण देश गौरवान्वित हुआ है। इस समाज के आर्थिक योगदान पर तो कुछ देशी-विदेशी विद्वानों ने अध्ययन किया, किन्तु जीवन की अन्य विविध धाराओं में उनके बहुआयामी इतिहास को लिपिबद्ध करने का सार्थक प्रयास अभी तक नहीं हो पाया है।

बहुआयामी योगदान

जीवटता के धनी मारवाड़ियों की जीवनगाथा अत्यंत संघर्षपूर्ण एवं रोमांचकारी रही है। जीवन का कोई भी कर्मक्षेत्र हो, इन लोगों ने मरुभूमि का परचम संपूर्ण विश्व में फहरा कर दिया। विगत तीन दशकों में, लेखक इस समाज की जीवन-यात्रा में आई अनेक नई धाराओं, शिखरों व आयामों का साक्षी रहा। आज इस समाज के लोग न्यायालयों में न्यायाधीश तथा अधिवक्ता, विश्वविद्यालयों में प्राध्यापक, चिकित्सालयों में सर्जन, राजनीति में विचारक, कला केन्द्रों में अभिनेता एवं शोध संस्थाओं में अनुसंधानकर्ता के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। अब बाजार की व्यूह-रचना के साथ ही युद्धक्षेत्र की रणनीति में भी उनका कोई सानी नहीं। मारवाड़ी धार्मिक उपदेशों को केवल सुनते ही नहीं, अपितु उन पर चिन्तन व मनन भी करते हैं। मारवाड़ी साहित्यकारों एवं कला-मर्मज्ञों ने साहित्य, संस्कृति एवं कला को नूतन दिशाएं प्रदान की हैं। वैज्ञानिकों के रूप में उन्होंने अपने नित नवीन प्रयोगों के द्वारा मानव-जीवन को अधिक सुविधाजनक बनाया है। मारवाड़ी शिक्षाशास्त्रियों ने नवीन शोध एवं शिक्षा-विधियों को लागू कर सबको चकित कर दिया है। उन्होंने अर्थशास्त्रियों के रूप में राष्ट्रीय अर्थतंत्र को सुदृढ़ बनाया है। अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में चयनित होकर जनसेवक के रूप में कई मारवाड़ियों की छवि में बहुत निखार आया है, यही नहीं, दर्शनशास्त्र का अध्ययन कर अनेकानेक मारवाड़ी दार्शनिक तक बने हैं। जीवन के विविध क्षेत्रों में मारवाड़ी महिलाएं भी बढ़-चढ़कर भाग ले रही हैं।

ऊपर से नीचे : प्रतिभा देवीसिंह पाटिल, पूर्व राष्ट्रपति; भैरोंसिंह शेखावत, भूतपूर्व उपराष्ट्रपति; भारतरत्न डॉ. भगवानदास; उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़; लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला तथा जैन मुनि आचार्य विद्यासागर।

पिछला डबल स्प्रेड : मारवाड़ी आज के आधुनिक युग में जीवन के विविध क्षेत्रों में अपने बलबूते पर कीर्ति-पताका फहरा रहे हैं, इसी विषय को परिलक्षित करती एक सुंदर कम्प्यूटरीकृत पेंटिंग।

समीर जैन
टाइम्स ऑफ इंडिया

मेजर वी. पी. राजवंशी
वीर चक्र

प्रो. अरविन्द पनगढ़िया
शिक्षाशास्त्री

डॉ. समीन शर्मा
हृदय विशेषज्ञ

आर. पी. सर्राफ
विचारक

आर. एम. लोढ़ा
पूर्व मुख्य न्यायाधीश

लेखा पोद्दार
कला-संग्राहक

डी. आर. मेहता
जयपुर फुट

बी. के. गोयल
कानूनविद्

शिखर अग्रवाल
भारतीय प्रशासनिक सेवा

काजल अग्रवाल
बॉलीवुड अभिनेत्री

महेन्द्र अग्रवाल
कम्प्यूटर वैज्ञानिक

आज इस समाज के युवा विदेशों में उच्चतर शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तथा पीएच.डी. तथा डी.लिट्. की उपाधियों से सम्मानित मारवाड़ियों की कोई कमी नहीं है। विविध प्रकार के पेशों में विशिष्टता रखने के कारण उन्हें राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा रहा है। इस प्रकार वाणिज्य व व्यापार से आरंभ हुई इनकी यात्रा आज जीवन की कितनी ही धाराओं में बह रही है। सुखद आश्चर्य यह है कि जीवन के जिस किसी भी क्षेत्र में मारवाड़ी युवा पहुंचे हैं वहीं उन्होंने अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। कई क्षेत्रों में विश्व कीर्तिमान स्थापित करके उन्होंने सिद्ध कर दिया कि वे न केवल वाणिज्य-व्यापार अपितु जोखिमपूर्ण दुर्गम पर्वतों को भी लांघने का साहस रखते हैं। मारवाड़ी हवाबाजों ने, वायुयान द्वारा दूरगामी यात्राओं का अनूठा विश्व कीर्तिमान स्थापित किया। तराजू की डंडी व मीटर का मापक पकड़ने वाले हाथों ने, युद्धकाल में, बंदूकें थामकर शत्रु के छक्के छुड़ा दिये। कई मारवाड़ियों ने सुदूर पैदल यात्राएं कर संपूर्ण विश्व को नाप डाला।

शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र बचा हो जिसमें इनका योगदान न हो! मारवाड़ी व्यवसाय, शिक्षा, कला, साहित्य, विज्ञान, प्रशासन, चिकित्सा, राजनीति, खेलकूद, युद्ध आदि अनेकानेक क्षेत्रों की अथाह गहराइयों में गोते लगाकर माणिक-मोती निकाल लाए हैं, जिसके कारण मात्र यह समाज ही नहीं, अपितु संपूर्ण राष्ट्र गौरवान्वित हुआ है। देश के कई प्रतिष्ठित शिक्षा-शोध केन्द्रों एवं सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थानों की स्थापना में मारवाड़ी उद्यमियों का धन तथा मारवाड़ी श्रमिकों का पसीना बहा है। इसी समाज के कारीगरों ने अनेक विश्वप्रसिद्ध स्मारकों का निर्माण करते हुए शाश्वत कलाकृतियों का सृजन भी किया। नई दिल्ली की नवनिर्मित लोकसभा का भवन हो या इंडिया गेट या मंत्रालयों के विशाल गगनचुम्बी भवन या मुम्बई का गेटवे ऑफ इंडिया, इन सभी उत्तम शिल्प-कलाओं के निर्माण के पीछे मारवाड़ी कारीगरों का अद्भुत कला-कौशल व श्रमिकों का अथक परिश्रम है। इनमें लगे राजस्थान के पत्थरों तथा कंगूरों पर इन्हीं के पसीने की बूंदें हैं। राजस्थान का पत्थर विश्व की विभिन्न भव्य इमारतों को सुशोभित कर रहा है। आज भी मारवाड़ी पैसे तथा पसीने के बल पर देश-विदेश में अनेक भवनों तथा प्रतिमाओं का अनवरत निर्माण हो रहा है, जो निकट भविष्य में स्थापत्य-कला के उत्कृष्ट नमूने सिद्ध होंगे।

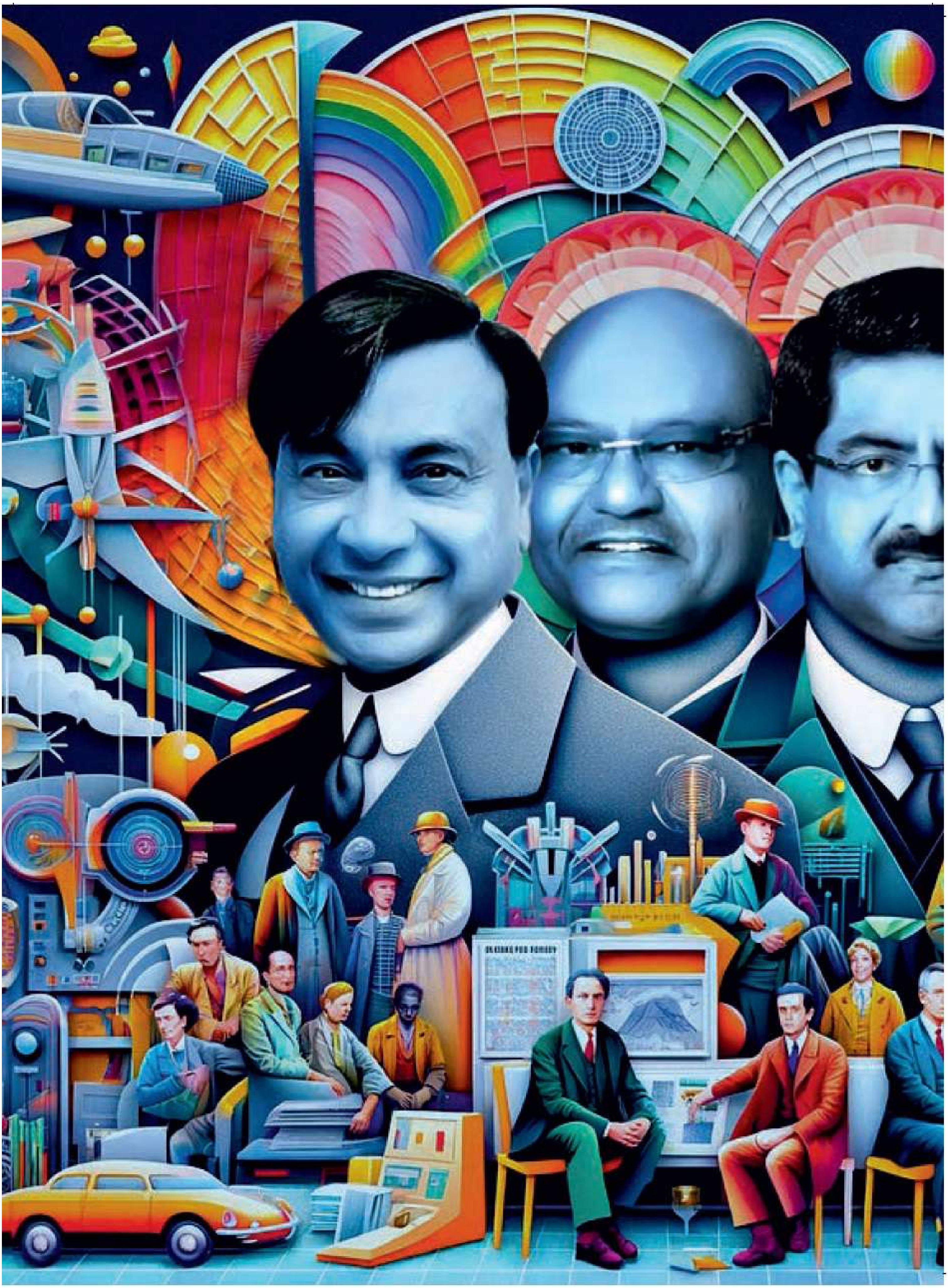

अध्याय

7

आधुनिक परिदृश्य : दूरदृष्टा एवं पथ-प्रदर्शक

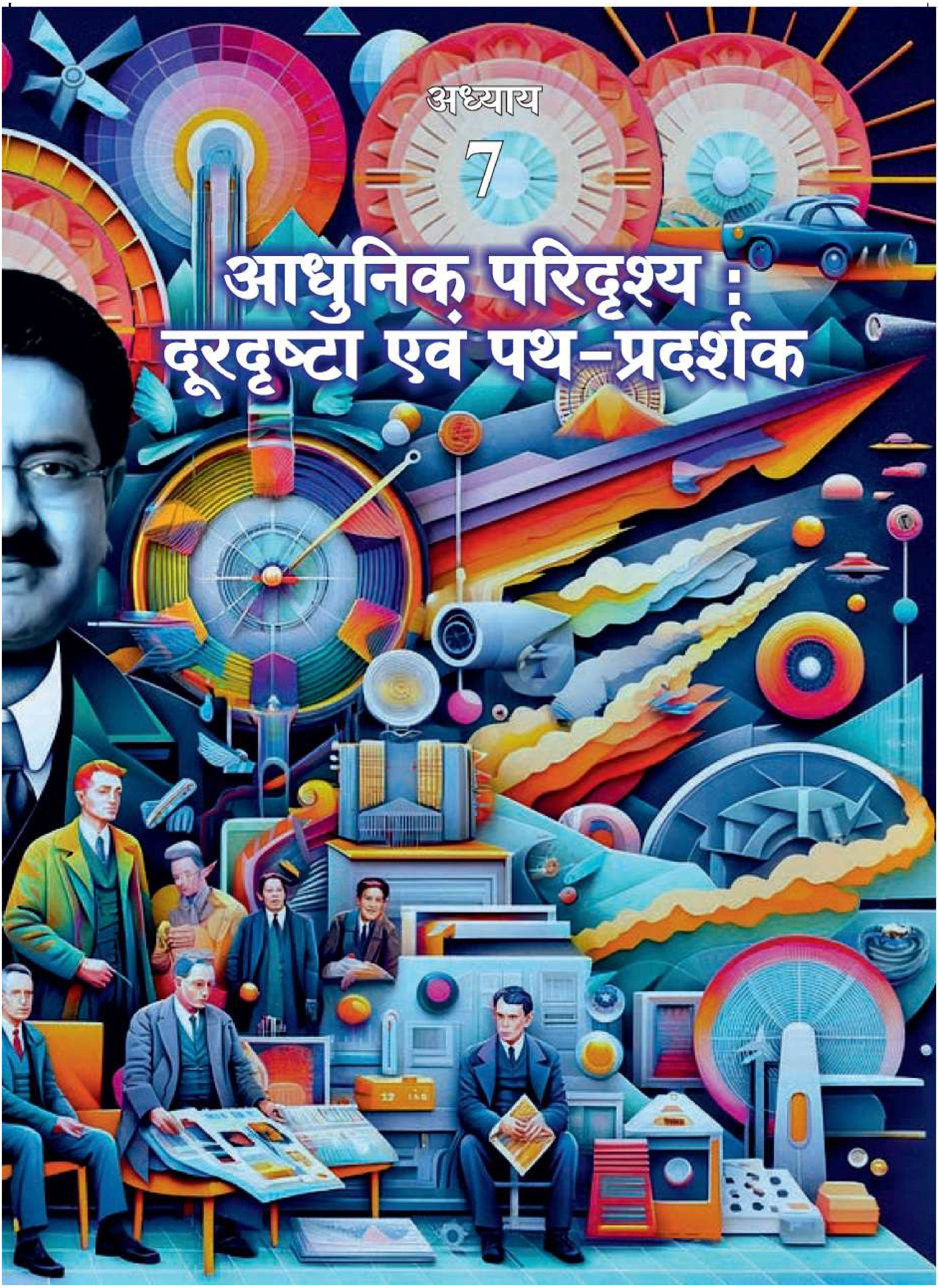

विगत कुछ दशकों में भारत की व्यावसायिक गतिविधियों में आमूल-चूल परिवर्तन हुआ है। पहले से अधिक पेशेवर दृष्टिकोण एवं प्रतिस्पर्धी परिवेश के साथ-साथ अपने सामाजिक योगदान को अधिक अर्थपूर्ण बनाने की आवश्यकता अनुभव होने लगी है। आधुनिक पीढ़ी इस परिवर्तन को स्वीकार करते हुए स्वयं को नूतन परिवेश में ढाल रही है। वह आज भी पूर्व की भांति अपने परिवार का भाग्य चमकाने तथा देश के आर्थिक विकास में अपना योगदान देने में जुटी हुई है। अपनी उच्च शिक्षा व वैश्विक अनुभवों का लाभ उठाते हुए ये नवयुवा आगे बढ़ने की धुन, प्रचुर संसाधनों, घनिष्ठ सामाजिक संपर्कों एवं अनूठी सूझबूझ के बल पर व्यवसाय जगत में एक नया इतिहास रच रहे हैं। सतत उच्च गुणवत्ता, उत्पादकता, शोध एवं विकास, अभिनव प्रयोगों, ग्राहक-संतुष्टि तथा तात्त्विक व मानवीय संसाधनों के अधिकतम उपयोग के साथ-साथ जनकल्याण की धारणा इस नई व्यावसायिक संस्कृति के अभिन्न अंग हैं, जिसमें मारवाड़ी समाज एक पथ-प्रदर्शक की भूमिका निभा रहा है और नवीनतम अवसरों का अधिकतम लाभ उठाते हुए आज राष्ट्रीय सीमाओं को लांघकर वैश्विक मंच पर अपनी पहचान बना रहा है। मार्ग में आने वाली समस्त बाधाओं को पार करते हुए मारवाड़ी गुणवत्ता के नये मापदंड स्थापित कर रहे हैं। कारोबारी और निजी जीवन में उदारीकरण के लाभों को देखते हुए वे इतिहास में अपनी अमिट छाप छोड़ने एवं अपनी क्षमता के नये आयाम स्थापित करने में जुटे हुए हैं। मारवाड़ी समाज के पूर्वजों को भले ही सूचना तकनीक या पेशेवर प्रबंधन से जुड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ा हो, परन्तु उन्होंने सुशिक्षित हितधारकों, उच्च स्तर के प्रभारियों एवं नवीनतम तकनीकी सेवाओं का लाभ उठाने में लेशमात्र भी संकोच नहीं किया और न समय गंवाया। इसलिए वे पहले से भी अधिक बड़े कारोबार स्थापित करने में सफल रहे हैं। इतना ही नहीं, अपने पूर्वजों द्वारा जनकल्याण एवं परोपकार के क्षेत्र में रखी गई ठोस नींव के कारण वे अपने सामाजिक दायित्व को भी भली भांति समझते हैं तथा पूर्ण उत्साह व लगन से देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में हाथ बंटा रहे हैं।

स्टार्टअप्स संस्कृति की धूम

देशभर में स्टार्टअप्स संस्कृति तेजी से विकसित हो रही है तथा राजस्थान इस दौड़ में देश में चौथे पायदान पर पहुंच चुका है तथा लगातार नवाचारों के माध्यम से तीव्रता से आगे बढ़ रहा है। सन् 2018 की राज्य स्टार्टअप्स रैंकिंग में राजस्थान को टॉप परफॉर्मर के रूप में चुना गया था, जो एक विशेष उपलब्धि है। युवाओं के इनोवेटिव आइडिया स्टार्टअप्स के रूप में उड़ान भर रहे हैं। एक-दो नहीं अपितु तीन हजार सात सौ से अधिक स्टार्टअप्स देश-विदेशों में भी अपनी धाक जमा रहे हैं। राज्य के स्टार्टअप्स आईटी क्षेत्र के साथ-साथ चिकित्सा व शिक्षा जैसे सार्वजनिक क्षेत्र में भी अग्रणी हैं। अब तक इस क्षेत्र में लगभग पांच सौ बीस करोड़ रुपयों का निवेश हो चुका है, जिसमें पच्चीस हजार से अधिक रोजगार के नये अवसर सृजित हो चुके हैं।

मारवाड़ी समाज प्रारंभ से ही 'सहयोग एक परंपरा' की धारणा पर अपना कार्य-व्यवसाय करता रहा है। आपसी सहयोग एवं समन्वय से ही उत्तरोत्तर प्रगति की जा सकती है। मारवाड़ी समाज में पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही इसी भावना से प्रेरित एक आकर्षक पेंटिंग।

पिछला डबल स्प्रेड: आज मारवाड़ी देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी अपने उद्योगों का निरंतर विस्तार करते हुए आधुनिकतम तकनीकों के बलबूते पर विश्व के शीर्ष उद्योगपतियों में शामिल हो गये हैं। इसी को दर्शाती एक भव्य पेंटिंग, जिसके मध्य में जाने-माने उद्योगपति एल. एन. मित्तल, अनिल अग्रवाल तथा कुमार मंगलम बिड़ला तथा पार्श्व में विभिन्न औद्योगिक गतिविधियां दिखाई दे रही हैं।

ऊपर : वर्तमान युग स्टार्टअप युग के रूप में जाना जाता है। आज देश के विभिन्न स्टार्टअप अपने नवाचारों तथा व्यवसाय-कौशल के लिए देश के साथ-साथ विदेशों में भी अपना परचम फहरा रहे हैं। इसी शृंखला में राजस्थान में इन्हें प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से मनाए गये राजस्थान आईटी दिवस का एक दृश्य।

शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी युवाओं के विचारों को भरपूर अवसर व वित्तीय सहयोग प्रदान किया जा रहा है। ग्रामीण स्टार्टअप्स आरंभ करने वाला राजस्थान देशभर में दूसरे स्थान पर आता है। युवाओं को स्टार्टअप्स आरंभ करने के लिए स्थान, आर्थिक व मानसिक सहयोग प्रदान किया जा रहा है, जिसमें यहां के राष्ट्रीय स्तर के शैक्षणिक संस्थान प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। युवाओं के साथ-साथ बच्चों में स्टार्टअप्स का गुण विकसित करने के लिए विद्यालयी स्तर पर भी स्टार्टअप्स आरंभ किये गये हैं, जिसमें अब तक तीस हजार से अधिक बच्चे जुड़ चुके हैं। युवाओं का मार्गदर्शन करने व सहयोग करने के लिए सरकार पूर्णत: सक्रिय है और अभी पचास सेक्टर्स में स्टार्टअप्स पर कार्य चल रहा है। आईस्टार्ट राजस्थान कार्यक्रम को नेशनल ई-गवर्नेंस अवार्ड 2019 में एक्सीलेंस इन अडॉप्टिंग इमरजिंग टेक्नोलॉजीज के लिए रजत पदक दिया जा चुका है। राज्य में स्टार्टअप्स पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ करने तथा राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने के लिए मंच उपलब्ध करवाया जा रहा है।

अमेरिका स्थित सिलिकॉन वैली के निवेशकों ने भी राज्य के अनेक स्टार्टअप्स का चयन कर उनमें निवेश किया है। यहां तक कि वैश्विक निवेशकों ने इन स्टार्टअप्स में भारी निवेश किया है। अच्छी बात यह है कि राजस्थान के स्टार्टअप्स के साथ प्रतिष्ठित कंपनियां व शिक्षण संस्थान भी जुड़ चुके हैं। राजस्थान के दो स्टार्टअप्स यूनिकॉर्न बन चुके हैं, जिनमें प्रथम 'कारदेखो' व दूसरा 'डीलशेयर' का है। इन स्टार्टअप्स का बाजार मूल्यांकन लगभग आठ हजार करोड़ रुपये है। उल्लेखनीय है कि जर्मनी, यूएसए व आस्ट्रिया सरकार ने राजस्थान में स्टार्टअप्स पर नये तरीके से कार्यरत युवाओं को अपने यहां आकर कार्य करने का निमंत्रण दिया है।

नीचे बाएं व दाएं : आधुनिक युग के नये स्टार्टअप्स 'कारदेखो' व 'डीलशेयर' आज अत्यंत लोकप्रिय हैं। दोनों ही स्टार्टअप अपने-अपने क्षेत्रों में अपनी सेवाओं के लिए सुविख्यात हैं।

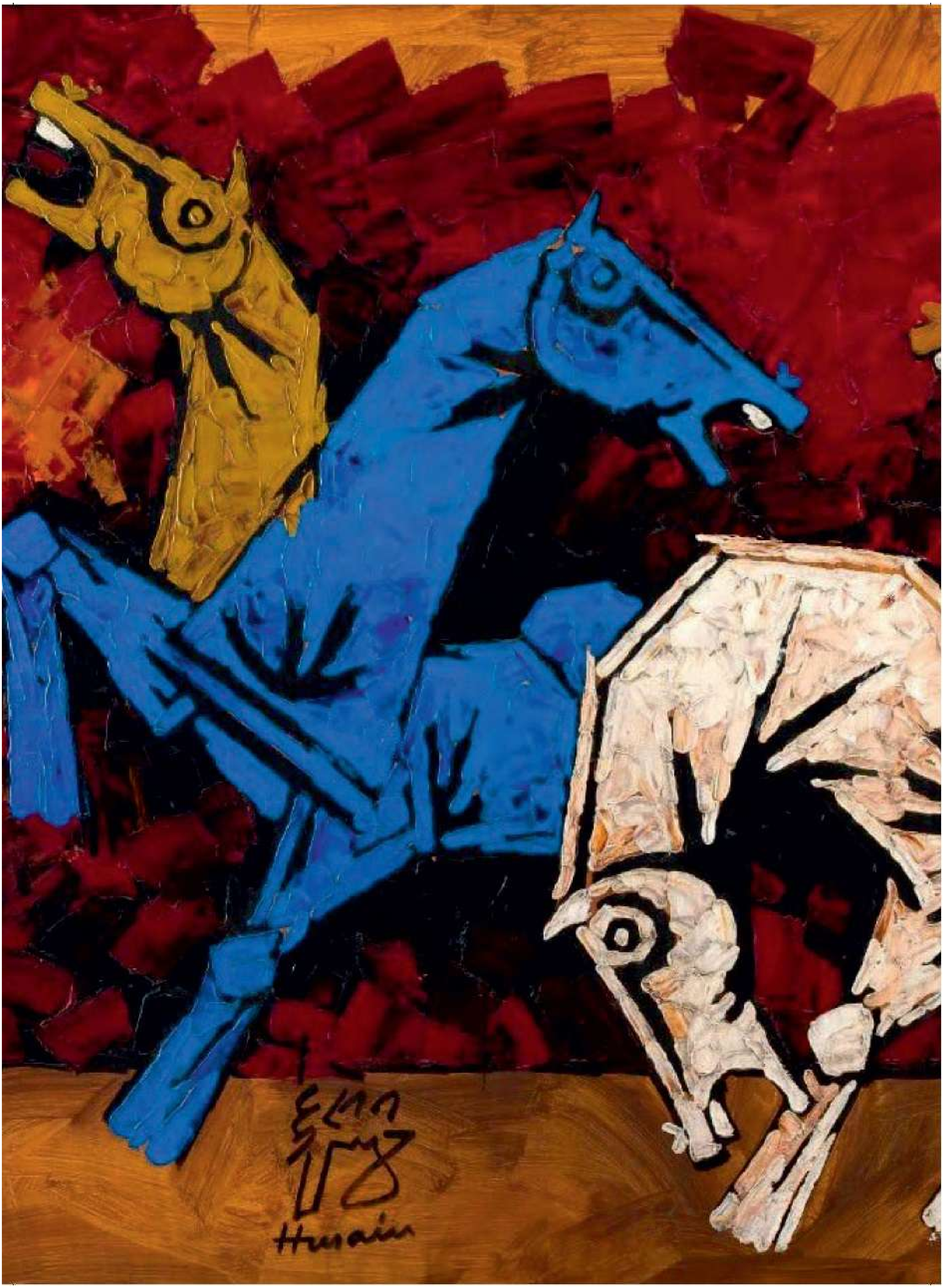
Husain

अध्याय

8

संस्कारों एवं संस्कृति का आत्मावलोकन

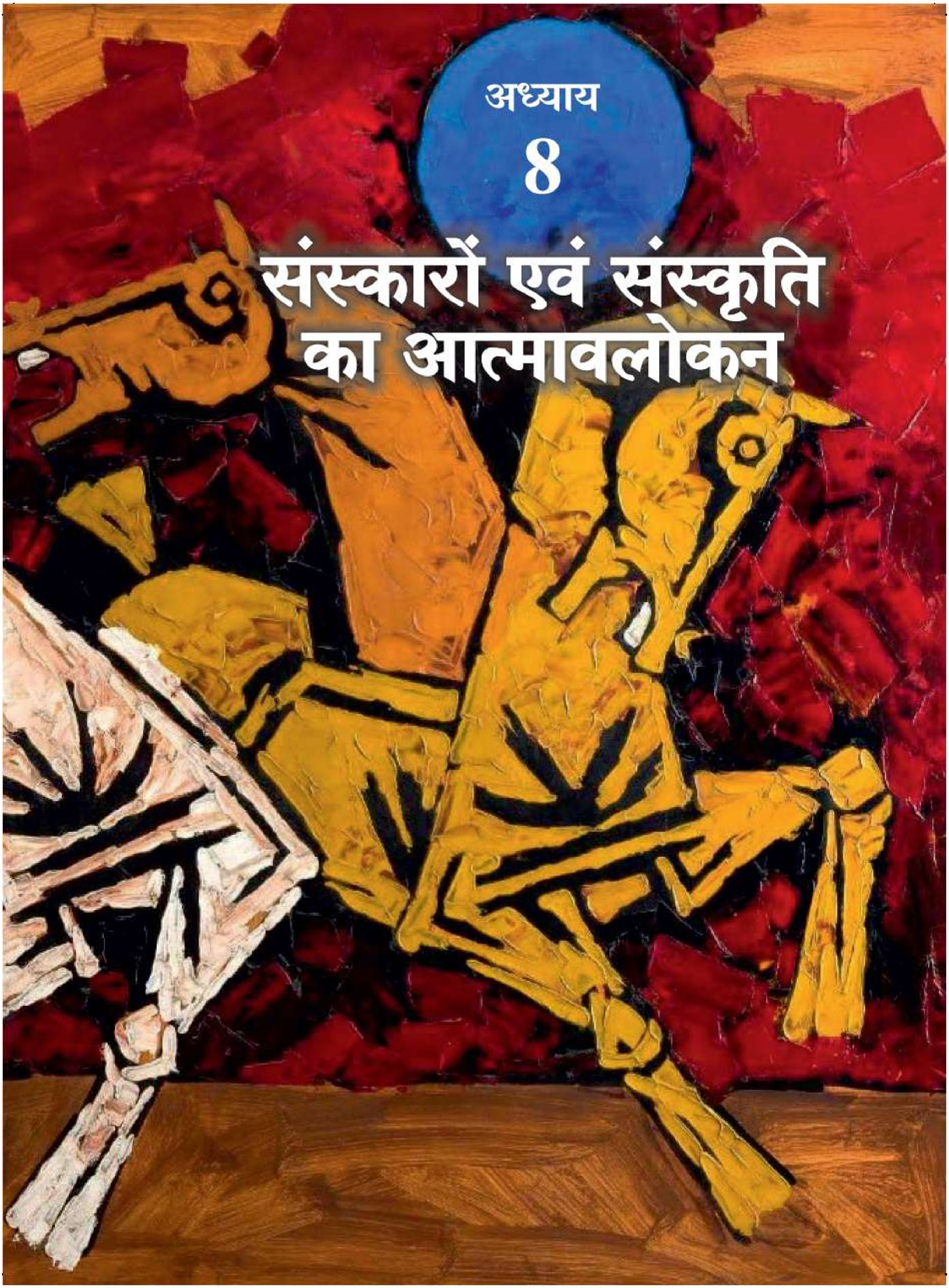

मारवाड़ी समाज ने अपने अद्भुत व्यक्तित्व एवं कृतित्व से स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान व उसके पश्चात् देश के उत्थान में उल्लेखनीय सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक योगदान दिया। स्वतंत्रता के पहले छोटी-छोटी गद्दियों से आरंभ हुई उनकी व्यावसायिक यात्रा आज आधुनिक तकनीक व प्रबंध के सहारे अग्रसर हो रही है। देश में ही नहीं अपितु विश्व में अनेक उत्पाद प्रथम बार प्रचलित करने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है। अब तो उनकी यह औद्योगिक साहसिकता राष्ट्रीय सीमाओं को लांघकर विश्वविख्यात हो चुकी है। स्वतंत्रता संग्राम में दिये गये उनके अभूतपूर्व योगदान की चर्चा विगत अध्यायों में की गई है। इस समाज के अतीत, वर्तमान एवं भविष्य पर सटीक दृष्टि डालना अत्यंत आवश्यक है। अत: इस कॉफी टेबल बुक में यह आत्मान्वेषण निरंतर चलता रहा है जिनमें समाज में मानवीय मूल्यों की खोज निहित है। किसी ने उचित ही कहा है कि देवगण उसी की सहायता करते हैं जिनमें उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति एवं पराक्रम जैसे छह गुण हों। आज समाज में इनका नितांत अभाव होता जा रहा है। यद्यपि मारवाड़ी नाम आते ही जनसामान्य के मस्तिष्क में एक समृद्ध समाज की छवि उभरती है, जबकि वास्तविकता यह है कि समाज का एक बड़ा भाग आज भी मध्यमवर्गीय तथा निर्धन है जो अभावों में अपना जीवनयापन कर रहा है। कुछ धनाढ्य व्यापारियों के असामाजिक गतिविधियों का ऋणात्मक भार संपूर्ण समाज की छवि को धूमिल कर रहा है।

संस्कार एवं संस्कृति

जहां राजस्थान एवं राजस्थानी शब्द से वीर संस्कृति की झंकार निकलती है, वहीं मारवाड़ी संस्कृति आज केवल धन-संस्कृति का द्योतक रह गई है। हां, मारवाड़ी समाज की शक्ति उसके धनवान होने में है परन्तु वही उसकी सबसे बड़ी दुर्बलता भी है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष सीताराम शर्मा का कहना है कि आज समाज की मुट्ठी में धन नहीं, धन की मुट्ठी में समाज है। समाज में अथाह धन कमाने की अंधी दौड़ में सदाचार, संयम, पारिवारिक अनुशासन, ईमानदारी, साख, पारस्परिक विश्वास आदि सबकी बलि चढ़ा दी गई है। यह प्रवृत्ति अत्यंत भयावह है। आर्थिक सम्बन्धों के अतिरिक्त सभी पारिवारिक और पारस्परिक सम्बन्ध शिथिल होते जा रहे हैं। मन की दीवारों के चलते, आज कोठियां ही नहीं अपितु दीवारें भी लोगों को बांट रही हैं। अधिकांश समाज व्यवसाय की धुरी पर घूमने वाला हो गया है तथा अनेक क्षेत्रों में इसकी गति धीमी होती जा रही है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मारवाड़ी समाज धन के प्रति अपनी सोच में परिवर्तन करे, जीवन का प्रत्येक पक्ष केवल अर्थ से प्रेरित न हो। धन के प्रति अधिक लालसा ने समाज में न केवल अनेक कुरीतियों को जन्म दिया है, बल्कि परिवारों को टूटने के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है।

आपसी सम्बन्ध-संपर्क, 'आप कितने धनी हैं' इस प्रश्न के उत्तर पर आधारित होने लगे हैं। अब तो धन ही सभी सम्बन्धों का एकमात्र आधार बन गया है। यह स्थिति अन्य किसी समाज में उस सीमा तक प्रबल नहीं है। निर्धन वर्ग के सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षाविद्, कलाकार, साहित्यकार को समाज आज भी सच्चा सम्मान नहीं देता। समाज की विशेषताओं व सद्गुणों में लगातार कमी आ रही है। किसी समय कहा जाता था, ''न खाता सही, न बही सही, जो मारवाड़ी कहे वही सही।'' अब यह कहावत पग-पग पर झुठलाई जा रही है। संस्कारों के द्वारा मनुष्य अपनी सहज प्रवृत्तियों का पूर्ण विकास करके समाज, राष्ट्र व विश्व का कल्याण करता है। आज सर्वाधिक आवश्यकता है – मारवाड़ी समाज की नवीन पीढ़ी में चारित्रिक व नैतिक मूल्यों के निर्माण की, जिसमें माता-पिता महती भूमिका निभा सकते हैं। हमने प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति की है, परन्तु पारंपरिक संस्कारों एवं मूल्यों को पुनः प्राप्त किये बिना हमारा भविष्य कदापि उज्ज्वल नहीं हो सकता।

सामाजिक मर्यादाओं का संरक्षण

इस सम्बन्ध में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं प्रबुद्ध साहित्यकार शिव कुमार लोहिया ने उल्लेख किया है कि समाज के वर्तमान स्वरूप में मर्यादाएं भंग हो रही हैं, संस्कार-संस्कृति का पतन हो रहा है तथा धन का

मारवाड़ी समाज को केन्द्र में रखकर, लेखक का पहला व दूसरा प्रकाशित शोध ग्रन्थ, जिनकी विषयवस्तु की प्रशंसा देश के जाने-माने विद्वानों ने की तथा दैनिक पत्रों व पत्रिकाओं में इनकी सारगर्भित समीक्षाएं भी प्रकाशित हुईं। इस दिशा में अलका सरावगी तथा प्रभा खेतान जैसी लेखिकाओं की पुस्तकें भी उल्लेखनीय हैं।

सम्मुख पृष्ठ पर: बालमुकुंद गुप्त एक जाने-माने लेखक व कवि रहे हैं। उन्होंने मारवाड़ी समाज पर *मतवाला* नामक पुस्तक लिखी थी, जिसका उद्देश्य मारवाड़ी समाज की कुरीतियों को समाप्त करना था। इस कॉफी टेबल बुक में मारवाड़ियों की निर्भीक आलोचना का समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा। इसी शृंखला में *चाँद* पत्रिका के मारवाड़ी अंक ने भी काफी सामग्री प्रकाशित की, जिसे आज भी शोधवेत्ता पढ़ना पसंद करते हैं।

पिछला डबल स्प्रेड: 'भारत के पिकासो' नाम से प्रसिद्ध एम. एफ. हुसैन का पूरा नाम मकबूल फिदा हुसैन था, जो बीसवीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध भारतीय चित्रकारों में से एक रहे हैं। उन्हें भारत सरकार द्वारा सन् 1991 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। क्रिस्टीज ऑक्शन में उनकी एक पेंटिंग बीस लाख अमेरिकी डॉलर में बिकी। उनकी कई पेंटिंग्स अत्यंत लोकप्रिय हैं और मारवाड़ी समाज को निरंतर आत्मावलोकन के लिए प्रेरित करती हैं।

बोलबाला है। धन से हम सुख-सुविधाएं तो खरीद सकते हैं, परन्तु चरित्र, व्यवहार एवं संस्कार नहीं। अन्न का अभाव होता है तो मानव मरता है, संस्कारों का अभाव होता है तो मानवता मरती है। आज समाज में असंतोष एवं अन्य नकारात्मकताएं बढ़ती जा रही हैं, जिन्हें सकारात्मक ऊर्जा में परिवर्तित करने का एकमात्र उपाय है - संस्कार-संस्कृति का पालन। कहा भी जाता है कि यदि वर्षा का अभाव होता है तो फसलें नष्ट होती हैं, किन्तु यदि संस्कार-संस्कृति का अभाव होता है तो पीढ़ियां नष्ट होती हैं। हमारे संस्कार ही अपराध एवं बुराइयों पर प्रतिबंध लगा सकते हैं, जो केवल कानून के बल पर कदापि संभव नहीं है। जब हमारे संस्कार-संस्कृति पर चोट हो रही होती है तो हमारा परम कर्त्तव्य बन जाता है कि विरासत में प्राप्त संस्कारों व संस्कृति को हम अपनी आने वाली पीढ़ी को भली भांति सौंपें।

अपनी संतानों के लिए धन-संपत्ति छोड़ना साधारण बात है, किन्तु संस्कार तथा संस्कृति के अभाव में यह धन उन्हें सुख प्रदान नहीं कर पाएगा। हमारी भावी पीढ़ी समाज की ध्वज-वाहक है, हमारी बहन-बेटियां हमारी संस्कृति की संवाहक हैं। समाज में यह सम्मिलित प्रयास होना चाहिए कि भावी पीढ़ी को वर्तमान समस्याओं का सामना न करना पड़े। आज मारवाड़ी समाज देश के सभी भागों में रचा-बसा है एवं तेजी से फल-फूल भी रहा है। संपूर्ण राष्ट्र मारवाड़ी समाज का कार्यक्षेत्र है। अत: यह परम आवश्यक है कि मारवाड़ी जहां जाएं, वहां की भाषा, संस्कृति, साहित्य, वेशभूषा, आचार-विचार को यथासंभव अपनाएं तथा स्थानीय लोगों के साथ समरसता स्थापित करें। हम अपने संस्कार एवं संस्कृति का पालन करते हुए स्थानीय नागरिकों से सहयोग एवं सद्भावना के साथ एकात्मता स्थापित करें। परन्तु ऐसा नहीं हो रहा है। हमें मिलजुल कर इस दिशा में नवीन विचारधारा व उत्साह के साथ कार्य करना है, जिसके दूरगामी एवं उच्चतर परिणाम प्राप्त होंगे।

आलोचना बनी प्रेरणा

मुझे आज भी स्मरण है, जब मैं चार दशक पूर्व तत्कालीन राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी से सेवा के क्षेत्र में राष्ट्रपति पुरस्कार ग्रहण करने के लिए मद्रास (अब चेन्नई) जाने हेतु रेलयात्रा कर रहा था तो मेरे सहयात्री मारवाड़ी समाज के सम्बन्ध में काफी आलोचनात्मक चर्चाओं में व्यस्त थे। मेरा मन विचलित हो रहा था कि मेरे गृह-राज्य राजस्थान के नागरिकों के बारे में ऐसी राय क्यों बनी हुई है? तत्पश्चात्, मैं धीरे-धीरे इस विषय पर अधिकाधिक जानकारी जुटाने लगा तथा दैनिक पत्रों और पत्रिकाओं में आलेख भी लिखने लगा। बाद में, मैंने अपने डॉक्टरेट के विषय को इसी समाज के बहुमुखी योगदान पर केन्द्रित किया और शीघ्र ही सन् 1986 मेरी पहली पुस्तक *इंडस्ट्रियल एंट्रप्रन्योरशिप ऑफ शेखावाटी मारवाड़ीज* में प्रकाशित हुई। उसके बाद मैंने *मारवाड़ी* समाज पर शोधकार्य पूर्ण किया, जिसका प्रकाशन एक शोध संस्थान द्वारा किया गया। इन पर प्राप्त हुई प्रतिक्रियाओं ने मुझे इस विषय पर और गहन शोध करने के लिए प्रेरित किया, जो आज तक अनवरत जारी है। इस दौरान मारवाड़ी समाज पर मेरे द्वारा कई शोध, आलेखों व पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है, जिनमें इस समाज के सकारात्मक पक्ष को शोधात्मक रूप से उजागर किया गया है।

मारवाड़ी शब्द को भिन्न-भिन्न भाषाओं की पत्र-पत्रिकाओं व शब्दकोषों में अनेक प्रकार से लांछित कर विविध भांति की व्याख्याएं की गई हैं। शोध के दौरान मेरा सकारात्मक व नकारात्मक, दोनों प्रकार की सामग्री से सामना हुआ। मैंने राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में उपयोग किये जाने वाले 'छाजले' के रूप में कार्य किया। नकारात्मक सामग्री को मैंने अलग रख सार तत्व की सकारात्मकता को एकत्रित किया एवं समाज के बारे में *रजनी, मालगुडी डेज, मुक्ति एक सपना, गुजराती शब्दकोष,* गुवाहाटी एयरपोर्ट की घटना के साथ-साथ शत्रुघ्न सिन्हा व उड़ीसा के भूतपूर्व मुख्यमंत्री बीजू पटनायक के आलोचनात्मक वक्तव्यों को तिलांजलि देकर समाज के सकारात्मक पहलू के सम्बन्ध में अधिकाधिक लेखन किया। मुझे हर्ष है कि इससे समाज की चहुंमुखी उपलब्धियां जन-सामान्य के सम्मुख प्रभावी रूप से उजागर हुईं और देश-विदेश से काफी सकारात्मक प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुईं।

समाज का चरित्र-चित्रण

सबसे पहले मारवाड़ी पंचायतों व समाज के पंचों ने समाज-हित में कई निर्णय लेकर इसकी छवि को उज्ज्वल बनाने का सार्थक प्रयास किया। तदुपरांत मारवाड़ियों की प्रतिष्ठा को बनाये रखने में समाज की कई पत्र-पत्रिकाओं ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। शिवपूजन सहाय द्वारा *मारवाड़ी सुधार* व बालमुकुंद गुप्त द्वारा *मतवाला* का प्रकाशन किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य मारवाड़ी समाज की कुरीतियों को समाप्त कर दोषों और दोषियों का बहिष्कार करना था। समाज की कुप्रथाओं की निर्भीक आलोचना के कारण मारवाड़ी भाइयों पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ा। यही नहीं *चाँद* पत्रिका के मारवाड़ी अंक ने भी मारवाड़ देश, इसके निवासी, इसकी सभ्यता तथा उत्थान-पतन का एक विस्तृत लेखा-जोखा प्रकाशित किया। पत्रिका में इस समाज की रूढ़िवादिता पर पचास कार्टून, पचास रंग-बिरंगे चित्र व लगभग सौ श्वेत-श्याम चित्र प्रकाशित किये गये। यद्यपि इसके संपादक रामरख सिंह सहगल की भरपूर आलोचना हुई। मारवाड़ी महिलाओं पर सुप्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा ने अपनी कृति *भाभी* में मारवाड़ी बाल-विधवाओं की दयनीय दशा का मार्मिक वर्णन किया।

इसके बाद तो मारवाड़ी समाज पर एक के बाद एक कृतियां व उपन्यास स्वयं मारवाड़ी महिलाओं द्वारा प्रकाशित किये जाने लगे, जिनमें लेखिका अल्का सरावगी की पुरस्कृत कृति *कलि-कथा : वाया बाईपास* तथा प्रभा खेतान के उपन्यासों *पीली आंधी* व *तालाबंदी* उल्लेखनीय हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि मारवाड़ी समाज द्वारा अपनी कठोर परिश्रम, लगन व उद्यम से प्राप्त की गई धन-संपत्ति के प्रति ईर्ष्या-भाव एवं प्रांतीयता की भावना के कारण इतर समाज में वैमनस्य देखने को मिलता है। आज प्रत्येक समाज में अच्छाई के साथ-साथ कमियां भी हैं। किन्तु इस समाज के कुछ चयनित धनाढ्य व्यापारियों के अनुचित व्यवहार व अमर्यादित आचरण के कारण अच्छाइयों पर बुराइयों के बादल छाने लगे हैं। इस सम्बन्ध में, मैं कई विद्वानों, लेखकों व पत्रकारों के विचार पाठकों के साथ साझा करना चाहूंगा, जो उन्होंने इस शोधयात्रा के दौरान अभिव्यक्त किये हैं, ताकि पाठकगण इस लज्जाजनक पक्ष से भली भांति अवगत हो सकें। इस पुस्तक के परिशिष्ट 3 में उल्लिखित 'सेठों व उनके सेवकों की मार्मिक कहानियां : *बातां ही चालै*' मारवाड़ी समाज का एक भिन्न सकारात्मक पक्ष है, जिसका अध्ययन भी मारवाड़ी जीवन-मूल्यों को समझने के लिए परम आवश्यक है।

इतिहास की उपेक्षा

आज समाज का संपूर्ण इतिहास व इससे सम्बन्धित पाठ्य-सामग्री एक स्थान पर उपलब्ध नहीं है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष, मूर्धन्य विद्वान व चिन्तक भंवरमल सिंघी ने छह दशक पूर्व समाज का

परिशिष्ट 1

कुछ असाधारण मारवाड़ी

मारवाड़ी समाज द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दिया गया है। अपने-अपने क्षेत्रों में अग्रणी रहे असाधारण मारवाड़ियों के नाम व उनके अवदान का वर्णन करने के लिए तो एक पृथक ग्रन्थ की आवश्यकता होगी। पाठकों की जानकारी के लिए उनमें से कुछ चयनित विभूतियों के केवल नामों का उल्लेख यहां किया जा रहा है, जिन्हें समय-समय पर राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया है -

उच्च पद : प्रतिभा देवीसिंह पाटिल (पूर्व राष्ट्रपति), जगदीप धनखड़ (उपराष्ट्रपति), भैरोंसिंह शेखावत (भूतपूर्व उपराष्ट्रपति), ओम बिरला (लोकसभा अध्यक्ष)।

भारतरत्न : डॉ. भगवानदास।

पद्म विभूषण : जानकीदेवी बजाज (समाज सेवा), घनश्यामदास बिड़ला (उद्योग), डॉ. बी. के. गोयल (चिकित्सा), जे. एस. बजाज (चिकित्सा), डॉ. दौलत सिंह कोठारी (विज्ञान), एल. एन. मित्तल (उद्योग), प्रो. मनमोहन शर्मा (विज्ञान), विक्रम साराभाई (विज्ञान), श्रीप्रकाश (लोकसेवा), नगेन्द्र सिंह (लोकसेवा), सगत सिंह (पीवीएसएम), चिमन के. सिंह (पीवीएसएम), एल. सी. जैन (लोकसेवा), राधेश्याम खेमका (साहित्य एवं शिक्षा), धर्मवीर (लोकसेवा), सोनल मानसिंह (कला)।

पद्म भूषण : जानकीदेवी बजाज (समाज सेवा), घनश्यामदास बिड़ला (उद्योग), डॉ. मोहन सिंह मेहता (लोकसेवा), धर्मवीर (लोकसेवा), राधाकृष्ण गुप्ता (लोकसेवा), नगेन्द्र सिंह (लोकसेवा), कालू लाल श्रीमाली (साहित्य), मैथिलीशरण गुप्त (साहित्य), बी. एल. मेहता (लोकसेवा), माणिक्यलाल वर्मा (साहित्य), सेठ गोविन्द दास (साहित्य), विक्रम साराभाई (विज्ञान), सिन्धुश्वर वर्मा (साहित्य), सूर्यनारायण व्यास (साहित्य), अनिल कुमार अग्रवाल, सीताराम सेकसरिया (सामाजिक कार्य), राजश्री बिड़ला (समाज सेवा), सत्यनारायण गोयनका (समाज सेवा), डॉ. दौलत सिंह कोठारी (लोकसेवा), झाबरमल्ल शर्मा (साहित्य), डॉ. मोहनलाल सोनी (चिकित्सा), गूजरमल मोदी (उद्योग), केशवप्रसाद गोयनका (उद्योग), हंसराज गुप्ता (लोकसेवा), मंगतूराम जयपुरिया (समाज सेवा), जितेन्द्र कुमार जैन (साहित्य), सुखलाल सिंघवी (साहित्य और शिक्षा), डॉ. प्रतुलचंद गुप्ता (समाज सेवा), श्रेयांस पी. प्रसाद जैन (समाज सेवा), गिरिलाल जैन (पत्रकारिता), डॉ. बी. के. गोयल (चिकित्सा), लक्ष्मीमल सिंघवी (लोकसेवा), डॉ. हेमलता गुप्ता (चिकित्सा), रामनारायण अग्रवाल (विज्ञान और उद्योग), राहुल बजाज (उद्योग), बद्रीनारायण बरवाले (उद्योग), हरिशंकर सिंहानियां (उद्योग), कोमल कोठारी (कला), यशराज चोपड़ा (सिनेमा), डॉ. विजयपत सिंहानियां (खेल), प्रो. विजय शंकर व्यास (साहित्य), शशि भूषण (लोकसेवा), डॉ. जयवीर अग्रवाल (चिकित्सा), डॉ. जय कृष्ण (इंजीनियरिंग), गंगा प्रसाद बिड़ला (समाज सेवा), सुनील भारती मित्तल (उद्योग), देवकी जैन (समाज सेवा), सुरेश कुमार नेवटिया (उद्योग), शेखर गुप्ता (पत्रकारिता), प्रो. सत्यपाल अग्रवाल (चिकित्सा), एस. पी. ओसवाल (उद्योग), जगदीश शरण वर्मा (सार्वजनिक मामले), जैनेन्द्र कुमार जैन (साहित्य), हरिभाऊ उपाध्याय (साहित्य), अक्षय कुमार जैन (साहित्य), विश्वमोहन भट्ट (संगीतकला), देवेन्द्र झाझड़िया (खेल), लक्ष्मी निवास मित्तल (उद्योग)।

पद्मश्री : डॉ. ईश्वरचंद गुप्ता (लोकसेवा), अनिल कुमार अग्रवाल (पर्यावरण), डॉ. बी. के. अग्रवाल (चिकित्सा), डॉ. बीना अग्रवाल (सामाजिक कार्य), काका हाथरसी (साहित्य), के. के. अग्रवाल (चिकित्सा), डॉ. लक्ष्मीचंद गुप्ता (चिकित्सा), पुखराज बाफना (चिकित्सा), दुर्गा जैन (सामाजिक कार्य), कैलाशचंद अग्रवाल (समाज सेवा), निरंजनदास अग्रवाल (चिकित्सा), सुदर्शन के. अग्रवाल (चिकित्सा), वी. के. गुप्ता (चिकित्सा), अशोक पनगढ़िया (चिकित्सा), ओम बी. अग्रवाल (स्वास्थ्य), फूलचंद अग्रवाल (उद्योग), रामनारायण अग्रवाल (विज्ञान), सूरजमल

शैतान सिंह भाटी
परमवीर चक्र

सगत सिंह
पीवीएसएम

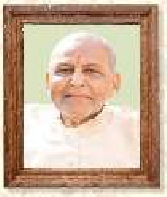
राधेश्याम खेमका
पद्मविभूषण

आर. पी. गोयनका
उद्योग

धर्मवीर
पद्मविभूषण

गौरीशंकर डालमिया
उद्योग

लाला देशबंधु गुप्ता
स्वतंत्रता सेनानी

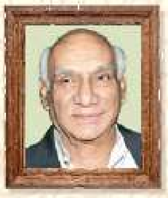
यशराज चोपड़ा
पद्मविभूषण

जी. डी. बिड़ला
पद्मविभूषण

डॉ. डी. एस. कोठारी
पद्मविभूषण

विक्रम साराभाई
पद्मविभूषण

बिमल जालान
पूर्व गवर्नर, आरबीआई

अग्रवाल (लोकसेवा), डॉ. सुआलाल छोटेलाल बाफना (समाज सेवा), डॉ. पवन राज गोयल (चिकित्सा), आमोद गुप्ता (चिकित्सा), प्रो. रामगोपाल बजाज (कला), प्रेमलता अग्रवाल (खेल), अजीत बजाज (खेल), विजयदान देथा (साहित्य), बद्रीप्रसाद बाजोरिया (समाज सेवा), स्वाति ए. पीरामल (उद्योग), कृपाल सिंह शेखावत (कला), अर्जुन प्रजापति (कला), रामगोपाल विजयवर्गीय (कला), भूषणस्वरूप बंसल (लोकसेवा), डॉ. महेन्द्र भंडारी (चिकित्सा), शोभना भरतिया (उद्योग), श्रीराम भरतिया (साहित्य), डॉ. बीर भान (चिकित्सा), डॉ. नंदलाल लक्ष्मीलाल बोर्डिया (चिकित्सा) डॉ. राज बोथरा (चिकित्सा), मोहनलाल चोरड़िया (उद्योग), डॉ. बकुल ढोलकिया (साहित्य), सत्यनारायण गौरीसरिया (सार्वजनिक सेवा), डॉ. महेन्द्रकुमार गोयल (चिकित्सा), डॉ. प्रेमशंकर गोयल (विज्ञान), घनश्यामदास गोयल (समाज सेवा), अमरनाथ गुप्ता (समाज सेवा), अनिल कुमार गुप्ता (साहित्य), डॉ. ए. के. गुप्ता (चिकित्सा), डॉ. हर्षकुमार गुप्ता (विज्ञान), डॉ. जोगिन्दर लाल गुप्ता (चिकित्सा), डॉ. लक्ष्मीचंद गुप्ता (चिकित्सा), डॉ. सुशील गुप्ता (समाज सेवा), इन्द्रकुमार गुप्ता (लोकसेवा), कल्याण सिंह गुप्ता (समाज सेवा), मोना चन्द्रावती गुप्ता (समाज सेवा), मामराज अग्रवाल (समाज सेवा), काजोल (सिनेमा), प्रो. नरेन्द्र कुमार गुप्ता (विज्ञान), प्रो. नर्मदाप्रसाद गुप्ता (चिकित्सा), राजिन्दर गुप्ता (उद्योग), श्यामलाल गुप्ता (साहित्य), सुरेन्द्र बंशीधर गुप्ता (सामाजिक कार्य), भंवरमल जैन (उद्योग), बिमल प्रसाद जैन (समाज सेवा), डॉ. हरिकृष्ण जैन (विज्ञान), डॉ. सुरेश कुमार जैन (चिकित्सा), ज्ञानचंद जैन (साहित्य), मेघराज जैन (समाज सेवा), नरेन्द्र सिंह जैन (चिकित्सा), नेमीचंद जैन (कला), ओमप्रकाश जैन (कला), प्रो. सुनील जैन (साहित्य), सुमंत किशोर जैन (लोकसेवा), यशपाल जैन (साहित्य), डॉ. बसंतीबाला जैन (चिकित्सा), प्रफुल्लकुमार जैन (विज्ञान), हरिप्रसाद जायसवाल (लोकसेवा), रामप्रसाद जायसवाल (विज्ञान), डॉ. अशोक झुनझुनवाला (विज्ञान), शीला झुनझुनवाला (साहित्य), देवीसहाय जिन्दल (उद्योग), रामप्रसाद रामचंद खंडेलवाल (उद्योग), डॉ. प्रकाश नानालाल कोठारी (चिकित्सा), डॉ. सुनील मणीलाल कोठारी (कला), कोमल कोठारी (साहित्य), डॉ. मूलचंद माहेश्वरी (चिकित्सा), प्रो. श्यामसुंदर माहेश्वरी (उद्योग), डॉ. जयपाल मित्तल (विज्ञान), जगदीश चंद मित्तल (कला), ओमप्रकाश मित्तल (लोकसेवा), सुलोचना मोदी (समाज सेवा), हर्षवर्धन नेवटिया (उद्योग), धर्मचंद पाटनी (समाज सेवा), अरुण पोद्दार (साहित्य), डॉ. आदित्य नारायण पुरोहित (विज्ञान), रामलाल राजगढ़िया (उद्योग), बंसीलाल राठी (समाज सेवा), शिवनारायण मोतीलाल राठी (उद्योग), आर. के. साबू (समाज सेवा), लक्ष्मीनारायण साहू (साहित्य), डॉ. कांतिलाल हस्तीमल संचेती (समाज सेवा), डॉ. गोपालकृष्ण सर्राफ (चिकित्सा), मुल्कराज सर्राफ (साहित्य), कन्हैयालाल सेठिया (साहित्य), आनंदराज सुराणा (समाज सेवा), सियाराम तिवारी (कला), ओमप्रकाश अग्रवाल (अन्य), अनूप जलोटा (संगीत), एल. के. सिंघल (विज्ञान), प्रह्लादराय अगरवाला (उद्योग एवं व्यापार), राहुल जैन (कला), रवीन्द्र जैन (कला), सुशील दोशी (खेल कमेंटरी), जयप्रकाश अग्रवाल (उद्योग एवं व्यापार), भरत गोयनका (उद्योग एवं व्यापार), विमल कुमार जैन (सामाजिक कार्य), मीनाक्षी जैन (साहित्य एवं शिक्षा), नेमथ जैन (उद्योग एवं व्यापार), शांति जैन (कला), सुधीर जैन (विज्ञान एवं अभियांत्रिकी), एस. पी. कोठारी (साहित्य एवं शिक्षा), जे. के. बजाज (साहित्य एवं शिक्षा), हिम्मतराम भाम्भू (समाज सेवा), उषा चौमार (समाज सेवा), सुंदरम वर्मा (समाज सेवा), जय भगवान गोयल (साहित्य), श्यामसुंदर पालीवाल (समाज सेवा), अर्जुन सिंह शेखावत (साहित्य), प्रमोद भगत (खेल), चन्द्रप्रकाश द्विवेदी (कला), अवनि लेखरा (खेल), रामदयाल शर्मा (कला), मूलचंद लोढ़ा (समाज सेवा), लक्ष्मण सिंह (समाज सेवा)।

राजनेता : मोहनलाल सुखाड़िया, भैरोंसिंह शेखावत, ओम बिरला, जगदीप धनखड़, लखमीचंद जैन, अमर अग्रवाल, अमरनाथ अग्रवाल, बेनीप्रसाद अग्रवाल, बृजमोहन अग्रवाल, धीरेन्द्र अग्रवाल, गंगाप्रसाद अग्रवाल, गोपालदास अग्रवाल, होतिलाल अग्रवाल, जगन्नाथ प्रसाद, जयप्रकाश

परिशिष्ट 2
परोपकार जगत के शिरोमणि

आजादी के पूर्व जनकल्याण हेतु प्रचुर धनराशि विनियोजित करने वालों में कुछ उल्लेखनीय नाम हैं – सेठ मोतीलाल हलवासिया, सेठ रामनारायण रुइया, सेठ साधुराम तोलाराम गोयनका, सेठ रामजीदास बाजोरिया, सेठ हरिराम गोयनका, सेठ रायबहादुर सूरजमल, शिवप्रसाद तुलस्यांन, सेठ गुलाबराय शिवबक्शराय बागला, सेठ मोतीलाल राधाकृष्ण बागला, सेठ लक्ष्मीनारायण सूरजमल कानोड़िया, सेठ गोरखराय रामप्रताप चमड़िया, सेठ सूरजमल नागरमल, सेठ ताराचंद घनश्यामदास पोद्दार, सेठ रामचन्द्र नागरमल बाजोरिया, सेठ रामप्रसाद चिमनलाल गनेड़ीवाल, सेठ स्नेहीराम जुहारमल, सेठ जयनारायण लक्ष्मीनारायण पोद्दार, सेठ देवीदत्त हजारीमल दूधवेवाला, सेठ विष्णुदयाल हरदयाल सुरेका, सेठ गोवर्धन मदनलाल काया, सेठ जयनारायण रामचन्द्र पोद्दार, सेठ नोपचंद मंगनीराम, बसंतलाल नाथानी, सेठ सेधमल दयाचंद जैन, सेठ रामकुमार शिवचंदराय पोद्दार, सेठ जानकीदास शिवनारायण, सेठ आनंदीलाल पोद्दार, सेठ सरूपचंद पृथ्वीराज रूंगटा, सेठ भगवानदास रामचंद, सेठ हरनंदराय सूरजमल रुइया, सेठ हीरालाल रामगोपाल गनेड़ीवाल, सेठ बेनीराम जेसराज, सेठ भगवती खेतान, सेठ लच्छीराम चूड़ीवाल, सेठ जगन्नाथ विष्णुलाल, सेठ गुरमुखराय सुखानंद, सेठ दिलसुखराय सागरमल राजगढ़िया, सेठ चिमनलाल मोतीलाल, सेठ नारायणदास केदारनाथ, सेठ बसंतलाल गोरखराम, सेठ जुग्गीलाल कमलापत सिंहानियां, सेठ देवीदत्त सूरजमल खेतान, सेठ रामकृष्ण डालमिया, सेठ कुंदनलाल, सेठ स्नेहीराम डूंगरमल, सेठ शिवप्रसाद गुप्ता, सेठ जमनाधर पोद्दार, सेठ मंगनीराम बैजनाथ गोयनका, सेठ रूढ़मल गोयनका, सेठ प्रताप, सेठ नंदराम पोद्दार, सेठ महानंदराम पूरनमल गनेड़ीवाल, सेठ राजबहादुर शिवलाल मोतीलाल, सेठ जगदीशप्रसाद सरायवाला तथा सेठ राय बहादुरवाला।

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य नाम हैं – कन्हाईलाल अग्रवाल, लाला रामलाल अग्रवाल, राजेश अग्रवाल, सुबोध कुमार अग्रवाल, भगवानदास बागला, लक्ष्मीनारायण बागला, राजा शिवबक्श बागला, उदयराम बागला, देवराज भरतिया, ज्वालाप्रसाद भरतिया, प्रभुदयाल बिदावतका, जी. पी. बिड़ला, बृजमोहन बूबना, राधाकृष्ण चमड़िया, रामप्रताप चमड़िया, बृजमोहन चौधरी, रामदेव चौखानी, रामकृष्ण धानुका, बलदेवदास दूधवेवाला, सोहनलाल दुग्गड़, रामगोपाल गनेड़ीवाल, बी. के. गोयनका, बद्रीप्रसाद गोयनका, बालकृष्ण गोयनका, शिवकरन गोयनका, श्रीनारायण गोयनका, शिवप्रसाद गुप्ता, रामरिखदास हरलालका, पूरनमल जयपुरिया, लक्ष्मीनारायण जाजोदिया, घनश्यामदास जालान, जगन्नाथ प्रसाद जालान, किशनलाल जालान, राधेश्याम जालान, मोतीलाल झुनझुनवाला, सूरजमल झुनझुनवाला, गंगाबक्श कानोड़िया, भागीरथ कानोड़िया, घनश्यामदास कसेरा, जोखीराम काया, भूरामल केड़िया, सीताराम केड़िया, बनारसीदास केजरीवाल, दुर्गा खेतान, कालीप्रसाद खेतान, सीताराम खेतान, कन्हैयालाल लोहिया, नागरमल मोदी, सागरमल मोदी, सत्यनारायण मोदी, बसंतलाल मोरारका, रामसहायमल मोर, रामेश्वर नाथानी, मदनलाल पाटोदिया, लच्छीराम पोद्दार, महावीर पोद्दार, प्रह्लादराय पोद्दार, जगदीश प्रसाद, रामगोपाल, लाला हरदेव सहाय, बल्लूराम जयदयाल सर्राफ, रामगोपाल सर्राफ, सुखानंद सरावगी,

प्रथम पंक्ति में बाएं से दाएं : घनश्यामदास पोद्
द्वितीय पंक्ति में बाएं से दाएं : भागीरथ कानोडि

मदनलाल शाह, वैद्यनाथ शोभासरिया, बाबू महाराज सिंह, जगन्नाथ सिंहानियां, बद्रीनारायण सोढ़ानी, गणपतराय तोदी, कन्हैयालाल नरसिंहलाल तोदी, महावीरप्रसाद तोदी और अभेजराज एच. बालदोता।

इन श्रेष्ठिजनों द्वारा अनेक ट्रस्टों की स्थापना की गई है, जो हमारी सांस्कृतिक धरोहर के पुनरुत्थान एवं समकालीन कलाओं पर परिसंवाद को प्रोत्साहन दे रहे हैं। इसके अतिरिक्त ये समाज को शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के साथ-साथ विज्ञान एवं तकनीक के प्रयोग को बढ़ावा दे रहे हैं, ताकि निर्धन वर्ग के जीवन को सुगम बनाया जा सके। बहुत-से ट्रस्ट विद्यालय-महाविद्यालय, अस्पताल, आधुनिक तकनीक केन्द्र तथाअनुसंधान केन्द्र भी चला रहे हैं, ताकि समाज को इन सभी क्षेत्रों में उच्चस्तरीय सेवाएं प्रदान की जा सकें। मानव-मात्र के कल्याण की परंपरा को आगे बढ़ाने में मारवाड़ियों के अनेक ट्रस्ट सार्थक भूमिका निभा रहे हैं। इनमें प्रमुख हैं - सेठ श्रीराम चैरिटेबल ट्रस्ट, लाला हरप्रसाद चैरिटी ट्रस्ट, सर गंगाराम ट्रस्ट, ओम कोठारी फाउंडेशन, भोरुका चैरिटीज, वेद एजुकेशन ट्रस्ट, सेठ रामेश्वरदास बिड़ला एजुकेशन ट्रस्ट, मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, आर्सेलर-मित्तल फाउंडेशन, लक्ष्मी एंड उषा मित्तल फाउंडेशन, जेएसडब्ल्यू फाउंडेशन, द्वारकादास सीताराम शर्मा ट्रस्ट, सीजी फाउंडेशन, सीजी केयर्स, वेदांता फाउंडेशन, रेमंड एम्ब्रयो रिसर्च सेन्टर, जे.के. ट्रस्ट ग्राम विकास योजना, सोभासरिया जनकल्याण ट्रस्ट, लोढ़ा फाउंडेशन, आदित्य बिड़ला सेन्टर फॉर कम्युनिटी इनिशिएटिव्ज एंड रूरल डवलपमेंट, रूरल फाउंडेशन सोसाइटी, बिड़ला फाउंडेशन ट्रस्ट, द ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर एंड रिसर्च फाउंडेशन, गांधी रिसर्च फाउंडेशन, मनोज मोदी फाउंडेशन, धानुका धुनसेरी फाउंडेशन, ईस्सार फाउंडेशन, पीरामल फाउंडेशन, द टाइम्स फाउंडेशन, टाइम्स रिलीफ फंड व हेमेन्द्र कोठारी फाउंडेशन।

इसके अतिरिक्त अनेकानेक फाउंडेशन व ट्रस्ट मानव-मात्र के कल्याण के लिए देशभर में संचालित किये जा रहे हैं, जिनमें कुछ हैं - घनश्याम बिनानी फाउंडेशन, मनोविकास केन्द्र, जी. डी. बिनानी ट्रस्ट, फ्रैंड्स ऑफ ट्राइबल्ज सोसाइटी, कुदीलाल गोविन्दराम सेकसरिया फाउंडेशन, महावीर प्रसाद सर्राफ ट्रस्ट, किरणदेवी सर्राफ ट्रस्ट एंड सुपरटेक्स फाउंडेशन, एच. पी. बुधिया चैरिटेबल ट्रस्ट, प्रेरणा फाउंडेशन, कल्याण भारती ट्रस्ट, श्री विशुद्धानंद हॉस्पिटल ट्रस्ट, प्रभात फाउंडेशन, कॉस्मो फाउंडेशन, सेठ पूरनमल सिंहानियां ट्रस्ट, बजाज हिन्दुस्तान लिमिटेड, एडलाइफ केयरिंग माइंड्ज, आर. सी. अग्रवाल मैमोरियल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेन्टर, तुलसी गोवर्धन फाउंडेशन, कस्तूरीदेवी गुप्ता ट्रस्ट, गांधी सेवा ट्रस्ट, रामनाथ अग्रवाल चैरिटेबल ट्रस्ट, अग्रसेन फाउंडेशन, अग्रोहा विकास ट्रस्ट, तिलकराज अग्रवाल चैरिटेबल ट्रस्ट, नेशनल मारवाड़ी फाउंडेशन, ग्लोबल मारवाड़ी फाउंडेशन, अखिल भारतीय मारवाड़ी अग्रवाल जातीय कोष, नेवटिया गेटवेल हैल्थकेयर सेन्टर एवं अखिल भारतीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभा। ये सभी ट्रस्ट तथा फाउंडेशन बहुत-से क्षेत्रों में योगदान दे रहे हैं। इनमें स्वास्थ्य व पौष्टिकता, जल व स्वच्छता, शिक्षा, स्थायी आजीविका के साधन, महिला सशक्तीकरण, जैविक निवेश, पर्यावरण-संरक्षण, बाल-कल्याण योजनाएं, विकलांगों का पुनर्वास, दृष्टिहीनों के लिए राहत योजनाएं, स्वास्थ्य-देखभाल कार्यक्रम, खेलकूद विकास परियोजनाएं, कला, साहित्य, संस्कृति एवं धरोहर संरक्षण से जुड़े कार्यक्रम सम्मिलित हैं।

पोद्दार, रूढ़मल गोयनका, भगवानदास बागला, मोतीलाल हलवासिया, रामनारायण रुइया, आनंदीलाल पोद्दार और सोहनलाल दुग्गड़।
नोडिया, जी. पी. बिड़ला, बी. एम. खेतान, अनिल अग्रवाल, प्रिया अग्रवाल और नीरज बजाज।